सिन्योर मुसोलिनी (Signor Mussolini)

कला पुस्तक माला का पंचम-पुष्प

राष्ट्रनिर्माता
मुसोलिनी

लेखक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

भारती साहित्य मन्दिर, देहली

(मूल्य तीन रुपया)

उपहार

श्रीयुत ________________________

____

____

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

के

नवयुवक प्रेमियों

को

समर्पित

प्रस्तावना

आज यूरोप की राजनीति में इटली का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गत महायुद्ध में महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त करने पर भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान की कमी के कारण जिस इटली की वरसाई की सन्धि-परिषद् में उल्लेखनीय उपेक्षा की गई थी, आज वही इटली अपने नेता मुसोलिनी की कर्मशीलता के कारण संसार भर की राजनीति का केन्द्र बन गया है।

आज इटली की ओर आस्ट्रिया और जर्मनी की निगाह लगी रहती है। यह देश इटली को अपने गुरु के समान मानते हैं। संसार भर के अधिनायक डी० वेलेरा, कमालपाशा और हिटलर आज मुसोलिनी के ही पदचिन्हों पर चल रहे हैं।

आज लन्दन, पेरिस, मास्को, बर्लिन और वाशिंगटन राजनीति के केन्द्र नहीं रहे; उनके स्थान में आज संसार भर की राजनीति रोम मे केन्द्रित होगई है। आज मुसोलिनी की भावभंगी पर सभी दृष्टि लगाए हुए हैं। उसकी पदध्वनि एवं गर्जना की उठती ध्वनि से आज संसार भरके शासक कांप उठते हैं। यद्यपि सभी उसके विरोधी हैं और सभी उसका बहिष्कार करना चाहते हैं, किन्तु उनको बराबर हार मान मान कर बारबार उसके सामने सिर झुकाना पड़ता है। राष्ट्रसघ की बहिष्कार की आज्ञा इस बात का ताज़ा प्रमाण है। अतएव यह आवश्यक था कि हिन्दी के राजनीति

के विद्यार्थियों के सन्मुख उस महापुरुष के जीवन को विस्तार से उपस्थित करके यह दिखलाया जाता कि उस पुरुष ने एक सामान्य लुहार का पुत्र होते हुए भी किस प्रकार ऐसी भारी उन्नति करके इटली को वास्तव में ही एक सम्माननीय राष्ट्र बना डाला।

इस ग्रन्थ मे मुसोलिनी के चरित्र के साथ २ इटली का भी अथ से लेकर इति तक का सम्पूर्ण इतिहास संक्षेप मे दिया हुआ है। पाठक उसमे देखेंगे कि रोमन काल मे एक प्रबल शक्ति होते हुए भी इटली की जनता मे राष्ट्रीय भाव उत्पन्न नहीं हुए। वास्तव मे विश्व-विजयी रोमन सम्राटों के पतन का यह एक बड़ा भारी कारण था। रोमन सम्राज्य के पतन पर तो इटली की दशा इतनी बुरी होगई थी कि वह उन्नीसवीं शताब्दी तक बराबर विदेशियों का उसी प्रकार दास बना रहा, जिस प्रकार कई शताब्दियों से हम भारतवासी बने हुए हैं। पाठक इस ग्रन्थ मे इटली के तत्कालीन इतिहास मे देखेंगे कि उस समय इटली मे राष्ट्रीय भावना तो कैसी, वह लोग अपने ही भाइयों के विरुद्ध विदेशियों को सहायता दिया करते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी को इटली का नवीन युग कहना चाहिये। इसमें इटली ने मत्सीनी (मैज़िनी), गारीबाल्डी और कावूर जैसे तीन देश भक्तों को उत्पन्न किया। इन तीनों के अनवरत परिश्रम के फलस्वरूप इटली सन१८७० ई० मे विदेशियों के पंजे से पूर्णतया छूट कर एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया। किन्तु इस स्वतंत्रता में भी इटलीवासियों का कोई विशेष हाथ न होकर उपरोक्त तीनों महानुभावों का ही विशेष परिश्रम था। इटली की जनता में अब भी राष्ट्रीय भावों का एक-

दम अभाव था। बीसवीं शताब्दी आई, इटली ने महायुद्ध में भाग लिया, इटालियन सैनिकों ने महायुद्ध में अपनी वीरता का अद्भुत परिचय दिया, किन्तु यह सब होते हुए भी इटली मे राष्ट्रीय भावों का उदय न हुआ।

महायुद्ध के पश्चात इटली मे फासिस्ट पार्टी का जन्म हुआ और उसके पश्चात् अढाई तीन वर्ष में ही वहां का शासनसूत्र फासिस्टों के प्रधान नेता मुसोलिनी के हाथ में आ गया। कुछ समय तक तो मुसोलिनी को भी कठिनाइयो का सामना करना पड़ा, किन्तु उसने अपने दृढ़ निश्चय और कर्तव्यशीलता से उन सब कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके इटली को फिर उसके प्राचीन इतिहास के अनुरूप सर्वोच्च-अलंकृत-आसन पर जा बिठलाया। उसने सारे राष्ट्र का इस प्रकार संगठन किया कि उसमें देशभक्ति—राष्ट्रीयता की भागीरथी की पवित्र धारा बहने लगी, जिससे इटालियन राष्ट्र अत्यन्त बलवान् और समृद्ध हो गया। उसके इसी गुण के कारण हमने उसको इस ग्रन्थ में 'राष्ट्रनिर्माता' नाम से स्मरण किया है।

आज मुसोलिनी के दृढ़ अध्यवसाय के कारण इटली के पास बड़े २ उपनिवेश हैं और भूमध्यसागर में इंगलैण्ड के साथ उसका भी अक्षुण्ण प्रभाव है।

आज संसार भर में स्वतंत्रता की धारा के तीन रूप हैं—

पार्लमेंटवाद, साम्यवाद और फासिस्टवाद (अथवा नाज़ीवाद)। ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका को पार्लमेंटप्रणाली का आदर्श

मत्सीनी के विपक्ष में मत दिया। गारीबाल्डी बिना कुछ पुरस्कार स्वीकार किये पृथक् हो अपने गांव को चला गया।

इटली का राजा विक्टर एमानुएल द्वितीय
(१८६२-१८४६-१८७८ ई०)

अब एनुमाएल को 'इटली के राजा' की पदवी मिली। इसके कुछ दिन बाद ही सन् १८६१ मे कावूर की मृत्यु हो गई।

इस समय प्राय: समस्त इटली एक हो गया था। अब उसमें केवल दो बातों की कमी थी। वेनेशिया अभी तक आस्ट्रिया के के पास था तथा रोम मे फ्रांसीसी सेना की सहायता से पोप का अधिकार था। अप्रैल १८६६ मे आस्ट्रिया तथा प्रशा में युद्ध हुआ। इटली ने प्रशा का साथ दिया। यद्यपि इस युद्ध मे इटली की सेना हार गई, परन्तु प्रशा ने सेडोवा स्थान पर आस्ट्रिया को पूर्णतया हरा दिया; जिससे वेनेशिया इटली को मिल गया।

सन् १८७० में फ्रांस और प्रशा में युद्ध हुआ। इसमें फ्रांस को अपनी रोमस्थित सेना की आवश्यकता पड़ी। उसके हटते ही एमानुएल ने रोम पर अधिकार कर लिया और उसे संयुक्त इटली की राजधानी बनाया।

इस प्रकार मत्सीनी की नैतिक शक्ति तथा राष्ट्रीय भावों की जागृति, गारीबाल्डी की तलवार, कावूर की कार्यपटुता तथा राजनीतिक चतुरता और राजा एमानुएल की सुबुद्धि से इटली क स्वतंत्रता तथा एकता का पुराना स्वप्न १८७० मे पूर्ण हुआ।

इटली का शासन विधान

यद्यपि सन् १८६० तक इटली की राजनैतिक एकता पूर्ण हो चुकी थी, किन्तु उसकी जनता मे एकता नही हुई थी। शासन-विधान तो उसकी सब रियासतो का पृथक् २ था। केवल पिडमांट मे पार्लमेंट प्रणाली पर शासन किया जाता था। सन् १८६१ मे पिडमांट के शासन-विधान को ही कुछ परिवर्तन के साथ सारे इटली का विधान मान लिया गया। पार्लमेंट की दो सभाए बनाई गई—एक सीनेट, दूसरी चैम्बर आफ डेपुटीज। मंत्रियों को चैम्बर के प्रति उत्तरदायी बनाया गया। नये कानूनों को दोनों सभाओं की सम्मति से बनाना निश्चित किया गया। पहिले ट्यूरिन को राजधानी बनाया गया, फिर १८६५ मे फ्लोरेंस और अन्त में १८७१ से रोम को राजधानी बना दिया गया। राज्य को प्रथम ५९ तथा बाद मे ६९ ज़िलो मे विभाजित कर दिया गया। मताधिकार को भी वहां धीरे २ बढ़ाया गया। सन् १९१२ मे तो वहां सब बालिगो को कुछ पाबन्दी के साथ मताधिकार दिया गया।

पोप की व्यवस्था

अब पोप के साथ राजनीतिक सम्बन्ध का प्रश्न शेष था। पार्लमेंट ने १३ मई १८७१ को राज्य और चर्च (धर्म) के सम्बन्ध मे पोप की गारंटियों का कानून पास किया। इस कानून के अनुसार पोप को कैथोलिक ससार पर शासन करने की सुविधा देकर पूर्ण स्वतंत्रा दी गई। उसके ऊपर आक्रमण का दण्ड राजा के ऊपर आक्रमण के समान रखा गया। पोप भी राजा के

ही समान दरबार करते हैं। दूसरे राज्यों से वह सीधा पत्र व्यवहार कर सकते हैं। उनके अपने डाकखाने और तार घर पृथक् तथा स्वतंत्र हैं। इसके अतिरिक्त वैटीकन, लैटेरैन, कैस्टल गौडोल्फो और उनके बगीचों मे पूर्णतया पोप का ही राज्य है। वहां कोई इटैलिसन अफसर अपने अफसरी रूप में प्रवेश नहीं कर सकता, क्यों कि वहां इटली का कानून न चल कर पोप का ही कानून चलता है। पोप को उसके राज्य की क्षतिपूर्ति के रूप मे इटली की सरकार प्रतिवर्ष ३२२५००० फ्रैंक देती है; किन्तु पोप उसको स्वीकार करने को कभी तैयार नहीं होते, क्यों कि वह अपने को वैटीकन का क़ैदी समझते हैं और सन् १८७० के पश्चात् कभी भी रोम मे नही निकलते। क्यों कि ऐसा करने से उनको दूसरे राज्य को देख कर उसको स्वीकार करना पड़ेगा।

अन्य पोप

विक्टर एमानुएल द्वितीय का ६ जनवरी १८७८ ई० को देहान्त होने के थोड़े दिन पीछे ही पोप पायस नवें का भी देहान्त हो गया। इस पोप और बादशाह एमानुएल द्वितीय को एक ही स्थान पर गाड़ा गया। उसके पश्चात् ता० २० जनवरी सन् १८७८ को लियो तेरहवां अड़सठ वर्ष की अवस्था मे पोप बनाया गया। उसके पश्चात् २० जुलाई सन् १९०३ को कार्डिनल सार्टो पायस दसवें के नाम से पोप बनाया गया। उसके पश्चात् ३ सितम्बर १९१४ को महायुद्ध के आरम्भ होने पर बोलोगना के आर्कबिशप को बेनिडिक्ट पन्द्रहवें के नाम से पोप बनाया गया। उसका

देहान्त होने पर ६ फर्वरी सन् १९२२ को मिलन के आर्कविशप कार्डिनल रैटी को पायस ग्यारहवे के नाम से पोप बनाया गया। वर्तमान पोप आप ही है।

आर्थिक कठिनाई

राज्य की दूसरी कठिनाई आर्थिक थी। इस समय शासन को केन्द्रित करने के कारण सब राज्यों के ऋण के उत्तरदायित्व को भी लेना पड़ा। किन्तु मन्त्रियों ने सब प्रबन्ध इतनी सुन्दरता से किया कि सन् १८७६ मे ही व्यय से आय अधिक हो गई।

राजा हम्बर्ट प्रथम (१८७८-१६००)

९ जनवरी सन् १९७८ को राजा विक्टर एमानुएल द्वितीय का देहान्त होने पर उसका पुत्र हम्बर्ट प्रथम (Humburt I) चौतीस वर्ष की अवस्था मे राजा हुआ।

इटली के उपनिवेश

उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे जिस समय अन्य यूरोपीय शक्तिया अफ्रीका मे हाथ पैर फैला रही थी, इटली को भी उपनिवेशों के लेने की इच्छा हुई। उसने अपनी सीमा के पास ट्यूनिस को लेना चाहा, किन्तु यहां फ्रांस ने १८८१ मे दखल कर लिया। अतः १८८५ मे उसने लाल सागर के पास कुछ स्थान पर और विशेषकर मसावा (Massawa) बन्दर पर अधिकार कर लिया। इस के परिणामस्वरूप दो वर्ष पश्चात १८८७ मे उसका ऐबीसीनिया के शासक से युद्ध हो गया। इस युद्ध को

आरम्भ करने वाले मन्त्री—डेप्रेटिस (Depretis) का उसी वर्ष देहान्त हो गया। उसके पश्चात् क्रिप्सी (Cripsi) मंत्री हुआ। उसको उपनिवेशो के लेने की बड़ी चिन्ता थी। उसने अमरीका में खूब हाथ पैर जमाये। अनेक सरदारों को एक दूसरे के विरुद्ध करके उसने लाल सागर के पास पूर्वीय अफ्रीका मे एक उपनिवेश बना कर उसका नाम एरेट्रिया रखा। इसी समय सुमालीलैंड को इटली का संरक्षित राज्य बनाया गया।

किन्तु इन सब कार्यो में बहुत धन खर्च हो जाने से क्रिप्सी को अनेक कर बढ़ाने पड़े। इसका परिणाम यह हुआ कि जनता मे असन्तोष फैल गया। १८८९ में तो ट्यूरिन, मिलन, रोम और अपूलिया के दक्षिणी प्रांतों में विद्रोह भी हो गये। अन्त में १८९१ में क्रिप्सी के मन्त्रिमण्डल का पतन हुआ। किन्तु उसका उत्तराधिकारी और भी अयोग्य प्रमाणित हुआ। अतः १८९३ में क्रिप्सी फिर मन्त्री हुआ और उसने १८९६ तक निरंकुशता से राज्य किया। क्रिप्सी को जनता के असन्तोष की अपेक्षा उपनिवेशों की ही अधिक चिन्ता थी। पूर्वीय अफ्रीका मे और हाथ पैर फैलाने के कारण उसका ऐबीसीनिया के शासक मेनेलिक के साथ फिर युद्ध हो गया। सन १८९६ में १४ सहस्र इटालिन सेना ने ८० सहस्र ऐबीसीनियन सेना से युद्ध किया, जिसमे ६ सहस्र इटालियन सेना मारी गई। इटली की इस पराजय से क्रिप्सी को तुरन्त त्यागपत्र देना पड़ा।उसके पश्चात मार्क्विस डी रूडीनी प्रधान मन्त्री हुआ। उसने शांति की नीति बर्ती। उसने अफ्रीका मे और हाथ

पैर न फैलाने का वचन देकर मेनेलिक से अपने कैदी छुड़ा लिए। किन्तु जैसा कि आगे दिखलाया जावेगा इटली इस अपमान को न भूला और सन् १९३६ ई० में उसने इसका भयंकर वदला लेकर ऐबीसीनिया को पूरे तौर से अपने राज्य मे मिला लिया।

रूडीनी देश मे शान्ति स्थापित करने का यत्न कर ही रहा था कि १८९८ मे इटली के कई भागों मे फिर विद्रोह हो गया। मिलन का विद्रोह तो अत्यन्त भयंकर था। इन सव विद्रोहों का कारण जनता की निर्धनता और अधिक कर-भार था। किन्तु तौभी इनको अत्यन्त कठोरता से दबा दिया गया।

राजा विक्टर एमानुएल तृतीय (सन् १९०० से)

इसी समय ब्रेस्की नामक एक अराजक संयुक्त राज्य अमरीका के न्यू जर्सी (NewJeısey) नाम के राज्य के पैटर्सन (Pateıson) नामक नगर मे रहता था। वह वहां से राजनीतिक हत्या के उद्देश्य से चल कर इटली आया। उसने २९ जुलाई सन् १९०० को राजा हम्बर्ट प्रथम की हत्या कर दी। अत: उसके पश्चात् उसका पुत्र राजा विक्टर एमानुएल तृतीय इकत्तीस वर्ष की अवस्था मे गद्दी पर बैठा।

आपका जन्म सन् १८६९ ई० की ११ नवम्बर को और विवाह अक्तूवर १८९६ मे मांटीनीग्रो की प्रिंसेस एलेन के साथ हुआ था। आपका आरम्भिक जीवन सेना मे व्यतीत हुआ था।

आपकी शिक्षा बड़ी अच्छी हुई थी। अतएव आपने शीघ्र ही प्रजा हित के अनेक कार्य करके प्रजा के मन को मोह लिया। आप

इटली के वर्तमान सम्राट्

विक्टोरिओ एमानुएले तृतीय

सरकार के कामों की पूर्ण देख रेख करने वाले, परिश्रमी और वीर थे। आपके शासन से प्रजा में अमनचैन छा गया। इस समय अनेक करों को घटा कर भी राज्य के अर्थ पर नियन्त्रण किया गया।

इस समय यूरोप के अन्य देशों के समान इटली का व्यापार भी बढ़ रहा था। खानों का काम तो वहां इतना बढ़ गया था कि जहाज़ और रेलों के निर्माण के लिए इटली को बाहिर से कुछ भी नहीं मंगाना पड़ता था। रेशम, रुई तथा औषधियों का व्यापार भी बढ़ा और इटली के बड़े-बड़े व्यापारी जहाज़ सब देशों मे जाने लगे।

इटली मे यद्यपि कोयले और लोहे की खानों का लगभग अभाव है किन्तु वहां पानी के झरनों की कमी नहीं है। आपने इन झरनों से बहुत सी बिजली बना २ कर अपने कारखानों को चलाना आरम्भ किया। इस विषय में इटली अब भी बराबर उन्नति ही करता चला जाता है।

इस समय इटली की जन संख्या भी बढ़ी। सन् १८७० की अढाई करोड़ जन संख्या १९१४ में बढ़ कर साड़े तीन करोड़ हो गई, जिससे बहुत से इटालियनों को अपने देश में कम स्थान मिलने के कारण अमरीका आदि देशों मे जाकर बसना पड़ा। यही कारण था कि इटली की भी उपनिवेशों की इच्छा बराबर बढ़ती गई और आगे जाकर उसको सन् १९११-१२ मे लीबिया युद्ध, १९१४-१८ तक महायुद्ध और १९३५-३६ में एबीसीनिया युद्ध

करने पड़े। यद्यपि इटली के शासन मे मुसोलिनी ही सर्वेसर्वा है तो भी इटली के राजा (आज कल सम्राट्) को उनकी नियुक्ति का अधिकार है। यह अवश्य है कि सम्राट् को मुसोलिनी को हटाने का अधिकार नही है।

यूरोप के राजाओं मे राजा विटोरिओ एमानुअल तृतीय सब से प्राचीन है। सन् ३७ की २९ जुलाई को उनको गद्दी पर बैठे हुए पूरे ३७ वर्ष हो चुके। उनके दो निर्णय उनके जीवन की विशेषता समझे जाते है। सन् १९१५ मे उन्होंने ज्योलीटी को प्रधान मन्त्रित्व से प्रथक् किया, जिससे इटली ने गत महायुद्ध मे भाग लिया। फिर सन् १९२२ में उन्होने मुसोलिनी की रोम पर चढ़ाई को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया। वह उत्साही, मृदु, सुशिक्षित, और अत्यन्त बुद्धिमान् है। उनका वार्षिक वेतन १ करोड़ १२ लाख ५० हजार लीरा अथवा लगभग दो लाख पौंड है। मुसोलिनी से उनके सम्बन्ध बहुत अच्छे है।

इटली के परराष्ट्र सम्बन्ध

इस समय इटली ने यूरोप मे अच्छी उन्नति करली थी। अब उसकी गणना यूरोप की प्रधान शक्तियो मे की जाने लगी थी। अतएव उसकी सहायता के विचार से प्रथम जर्मनी और आस्ट्रिया ने उसकी ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया। सन् १८८२ मे इन तीनो ने एक सन्धि करके त्रिगुट (Triple Alliance) बनाया और प्रतिज्ञा की—कि यदि इस गुट मे किसी पर कोई अन्य राज्य आक्रमण करेगा तो शेष दो उसकी सहायता करेगे।

समझा जाता है। किन्तु बीसवीं शताब्दी और विशेषकर गत यूरोपीय महायुद्ध ने सिद्ध कर दिया कि पार्लमेंटवाद भी पूंजीवाद का ही दूसरा नाम है और उससे जनता को शान्ति नहीं मिल सकती। इसके अतिरिक्त पार्लमेंटवाद इगलैंड के अतिरिक्त और कहीं सफल भी नहीं हुआ। फ्रांस मे तो १९१८ से १९३४ तक के १६ वर्ष मे किसी भी मन्त्री-मंडल का औसत कार्यकाल आठ माह पच्चीस दिन से अधिक नही रहा।

पूंजीवाद के भयंकर से भयंकर रूप की प्रतिक्रिया का स्वरूप साम्यवाद है। यह सन् १९१७ मे रूस मे प्रगट हुआ था। यद्यपि रूस मे आरम्भ मे इसके सिद्धान्तों के अनुसार अक्षरशः आचरण किया गया, किन्तु सन् १९२१ मे व्यक्तिगत सम्पत्ति के अत्यन्ताभाव को अव्यवहार्य समझ कर उस सिद्धान्त मे कुछ परिवर्तन किया गया। इस समय लेनिन ने अपने सिद्धान्त के विरुद्ध व्यक्तिगत व्यापार की स्वीकृति भी दे दी। रूस की शासन-प्रणाली की विशेषता वहां की सोविएट सस्थाएं थी। किन्तु स्टालिन ने उस शासनप्रणाली को भी अव्यवहार्य समझ कर फिर प्रतिनिधि-सत्तात्मक शासनप्रणाली प्रचलित करके दो धारा सभाएं बनाई। यद्यपि साम्यवादी लोग इस शासनविधान को आदर्श शासन-विधान कह कर स्टालिन की प्रशंसा के पुल बांधा करते है, किन्तु हमारी सम्मति मे यह साम्यवाद के ऊपर पार्लमेंटवाद की स्पष्ट विजय है। क्यों कि इससे प्रगट होता है कि स्टालिन ने अव्यवहार्य होने के कारण ही सोविएट शासनप्रणाली का त्याग करके नवीन शासनप्रणाली को अपनाया है।

इटली के इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान को फ्रांस भी देख रहा था। उसको इटली का जर्मनी के पक्ष मे मिल जाना भयप्रद जान पड़ा। फलतः उसने भी मित्रता का प्रयत्न किया और सन् १६०० में उसकी मित्रता इटली से एक सन्धि द्वारा हो भी गई। किन्तु जर्मनी की चतुरता के कारण इटली ने बाद में फ्रांस का साथ छोड़ ही दिया।

सन् १६१२ मे उसने एक और सन्धि द्वारा उपरोक्त त्रिराष्ट्र सन्धि के ऊपर फिर मोहर लगाई। किन्तु जब महायुद्ध आरंभ करने पर आस्ट्रिया ने उससे युद्ध में सम्मिलित होने को कहा तो उसने यह कह कर अगूंठा दिखा दिया कि "सन्धि के अनुसार हम तभी सहायता दे सकते थे, यदि तुम पर आक्रमण होता। किन्तु इस समय तो तुम सर्विया पर आक्रमण कर रहे हो।"

१६१५ में तो इटली के मित्रराष्ट्रों की ओर से युद्ध घोषणा करने से यह त्रिगुट बिल्कुल ही समाप्त हो गया।

लीबिया युद्ध

इस समय यूरोप के अन्य राज्य अफ्रीका में अपना प्रसार करते जाते थे। उत्तरी अफ्रीका इटली के समीप था, अतएव इटली ने भी अब उसकी राजनीतिक घटनाओं को ध्यान पूर्वक देखना आरंभ किया। इस समय फ्रांस ऐल्जीरिया और ट्यूनिस को ले चुका था। इंगलैण्ड की मित्रता के कारण उसका मोरोक्को मे भी बहुत कुछ हाथ था। मिश्र प्रायः इंगलैण्ड के हाथ मे आ ही गया था। अब केवल ट्रिपोली (लीबिया) मात्र ही बचा था

ट्रिपोली उस समय टर्की का करद राज्य था। किन्तु इस समय टर्की अत्यन्त निर्बल पड़ रहा था, जिससे उसके करद राज्य उससे इस प्रकार प्रथक् हो रहे थे, जिस प्रकार सूखे वृक्ष से पत्ते झड़ जाते हैं। कुछ वर्षों से इटली ने भी ट्रिपोली से व्यापार करके उस पर बहुत कुछ अधिकार कर लिया था। उसको केवल नियमित रूप मे अपने अधिकार में करना शेष था।

सन् १९०८ मे टर्की मे एक क्रान्ति हुई जिससे ट्रिपोली मे नये २ तुर्की अफसर आ गए। यह लोग इटली वालों से घृणा करते थे, जिससे इटली के व्यापारियों, बैंकरों और इंजीनीयरों के मार्ग मे पग २ पर रोड़ा अटकाया जाने लगा। इटली वालो के विरुद्ध जर्मन प्रोफेसरो के साथ वहां पर्याप्त पक्षपात किया जाता था।

यह बात इटली को बहुत बुरी लगी। उसने सितम्बर १९११ मे टर्की के सुलतान को एक चेतावनी भेजी और ६ अक्टूबर १९११ को टर्की के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। यह युद्ध कई माह तक चला। यद्यपि इटली ने समुद्री किनारे के प्रदेशों को अपने अधिकार मे कर लिया, किन्तु तुर्क लोगों ने आन्तरिक भाग के निवासियों को इटली के विरुद्ध भड़का दिया, जिससे वहां सफलता न मिल सकी। अब इटली ने थोड़े परिश्रम से रोड्स (Rhodes), डोडेकैनीज द्वीप समूह (Dodacanese Archipelago) और ट्रिपोली के समुद्री नगरों पर कब्जा कर लिया। इस युद्ध मे जनवरी १९१२ मे फ्रांसीसी जहाज मैनोबा और कार्थेज

ने इटली के विरुद्ध टर्की को सहायता दी थी। इस समय टर्की के प्रान्तों की दशा ऐसी पेचीदा थी कि उसको उनके निकल जाने का भय था, जिससे टर्की इटली का मुकाबिला न कर सका और १८ अक्तूबर १९१२ को उसे लोसान (Laussane) मे इटली के साथ सन्धि करनी पड़ी। ट्रिपोली इटली को दे दिया गया, जो बाद में लीबिया कहा जाने लगा। सन्धि की अन्य शर्तों के पूर्ण होने तक रोड्स तथा कुछ अन्य द्वीप भी इटली के ही अधिकार मे दिये गये। इसके पश्चात् १९१२ मे इंटली ने जर्मनी और आस्ट्रिया के साथ त्रिगुट मैत्री की अवधि को सन् १९२० तक के लिये और बढ़ा लिया।

महायुद्ध

यूरोपीय महा युद्ध के दूसरे वर्ष मे २२ मई सन् १९१५ को इटली ने भी आस्ट्रिया के विरुद्ध मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध घोषणा कर दी। इटली की ओर दो वर्ष तक कई युद्ध हुए, जिनमें इटली ने आस्ट्रिया से बहुत सी भूमि छीन ली। सन् १९१६ तक इटली ने आस्ट्रिया को अच्छी तरह पराजित कर दिया। इस समय आस्ट्रिया ने अपनी सेनाएं इटली से हटा कर उत्तर में रूस के मुकाबले पर भेजीं।

किन्तु सन् १९१७ में रूस के युद्ध से पृथक् हो जाने पर इटली पर आफ़त आ गई। इस समय जर्मनी ने अपनी बहुत से सेना पूर्व की ओर इटली के मुकाबले को भेजदी, जिसके वेग को इटली वाले न रोक सके। अब दो वर्ष के कठोर परिश्रम से जीता हुआ

सभी कुछ इटली के हाथ से निकल गया। जर्मनी ने वेनेशिया पर भी अधिकार कर लिया। यह सब अक्तूबर और नवम्बर १९१७ मे हुआ। जर्मनी ने इटली की चार सहस्र वर्ग मील भूमि पर अधिकार करके उसके दो लाख मनुष्यो को कैद कर लिया। किन्तु सन्१९१८ मे जर्मनी के पराजित होने से इटली की सब क्षति पूरी हो गई।

वरसाई की सन्धि

जर्मनी का भाग्य वरसाई की सन्धि मे वन्द किया गया था। इंगलैण्ड के प्रधान मन्त्री मिस्टर लायडजार्ज, अमेरिका के प्रेसीडेंट विल्सन, फ्रांस के प्रधान मन्त्री क्लेमेन्शू और इटली के सिन्योर आरलैण्डो इस सन्धि के विधाता थे। इस समय यह चारों 'चतुर चौकडी' के नाम से प्रसिद्ध थे। इस युद्ध के कारण फ्रांस और इंगलैण्ड को बड़ा भारी लाभ हुआ। जापान भी नफे मे ही रहा। किन्तु इटली का स्थान वरसाई की सन्धि के विधाताओं मे होने पर भी वह केवल अपनी क्षतिपूर्ति ही कर सका, उससे लाभ नही उठा सका। यहां तक कि इस युद्ध के कारण इटली पर इगलैण्ड का ५७ करोड़ पौंड ऋण हो गया, जिसमे से उसने जनवरी १९२६ के समझौते के अनुसार प्रति वर्ष ४० लाख पौंड देना स्वीकृत किया था।

यद्यपि युद्ध के पूर्व लन्दन की गुप्त सन्धि के अनुसार इटली को उसके पूर्व का डलमाशिया का किनारा तथा एशिया माइनर के कुछ बन्दरगाह दे दिये गये थे और इसी कारण इटली महा-

युद्ध मे सम्मिलित हुआ था, किन्तु वरसाई की सन्धि से उसको ट्रेण्टिनो, ट्रीएस्टे और टायरोल आदि स्थान ही मिल पाये।

मुसोलिनी की विजय

इटली की सरकार के निर्बल होने से वहां की पार्लमेण्ट मे सदा षड्यन्त्र चला करते थे। अतः जनता के ऐसे राज्य से ऊब जाने के कारण वहां एक नये सुदृढ़ दल का जन्म हुआ, जिसका नाम फासिस्ट दल है। यह दल अपने साहसी नेता सिन्योर मुसोलिनी की अध्यक्षता मे रोम पर अधिकार करने चला। किन्तु इटली के राजा ने २७ अक्तूबर १९२२ को उनके रोम मे प्रवेश करने पर उस दल का स्वागत करके अपना सिंहासन बचा लिया और उस दल के नेता सिन्योर मुसोलिनी को मंत्री मंडल बनाने का निमन्त्रण दे दिया। मुसोलिनी ने तारीख २९ अक्तूबर १९२२ को अपना मन्त्री मण्डल बनाया। तब से मुसोलिनी ही वास्तव मे इटली का विधाता है और राजा को मन्त्री मण्डल के प्रत्येक आदेश को उसी प्रकार मानना पड़ता है जिस प्रकार इंगलैण्ड का राजा वहां के मन्त्री मण्डल के आदेश को पार्लमेंट के नाम पर मानता है। इटली का राजा मुसोलिनी और ग्रैण्ड कौंसिल के निर्णय को मानता है। इस ग्रन्थ के अगले पृष्ठों में इन्ही मुसोलिनी का चरित्र दिया जावेगा।

द्वितीय अध्याय

मुसोलिनी का आरम्भिक जीवन

मुसोलिनी जर्मन राष्ट्रपति हिटलर के समान देश के सीमा-प्रान्त का निवासी न होकर विशुद्ध इटालियन है। उसका जन्म इटली के उत्तर-पूर्वी जिले प्रेदापिओ (Piedappio) के समीप वैरानो डी कोस्ता (Varano di Costa) नामक ग्राम मे २९ जुलाई सन् १८८३ को रविवार के दिन दो पहर दो बजे हुआ था। यह गांव एक छोटी सी पहाड़ी पर है। इसके मकान प्रायः पत्थर के ही बने हुये हैं। प्रेदापिओ जिले का स्थान इतिहास में महत्व पूर्ण है। तेरहवी शताब्दी मे इसने साहित्यिक जागृति मे प्रमुख भाग लेने वाले अनेक परिवारों को जन्म दिया था। यहां की पृथ्वी मे गंधक का अंश अधिक है। अंगूर इस प्रान्त मे अत्यधिक मात्रा में होता है, जिससे यह अत्यन्त स्वादिष्ट और सुगन्धित मदिरा के लिये भी प्रसिद्ध हो गया है। इस ज़िले मे स्थान २ पर अब भी अनेक प्राचीन खण्डहर देखने में आते हैं।

उसके पूर्वज

मुसोलिनी का जन्म एक सच्चरित्र कुल में हुआ था। पादरियों के कागज़ों से इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि उसके पूर्व पुरुष खेती से अपना जीवन निर्वाह किया करते और अत्यन्त सम्मान पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। इस सम्बन्ध में जांच करने से पता लगा है कि मुसोलिनी परिवार तेरहवीं शताब्दी में बोलोइञा (Bologna) में अत्यन्त प्रसिद्ध था। सन् १२७० में ज्योवान्नी मुसोलिनी (Giovanni Mussolini) उस वीर तथा आक्रमणशील जाति का सरदार था। उसको बोलोइञा के शासनकार्य में एक फुलचिएरी पाओलूची डे कल्बोली (Fulcieri Paolucci de Calboli) नामक वीर सहायता दिया करता था। यह व्यक्ति भी प्रेदापिओ का ही निवासी था। उसका वंश आज भी अच्छा प्रतिष्ठित है।

बोलोइञा के दुर्भाग्यवश उसके सरदारों में फूट पड़ गई, जिससे पारस्परिक लड़ाई झगड़ों से तंग आकर मुसोलिनी परिवार वहां से आरजेलातो (Argelato) को चला गया। वहां से वह आस-पास के प्रान्तों में फैल गया। उस समय उनको बड़े २ कठिन दिनों का सामना करना पड़ा। सतरहवी शताब्दी में उनके विषय में कुछ सुनने में नहीं आता। अठारहवीं शताब्दी में एक मुसोलिनी लन्दन मे था। इटली वासी विदेशों मे अपनी प्रतिभा दिखलाने में कभी त्रुटि नहीं करते। लन्दन के मुसोलिनी ने कुछ गीतों के गायन योग्य स्वर बनाये थे, संभवत: उसी के गुणों के

उत्तराधिकार स्वरूप हमारे चरित्रनायक बेनीटो मुसोलिनी भी बेले (वाएलिन) के ऐसे प्रेमी हैं कि अपने हाथ में बेले को लेकर वह आज भारी से भारी चिन्ता को भी भूल जाते हैं।

इसके पश्चात् उन्नीसवीं शताब्दी में इस परिवार का अच्छा परिचय मिलता है। बेनीटो मुसोलिनी के अपने पितामह राष्ट्रीय रक्षक सेना (National guard) में लेफ्टिनेण्ट थे।

बेनीटो मुसोलिनी का पिता एक लुहार था। वह अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट था। उसकी भुजाएं बलवान्, लम्बी तथा मांसल थीं। उसके पड़ौसी उसको ऐलेसैन्ड्रो (Alessandro) कहा करते थे। उसके हृदय और मस्तिष्क में सदा समाजवादी (Socialist) सिद्धांत ही चक्कर लगाया करते थे। समाजवाद के साथ उसकी पूरी सहानुभूति थी। सायंकाल के समय अपने मित्रों के साथ समाजवाद के ऊपर वाद-विवाद करते समय उसकी आंख चमकने लगती थी। अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में उसको अधिक रुचि थी। इटली में सामाजिक जागृति का कार्य करने वालों के साथ भी उसका घनिष्ठ सम्बन्ध था।

इटली में मुसोलिनी परिवार के कुछ विशेष चिह्न भी हैं। बोलोइना में एक मुहल्ले (Street) का नाम मुसोलिनी मुहल्ला है। उनके नाम का एक स्तम्भ तथा तालाब भी है। पुराने सैनिक कागजों में एक मुसोलिनी कोट का भी उल्लेख है। इसका नमूना अत्यन्त आनन्द दायक तथा शानदार था। इनमें पीले रंग के अस्तर के ऊपर वीरता, साहस और शक्ति की छै काली मूर्तियां थीं।

बाल्यावस्था

मुसोलिनी का बाल्यकाल कुछ विशेषता पूर्ण नहीं था। न तो वह बहुत अच्छा और न तेज़ ही था; न वह इतना शैतान ही था कि अपने शैतान साथियों का सर्दार बन जाता। यह अवश्य है कि उसके जीवन में दृढ़चित्तता उस समय भी थी। वह जिस कार्य के करने का निश्चय कर लेता था उसको पूरा करके ही छोड़ता था।

मुसोलिनी के पिता का स्वभाव अच्छा था। वह हंसमुख और तेजस्वी था। उसके स्थिर नेत्र उसके दृढ़व्रती होने का परिचय देते थे। उसका मकान पत्थर का था। उसकी दीवार की दरारों में स्थान २ पर घास उग आई थी। उसके मकान के पास एक छोटा सा नाला था और थोड़ी ही दूर पर एक छोटी सी नदी थी। यद्यपि इन दोनों में ही जल कम रहता था, किन्तु वर्षा होने पर उनमें इतना अधिक जल आ जाता था कि उनके इतरा कर चलने को देख कर बालक मुसोलिनी के हृदय को अतिशय आनन्द हुआ करता था। मुसोलिनी ने अपना क्रीड़ा स्थल पहली पहल इन्हीं को बनाया था। मुसोलिनी के भाई का नाम आरनोल्डो था, बाद में वह मुसोलिनी के प्रसिद्ध पत्र 'पोपोलो डीटैलिया' (Popolo d' Italia) का प्रकाशक बन गया था। बालक मुसोलिनी अपने भाई आरनोल्डो सहित पानी को रोकने के लिये बांध बनाने का यत्न किया करता था। पक्षियों के घोंसला बनाने की ऋतु में वह उनके घोंसलों, अण्डों और बच्चों को ढूंढा

करता था। किन्तु वह उनको नष्ट कभी नहीं करता था। वह आजकल के समान ही उनकी रक्षा करने का यत्न किया करता था।

मुसोलिनी की माता का नाम रोजा (Rosa) था। उसका सब से अधिक प्रेम उसी के साथ था। वह शान्त कोमल और बलिष्ठ थी। वह अपने बच्चों को लालन पालन करने के अतिरिक्त आरम्भिक शिक्षा भी देती थी। मुसोलिनी के हृदय में अपनी माता के लिये अपार श्रद्धा थी। उसकी अप्रसन्नता से उसे बड़ा भय लगता था। अपनी उछल कूद, शैतानी अथवा चंचलता को छिपाने के लिये वह प्रायः अपनी दादी और यहां तक कि पड़ौसियों तक से सहायता ले लिया करता था, क्योंकि वह माता के क्रोध के कारणस्वरूप होने वाले मुसोलिनी के आकस्मिक भय को जानते थे। मुसोलिनी की माता एक विद्यालय में अध्यापिका थी।

उसमें अन्य महा पुरुषों की माताओं के समान अलौकिक गुण थे। परन्तु मुसोलिनी के भावी जीवन के निर्माण मे उसका हिटलर की माता के समान बड़ा भारी हाथ नही था। कमाल अतातुर्क की माता के साथ यूनानियो ने दुर्व्यवहार किया या। उसके एक वप पश्चात् ही कमाल ने यूनानियों को समुद्र मे पराजय दी थी। किन्तु मुसोलिनी के जीवन में इस प्रकार माता को छुडाने की विचित्र घटनाए भी नही है।

इन सब के विरुद्ध फासिस्टवाद मध्यम मार्ग है। यह जनता को न तो पूंजीपतियों के अत्याचारों और शोषण का शिकार ही बनने देना चाहता है और न एक दम श्रमिक राज्य को ही पसंद करता है। इसमें धनी और निर्धन दोनों कन्धे से कन्धा भिड़ा कर आपस में प्रेमभाव से राष्ट्रनिर्माण का कार्य करते हैं। यह कहना अभी समय से पूर्व होगा कि यह प्रणाली अपने उच्च व्यक्तित्व वाले संचालकों (हिटलर और मुसोलिनी) के व्यक्तित्व के कारण फल फूल रही है अथवा इसका कारण इसके सिद्धांतों की सुंदरता है। इनमें से पहिली बात से तो किसी प्रकार इंकार नहीं किया जा सकता। रही दूसरी बात सो उसके असली नक्शे का साम्यवादी लोग पता नहीं लगने देते। वह फासिज़्म के द्वेष के कारण उसके सम्बन्ध मे ऐसी २ भ्रमात्मक बातों का प्रचार करते रहते हैं कि अच्छे से अच्छा बुद्धिमान् राजनीतिज्ञ भी उनको सुन कर चक्कर में पड़ जाता है।

आज भारतवर्ष भी राष्ट्रनिर्माण के लिये तयार खड़ा है। यह दिखलाई दे रहा है कि उसकी परतन्त्रता-रूपी-काल रात्रि का यह अन्तिम प्रहर है। आशा के अरुण के प्रगट होने से हृदय में उत्साह की तरंगें हिलोरें मार रही हैं। अब यदि कमी है तो केवल स्वतन्त्रता के बालसूर्य के प्रगट होने मात्र की ही है। किन्तु यह हमको अभी से निर्णय करना होगा कि हम उस स्वतन्त्रता देवी को पार्लमेंटवाद, साम्यवाद अथवा फासिस्टवाद में से किस के परिधान में देखना चाहेंगे। हमारी राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस

शिक्षा काल

मुसोलिनी को वर्णमाला का ज्ञान खेल २ मे ही करा दिया गया। उसके पश्चात् उसकी स्कूल जाने की इच्छा हुई। वह अपने गांव से दो मील प्रेदापिओ के स्कूल में जाने लगा। उसमें—मुसोलिनी के पिता का एक मैरैनी (Marani) नामक मित्र शिक्षा दिया करता था। मुसोलिनी उस स्कूल मे इधर उधर घूमता था।तो उसको अजनबी समझ कर वहां के लड़कों को बुरा लगा करता था। वह मुसोलिनी पर ढेले फेंका करते थे। मुसोलिनी भी उनका उत्तर ढेलों से ही दिया करता था, किन्तु उनकी अधिक संख्या अधिक होने के कारण मुसोलिनी प्रायः पिट जाया करता था। किन्तु मुसोलिनी को उस लड़ाई झगड़े मे भी आनन्द आया करता था। मुसोलिनी के साहस के चिन्ह उसके शरीर पर बन जाया करते थे। किन्तु वह अपनी माता को उस सबका ज्ञान न होने देने के लिये अपने ज़ख्मों को छिपा लिया करता था। भोजन के समय उसको हाथ फैला कर रोटी मांगने मे इस कारण भय हुआ करता था कि कही उसकी माता उसकी छोटी सी कलाई के ज़ख्मों को देख न पावे।

किन्तु कुछ दिनों के पश्चात् यह काण्ड समाप्त हो गया। कल के शत्रु मित्र बन गये और मुसोलिनी उनके साथ खेल कूद कर अपने समय को आनन्द पूर्वक व्यतीत करने लगा। बाल्यावस्था के उन सुखद दिवसो की स्मृति मुसोलिनी के हृदय पटल

पर आज भी उसी प्रकार अंकित है, कुछ वर्ष पूर्व प्रेदापिओ नगर के बर्फ की चट्टानो के कारण नष्ट हो जाने से मुसोलिनी ने नया प्रेदापिओ नगर बसा कर उस नगर के प्रति अपने बाल प्रेम को प्रदर्शित किया था। नया प्रेदापिओ नगर बड़ी शीघ्रता पूर्वक उन्नति कर रहा है। उसके मुख्य द्वार पर अंकित किया हुआ फासिस्टवाद का चिन्ह मुसोलिनी के दृढ़ निश्चय की सूचना दे रहा है।

छोटी पाठशाला को पास करने के पश्चात् मुसोलिनी को फ़ाएंसा (Faenza) नामक नगर के एक स्कूल मे भेजा गया। यह नगर पन्द्रहवीं शताब्दी मे मिट्टी के वर्तनो के लिये अत्यन्त प्रसिद्ध था। इस स्कूल में मुसोलिनी को छात्रावास मे ही रहना पड़ता था। इस स्कूल का प्रबन्ध सालेज़ियानी (Salesiani) पादरियों के हाथ मे था। मुसोलिनी ने यहां विनयानुशासन की उपयोगी शिक्षा प्राप्त की। वह अध्ययन करता, चैन करता और निश्चिन्तता से खूब सोया करता था। वह दिन छिपते ही सो जाता और खूब दिन चढ़े उठा करता था।

इस समय मुसोलिनी को आस पास के फ़ोर्ली (Forli) और रवेन्ना (Ravenna) नामक नगरों मे यात्रा करने का अवसर भी प्राप्त हुआ, जिससे उसका अनुभव बराबर बढ़ता गया। रवेन्ना से वह एक बत्तक लेता आया, जिसको वह अपने भाई आरनोल्डो सहित पालतू बनाने का यत्न किया करता था।

मुसोलिनी का पिता उसकी शिक्षा का विशेष ध्यान रखता

था। मुसोलिनी भी बाल्यावस्था को क्रमशः पार करते हुए अपनी भावनाओं से पिता के हृदय के अधिकाधिक निकटतर होता जाता था। इस समय उसने मशीनों की ओर ध्यान देना आरंभ किया। एञ्जिन के कार्य से उसे विशेष अनुराग था। अपने पिता की दूकान में शारीरिक श्रम करने में भी उसे आनन्द आता था।

मुसोलिनी अभी पन्द्रह-सोलह वर्ष का ही था कि उसका इस प्रकार का शारीरिक श्रम उसके माता पिता को अखरने लगा। उनको इस बालक के अन्दर कुछ विलक्षण प्रतिभा दिखलाई देती थी। मुसोलिनी की माता को उसके भविष्य के सम्बन्ध में कुछ अधिक आशा थी। किन्तु मुसोलिनी को इन सब बातों की कोई चिन्ता न थी। उसको न तो अधिक विद्या प्राप्त करने का उत्साह था और न वह अध्यापक ही बनना चाहता था। किन्तु उसको माता पिता की इच्छा के कारण फ़ार्लिम्पोपोली (Forlımpo polı) के नार्मल स्कूल में जाना ही पड़ा।

इस स्कूल का प्रबन्ध बालफ्रेडो कारदूची (Vaelfredo Carduccı) के हाथ में था। यह महाशय प्रसिद्ध लेखक जोज़ुए कारदूची (Gıosue Carduccı) के भाई थे। इस स्कूल मे मुसोलिनी ने छैः वर्ष तक पुस्तकों, स्याही और कागज़ों से माथापच्ची की। यद्यपि वह परिश्रमी नहीं था, किन्तु छैः वर्ष के पश्चात् उसको अध्यापकी का सर्टिफिकेट मिल ही गया।

अध्यापकी

अत्यन्त परिश्रम और भाग दौड़ के पश्चात् उसको ग्वलटिएरी (Gualtieri) मे अध्यापकी का एक स्थान मिल ही गया। इस समय उसको ६ लीरा अथवा लगभग ३२ रुपया मासिक वेतन मिलता था। इस स्कूल में मुसोलिनी ने एक वर्ष तक कार्य किया।

इस समय मुसोलिनी के हृदय मे यौवन की उद्दाम तरंगें हिलोरे मारने लगी थी। स्कूल का जीवन उसे नीरस प्रतीत होने लगा और एक प्रकार के परिवर्तन की उसके हृदय मे इच्छा उत्पन्न होने लगी। वर्ष के अन्त मे स्कूल के बन्द होने पर अपने गांव जाने को उसका हृदय किसी प्रकार भी नही होता था। वहां उसे प्रेम का निश्चय था, किन्तु उस परिमित प्रेम मे उसे सन्तोष नही था। उसका विशाल हृदय विश्व से सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था। किन्तु इस परिस्थिति का उसके ग्राम में नितान्त अभाव था। इस समय वह अपने को अच्छी तरह पहचानने लगा था। उसे रह रह कर अपने भविष्य का ध्यान आता था। अतएव उसने इन सब परिस्थतियों से बच निकलना ही उचित समझा।

किन्तु बाहिर जाने के लिये धन की आवश्यकता होती है, जिसका उसके पास एक दम अभाव था। हॉ, साहस उसके पास अपरिमित मात्रा मे था। अन्त में उसने विदेश जाने का ही निश्चय किया।

स्वीज़लैंड का प्रवास काल

उसने उन्नीस वर्ष की अवस्था मे सन् १९०२ मे सीमा को पार कर स्वीज़लैण्ड मे प्रवेश किया। यहां आकर उसको जो कष्ट झेलने पड़े उनका वर्णन लेखनी से नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार हिटलर ने अपने यौवन के आरम्भ मे आस्ट्रिया की राजधानी विएना मे कष्ट झेले थे उसी प्रकार मुसोलिनी को भी शारीरिक, आर्थिक और मानसिक सभी प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ा। यद्यपि कहने के लिये वह सभी कष्ट थे, किन्तु इटली के लिये वह अभ्युदय थे; क्यों कि इन कष्टों के कारण ही मुसोलिनी के आत्मा का इतना विकास हुआ कि आगे चल कर वह इटली का भाग्य विधाता बन गया।

मुसोलिनी ने इस जीवन मे मनुष्य तथा राजनीतिज्ञ के रूप में प्रवेश किया। उसके अन्तरतम मित्र अन्तःकरण ने उसको मार्गप्रदर्शन करना आरंभ किया। इस जीवन की कठिनाइयों ने उसको कठोर बना दिया। उन्हों ने ही उसको जीपन व्यतीत करने का ढंग सिखलाया।

वास्तव में यदि उस समय मुसोलिनी को लम्बे चौड़े वेतन वाला कोई सरकारी पद मिल जाता तो यह इटली तथा उसके लिये बड़े दुर्भाग्य का विषय होता, क्यों कि उस दशा मे इटली के इतिहास को वर्तमान रूप कभी न मिलता।

बर्ट्रण्ड रसेल ने लिखा है कि यदि जर्मन सेनापति लेनिन को बंद गाड़ी मे छिपा कर जर्मनी में से निकाल कर रूस न पहुं-

चाता तो रूस मे क्रान्ति न होती, यदि ट्राट्स्की क्रोध के वशीभूत होकर लेनिन के अंत्येष्टि संस्कार मे सम्मिलित होने से निषेध न कर देता तो सोवियट रूस मे पंचवर्षीय योजना सम्भतः कभी न बनाई जाती, यदि आस्ट्रियन पार्लमेंट की वोट के आड़े समय मे एक समाजवादी सदस्य स्नानागार मे न चला जाता तो डालफस वहां का चैंसलर न बनता, उसी प्रकार यदि मुसोलिनी इस समय स्वीज़लैंण्ड न जाता तो आज इटली की दशा किसी और प्रकार की ही होती।

मुसोलिनी का स्वीज़लैंण्ड का प्रवास काल अनेक कठिनाइयों से भरा हुआ था। यद्यपि उसमें अधिक समय नहीं लगा तौ भी उस जीवन की अपनी विशेषता थी। मुसोलिनी ने उसमे अत्यन्त कठोर परिश्रम किया।

इस समय मुसोलिनी को भी हिटलर के समान प्रायः राज (मिस्तरी) का काम करना पड़ा और कई मकान बनाने पड़े। कभी २ उसको इटली भाषा से फ्रेंच भाषा और फ्रेंच भाषा से इटली की भाषा में अनुवाद करने का काम भी मिल जाया करता था। इस समय उसको जो कुछ भी श्रम का कार्य मिलता था वह कर लेता था और इतने पर भी मित्रों के साथ आमोद प्रमोद में समय व्यतीत करता था।

जान गुन्थर ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि उस समय मैडेम ऐञ्जेलिक बलबानव नाम की एक रूसी महिला स्वीजलैंण्ड मे निर्वासित जीवन व्यतीत कर रही थी। मुसोलिनी के जीवन पर

इस महिला का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। वह मुसोलिनी की प्रत्येक प्रकार से देख, भाल करती और उसको शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार का भोजन दिया करती थी। उसने मुसोलिनी की भेंट लेनिन से भी कराई थी।

अब मुसोलिनी ने राजनीतिक कार्य में भी भाग लेना आरंभ कर दिया था। वह प्रवासी इटली वासियों और देशनिर्वासितों के कष्टों को दूर करने में जी जान से जुट गया। इस राजनीति से उसने कभी एक पैसा भी नहीं कमाया। वास्तव में राजनीति से धनोपार्जन करने की भावना ही मनुष्य के व्यक्तित्व तथा देश दोनों के ही पतन का कारण होती है।

मुसोलिनी ने इस समय समाज विज्ञान का भी अध्ययन कर डाला। उस समय लोसान (Lausanne) मे एक परेटो (Pareto) नामक विद्वान् अर्थशास्त्र पर व्याख्यान माला दे रहा था। मुसोलिनी इन व्याख्यानों को अत्यन्त उत्सुकता पूर्वक सुना करता था। इस अध्ययन में उसको वास्तविक आनन्द का अनुभव होता था। इन व्याख्यानों में भाग लेने के अतिरिक्त वह सार्वजनिक सभाओं में भी भाग लेकर राजनीतिक विषयों पर व्याख्यान दिया करता था। उसके व्याख्यान क्रमशः उग्रतर होने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वीज़र्लैंण्ड की सरकार ने उसको जेल मे डाल दिया। जेल से निकलने पर भी उसका जेनेवा और लोसान दो ज़िलों में प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। इस समय तक विश्वविद्यालय की व्याख्यान माला समाप्त हो चुकी थी। मुसोलिनी को

विवश होकर उस स्थान को छोड़ना ही पड़ा। लोसान मे तो वह उसके पश्चात् केवल सन् १९२२ मे इटली के प्रधान मंत्री के रूप में ही आ सका। वह इटली और स्वीजलैंण्ड मे कुल मिला कर ग्यारह बार गिरफ्तार किया गया।

सैनिक शिक्षा

अब उसके लिये स्वीजलैंण्ड मे रहना असम्भव हो गया। इस समय उसको घर की याद भी सताने लगी थी। इसके अतिरिक्त अनिवार्य सैनिक शिक्षा से भी बराबर बुलावे आ रहे थे। लाचार वह इक्कीस वर्ष की अवस्था मे सन् १९०४ मे वापिस इटली आया, जहां उसने दस वर्ष तक अत्यन्य उग्र समाजवादी का जीवन व्यतीत किया। इटली मे उसका उसके सम्बन्धियों, मित्रों और परिचितों ने अच्छा स्वागत किया। अब उसने सेना में नाम लिखा लिया। उसको ऐतिहासिक नगर वेरोना (Verona) की वेरसालिएरी सेना (Bersaglieri Regiment) में रखा गया। वेरसालिएरी सैनिक अपने टोप में हरे पंख लगाया करते थे। वह अपनी शीघ्र गति, नियमानुशासन और उत्साह के लिये प्रसिद्ध थे।

मुसोलिनी ने इस जीवन मे अधिक आनन्द अनुभव किया। इच्छा पूर्वक आधीनता ग्रहण करना मुसोलिनी के स्वभाव के अनुकूल था। मुसोलिनी अत्यन्त चंचल, उग्रस्वभाव वाला, मौलिक और क्रान्तिकारी समझा जाता था। यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि ऐसे व्यक्ति के विषय मे भी उसके कप्तान, मैजर और कर्नल सभी को उसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करनी

पड़ती थी। मुसोलिनी को वास्तव में अपने भावों के अनुकूल आचरण प्रदर्शित करने का यही अवसर मिला था।

मुसोलिनी को वेरोना नगर, उसकी जनता, उसके कल्पित युद्ध, उसकी कार्य प्रणाली और आक्रमण तथा रक्षा के अभ्यास सभी से प्रेम था। यद्यपि वह एक सामान्य सैनिक था, किन्तु वह अपने सभी अधिकारियों के आचरण और उनकी योग्यता की मन ही मन में जांच किया करता था। वास्तव में इटली के प्रत्येक सैनिक की यह प्रकृति होती है। इस प्रकार उसको सैनिक अधिकारियों के कार्य और उत्तरदायित्व का ज्ञान स्वयं ही हो गया।

मुसोलिनी एक बड़ा उत्तम सैनिक था। सम्भव था कि वह अफसरी के काम को भी सीखता; किन्तु जिस भाग्य ने उसको उसके पिता की लुहार की दुकान से अध्यापकी में, अध्यपकी से विदेशवास में और विदेशवास से विनयानुशासन में पटक दिया उसीने यह निर्णय किया कि मुसोलिनी नियमित रूप से सैनिक ही नहीं बना रह सकता।

माता की मृत्यु

एक दिन उसके कप्तान ने उसको अकेले मे लेजा कर उसके पिता का तार दिया। उसकी माता मृत्यु शय्या पर थी। उसको शोक के वेग की बाढ़ को हृदय में थामे हुए सेना से छुट्टी लेनी पड़ी। सबसे पहिली गाड़ी पकड़ कर वह घर पहुंचा। उसकी माता मृत्यु के मुख में थी। वह मुसोलिनी को देख कर केवल मुस्करा

भर ही सकी और उसी समय उसका प्राण पखेरू उड़ गया। अब मुसोलिनी के धैर्य ने भी अपने बाध को तोड़ दिया। वह कई दिन तक शोक सागर मे डूबा रहा।

अन्त मे उसको शोक को सम्भाल कर सेना मे जाकर सैनिक सेवा के अवशिष्ट समय को पूरा करना पड़ा। इसके पश्चात् उस का जीवन फिर अनिश्चय के गर्त मे डुबकियां खाने लगा।

सम्पादन क्षेत्र में

वह फिर अध्यापक बन कर ओफेलिआ (Opeglia) को चला गया। इस बार वह एक मिडिल स्कूल का अध्यापक बना। कुछ समय के पश्चात् वह 'पोपोलो' (Popolo) नामक पत्र के प्रधान सम्पादक चीजरे बतिस्ती (Cesare Battisti) के साथ चला गया। बतिस्ती बडा भारी देश भक्त वीर था। उसने देश के लिये अपने प्राणो की बाज़ी लगा दी। युद्ध मे उसको शत्रु अस्ट्रिया वालो ने पर्याप्त दण्ड दिया। उस समय वह ट्रेंटो (Trento) प्रांत को आस्ट्रिया के जुवे से निकाल कर स्वतन्त्र करने का आन्दोलन कर रहा था। वह समाजवादी था।

एक दिन मुसोलिनी ने उक्त पत्र मे एक लेख लिख कर वतलाया कि आस्ट्रिया की सीमा अला (Ala) नामके उस छोटे से नगर पर नही है, जो पुराने इटली और आस्ट्रिया की सीमा पर था। इस पर आस्ट्रिया सरकार ने उसको आस्ट्रिया से निकाल दिया। मुसोलिनी निर्वासन का अभ्यासी सा हो गया था। अब

बहुत समय पूर्व पार्लमेंटवाद के पक्ष मे अपनी सम्मति दे चुकी है। इधर आधुनिक भारत के नवतुवक ऋपि राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू साम्यवाद अथवा समाजवाद का शंखनाद कर रहे है। सेगांव का महान् सन्त इस परिस्थिति के विषय में कुछ भी राह प्रदर्शित न कर राजनीतिक सन्यास लेकर सेगांव मे धूनी रमा रहा है। ऐसी परिस्थिति मे भारत के नवयुवक समाजवाद के नाम की चकाचौध से दीवाने होकर अधकचरा अध्ययन होते हुए भी समाजवाद के सुर में सुर मिला कर फासिज्म को हज़ार ज़बान से कोसते हुए स्टालिन का गुणानुवाद कर रहे हैं। वह यह भूल जाते हैं कि यूरोपीय रक्त की विशेषताएं सभी यूरोपियनों मे एक सी होती है। वह हिटलर और मुसोलिनी के हत्याकांडो की निन्दा करते हैं और सोविएट रूस और विधान के नाम पर किये हुए स्टालिन के हत्याकांडों को भूल जाते है। वह यह नही जानते कि यूरोप की विशेषता निर्दयता तथा क्रूरता और भारत की विशेषता धर्मयुद्ध है। हम पिछले २० साल के अन्दर हिटलर और मुसोलिनी के अत्याचारों के ही समान सोविएट के नाम पर रूस मे रक्त की नदियां बहती हुई देख चुके है। हम ससार भर के लगभग सभी देशों में साम्यवादियों के गुप्त संगठन द्वारा सैकड़ों ही नही, वरन् सहस्रों हत्याओं का रोमांचकारी वर्णन पढ़ चुके है। साम्यवादियों ने अपने विरोधियों के गढ़ ज़र्मनी और इटली तक मे पर्याप्त गुप्त हत्याएं कीं। स्वयं हिटलर और मुसोलिनी तक को शिकार बनाने का यत्न किया गया,

उसको फिर इधर उधर चक्कर काटने पड़े। अन्त में वह फिर फोर्लो (Forli) को ही चला गया

अब उसको संपादन कला का चस्का लग गया था। फोर्लो मे उसको सन् १६०६ में एक स्थानीय समाजवादी पत्र को संपादन करने का अवसर भी मिल गया। इस पत्र का नाम 'ला लोटी डी क्लासी. (वर्गयुद्ध) था। उस समय मुसोलिनी का विश्वास था कि इटालियन जनता की निर्धनता केवल सशस्त्र क्रांति से ही दूर की जा सकती थी। इस पत्र के द्वारा मुसोलिनी इटली भर के सोशिएलिस्टों और क्रांतिकारियों में प्रसिद्ध हो गया।

अवन्ती नामक पत्र की डाइरेक्टरी

इस समय उसने इसी सिद्धान्त का प्रचार करना आरम्भ किया। अब जनता के भावों को विकसित करने, उनमे विचार करने और कार्य करने की आग भरने का समय आगया था। इस समय उसको क्रान्तिकारी समाजवादी दल का प्रधान नेता बना दिया गया। इसके कुछ समय के पश्चात ही गत महायुद्ध के आरम्भ होने से दो वर्ष पूर्व सन् १९१२ मे रेजिओ ऐमीलिआ (Reggio Emilia) मे समाजवादियों की कांग्रेस हुई। इसमे मुसोलिनी को 'अवन्ती' (Avanti) नामक पत्र का डाइरेक्टर बना दिया गया। उस समय समाजवादियों का यही एक मात्र दैनिक पत्र था। यह मिलन (Milan) नगर से प्रकाशित होता था। इस समय मुसोलिनी की अवस्था उनतीस वर्ष की थी।

पिता की मृत्यु

अपने इस नये कार्य को संभालने से कुछ समय पूर्व ही उसके पिता की मृत्यु हो गई। मुसोलिनी का पिता दृढ़ विचार वाला, बुद्धिमान् और उदार था। उसने अपने जीवन के चालीस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीयता के आन्दोलन में व्यतीत किये थे। अपने इन विचारों के कारण उसको जेल भी जाना पडा था। उसके राजनीतिक कार्य की उसके प्रान्त रोमाइग्ना (Romogna) में खूब धूम थी। वह अनेक कठिनाइयां भोग कर भी बराबर राजनीतिक कार्य करता रहा, यहां तक कि इस कार्य मे ही उसकी सम्पत्ति भी समाप्त हो गई।। मृत्यु के समय तो उसकी निर्धनता और भी अधिक हो गई थी।

मृत्यु के कुछ समय पूर्व उसका यह विचार हो चला था कि पूंजीवाद पर राजनीतिक क्रांति के द्वारा विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, वरन उस पर विजय प्राप्त करने का एक मात्र उपाय जनता के चरित्र बल को बढ़ाना और उसमे पारस्परिक भाईचारे के व्यवहार को दृढ़ करना था। मृत्यु के समय उसकी अवस्था सत्तावन वर्ष की थी।

पिता की मृत्यु के कारण इस परिवार का पारिवारिक बन्धन टूट गया, जिससे सब भाई बहिन पृथक् २ होकर कार्यक्षेत्र मे जुट गये।

पिता की मृत्यु के पश्चात् मुसोलिनी 'अवन्ती' का संचालन करने लगा। उसका भाई आरनोल्डो औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करने

लगा और उस की बहिन ऐडवीजे (Edvige) रोमइत्रा प्रांत के प्रेमिल्क्वौरे (Premilcuore) नामक छोटे से स्थान मे अपने पति के साथ रहने को चली गई।

अब मुसोलिनी जी जान से 'अवन्ती' के प्रचार में ही जुट गया। उसका एक मात्र उद्देश्य अवन्ती की ग्राहकसंख्या, उसके प्रभाव तथा सम्मान को बढ़ाना था। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ मास के अन्दर ही 'अवन्ती' की ग्राहक संख्या एक लाख हो गई।

इस समय मुसोलिनी का अपने दल में प्रधान स्थान था; तौ भी वह दलबन्दी का उपासक नही था। उसने जनता मे दलबन्दी का प्रचार न कर सदा ही बलिदान, त्याग, पसीना तथा रक्त बहाने का आदर्श उपस्थित किया।

उसकी पत्नी

मुसोलिनी की पत्नी दोन्ना रखेले ग्वीदी (Donna Rachele Guidi) अत्यन्त मृदु स्वभाव वाली, बुद्धिमती तथा पति-परायणा महिला है। जीवन के प्रत्येक उतार चढ़ाव मे वह अत्यन्त शान्ति और सन्तोष के साथ मुसोलिनी का अनुगमन करती रही है। मुसोलिनी की कन्या एडा (Edda) इस समय घर के आनन्द का एक मात्र कारण थी। अतः अनेक प्रकार की विघ्न बाधाओं के होते हुए भी इस परिवार को किसी बात की विशेष चिन्ता न होती थी। रखेले से मुसोलिनी के इस समय पांच सन्तान हैं।

लीबिया युद्ध और मुसोलिनी

सन् १९१२ मे इटली और टर्की का युद्ध हुआ। इस युद्ध की घोषणा ६ अक्तूबर १९११ को की गई थी। इसमे इटली ने उसके उत्तर अफ्रीका के प्रांत *लीबिया (ट्रिपोली) को अपने राज्य मे मिला लिया। मुसोलिनी सोशिएलिस्ट होने के कारण इस युद्ध का विरोधी था। उसने अपने पत्र 'अवन्ती' मे इस युद्ध का विरोध करने के अतिरिक्त फोर्ली में युद्ध का प्रतिवाद करने के लिये हड़ताल कराई; जिससे उसको पांच माह जेल में रहना पड़ा। इस युद्ध मे इटली को विजय तो मिल गई, किन्तु यह विजय बड़ी महंगी थी। इस से उसको धन और जन दोनों की ही अपरिमित हानि उठानी पड़ी। इस युद्ध के कारण जनता पर निर्धनता के साथ २ अनेक प्रकार की आपत्तियां आई। जिनके कारण देश मे अनेक सार्व-जनिक समस्याए उत्पन्न हो गई। इटली वासियों के जीवन मे इस समय एक विशेष प्रकार की अशान्ति देखने मे आती थी। राजनीतिक बुद्धि का तो सर्वसाधारण मे इतना दिवाला पिट गया था कि प्रति सप्ताह एक विद्रोह हो जाया करता था। केवल ज्योलीटी (Giolitti) के ही मंत्रिकाल मे तैतिस विद्रोह देश मे हुए थे। इन विद्रोहों मे अनेक हताहत होते थे, जिससे सभी के हृदय पर आघात होता था। दैनिक कुलियों, पो घाटी के किसानों और दक्षिण के निवासियों सभी मे विद्रोह और दंगे होते थे।

---

*देखो पृष्ठ ६९

इस समय इटली के प्रान्तों मे एक दूसरे से प्रथक् हो जाने तक का आन्दोलन होने लगा था। जनता में ऐसी अशांति के होते हुए भी राजनीतिक दलों में अधिकार के लिए बराबर प्रतिस्पर्द्धा होती रहती थी।

किन्तु मुसोलिनी इस प्रकार की क्रांति का विरोधी था। वह कहता था कि यह क्राति नहीं वरन धांधली अथवा अराजकता है। उसकी सम्मति में अधिकारों को इस प्रकार की क्रांति से नही, वरन् आत्मत्याग और रक्त के बलिदान से प्राप्त किया जा सकता था। किन्तु इस समय इस प्रकार के विचार वाला कोई नेता नहीं था। इटली की दशा बराबर बिगड़ती ही गई। यहां तक कि सन् १९१४ भी आ पहुंचा।

तृतीय अध्याय

महायुद्ध

महायुद्ध का आरम्भ—जैसा कि अनेक राजनीतिज्ञों का विचार है महायुद्ध एकदम अचानक ही नहीं हो गया। महायुद्ध होने के पूरे लक्षण यूरोप के राजनीतिक क्षेत्र मे उपस्थित थे। इसका सूत्रपात १९०५ के रूस जापान युद्ध से हुआ था। १९११ का लीबिया युद्ध भी इसी की तयारी था। इसके पश्चात १९१२ तथा १९१३ के दो बाल्कन युद्धों ने तो यूरोप के राजनीतिज्ञों के ध्यान को पूरी ओर से ही अपनी ओर आकर्षित कर लिया। सरांश यह है कि उस समय सारे यूरोप के ऊपर युद्ध के बादल मंडला रहे थे। उस समय सारा यूरोप बारूदखाना बना हुआ था। आवश्यकता थी कही से चिंगारी लग जाने की। सो वह सर्विया मे लग ही गई।

२८ जून सन् १९१४ ई० को सर्विया के सीमान्त प्रदेश बोस्निया (आधुनिक यूगोस्लैविया के एक भाग) की राजधानी सेरायेवो (Serajevo) नामक नगर मे आस्ट्रिया के युवराज आर्कड्यूक फ्रासिस फर्डिनेंड की हत्या हो गई। इससे क्रुद्ध होकर आस्ट्रिया ने सर्विया के सम्मुख क्षतिपूर्ति रूप में ऐसी २ कठोर शर्तें उपस्थित की, जिनका पूरा होना असम्भवप्राय था। निदान २८ जुलाई १६१४ ई० को आस्ट्रिया ने सर्विया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। सर्विया की रूस के साथ इस प्रकार की सन्धि थी कि सर्विया के ऊपर आक्रमण होने की दशा में रूस उसकी रक्षा करे। अतः आस्ट्रिया के युद्ध घोषणा करने पर रूस उसकी रक्षा को आगे बढ़ा। रूस के आगे बढ़ने के कारण जर्मनी की सीमा युद्ध क्षेत्र बनती थी। अतः १ अगस्त को जर्मनी ने भी रूस के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। रूस की सर्विया के अतिरिक्त फ्रांस के साथ भी सहायता करने की सन्धि थी। अतः फ्रांस के युद्ध मे भाग लेने की निश्चित संभावना से जर्मनी ने तटस्थ राज्य बेल्जियम मे से उस पर हमला किया, जिससे ४ अगस्त को ग्रेट-ब्रिटेन ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इसके पश्चात् १२ अगस्त को बरतानिया ने आस्ट्रिया के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा कर दी। २३ अगस्त को जापान ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। ५ नवम्बर को टर्की भी जर्मनी और आस्ट्रिया की ओर से युद्ध मे आ कूदा। इस प्रकार आस्ट्रिया और सर्विया के युद्ध ने क्रमशः महायुद्ध का रूप धारण कर लिया।

इटली की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति

यह बतलाया जा चुका है कि इस समय मुसोलिनी 'अवन्ती' नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय सोशियलिस्ट दैनिक पत्र का सम्पादक था। सेरायेवो की दुर्घटना सुनते ही उसने अपनी राजनीतिक बुद्धिमत्ता से यूरोप के महायुद्ध की दलबन्दियो को एक दम भाप लिया। वह समझ गया कि यह दुर्घटना बारूदखाने मे लगी हुई चिंगारी है। यद्यपि इस घटना से यूरोप के सभी राजनीतिज्ञ चिंतित हो उठे, किन्तु इटली पर इस घटना का कोई विशेष प्रभाव नही पड़ा। उसको केवल उससे आगे के समाचार को जान लेने भर की उत्सुकता थी।

फ्रांसिस फर्डिनेंड जर्मनी के समान इटली का भी शत्रु था। वह इटली वालो को कुछ भी न गिनता था। इटलीवासियों के कष्ट की उसको लेश मात्र भी चिन्ता न थी। उनको तो वह केवल आस्ट्रिया के जुवे के नीचे देख कर अपने पुराने अधिकार को बनाये रखना चाहता था। साथ ही वह पोप की राजनीतिक सत्ता को भी फिर दृढ़ करना चाहता था। अतएव उसकी मृत्यु से इटली वासियों को लेशमात्र भी दुःख नही हुआ।

यद्यपि पोप तथा अन्य शान्तिप्रिय राष्ट्रों ने युद्ध को रोकने का पर्याप्त प्रयत्न किया, किन्तु महायुद्ध १ अगस्त १९१४ को आरम्भ हो ही गया।

इटली ने इस घटना से कुछ वर्ष पूर्व ही त्रिराष्ट्र गुट को दोबारा स्वीकार किया था। किन्तु उसका इस गुट मे इस प्रकार

सम्मिलित होना बिना सम्मान के विवाह करने के समान था। अतएव उसको युद्ध मे सम्मिलित होने की कोई उत्सुकता नहीं थी। वास्तव में उस सन्धि के अनुसार युद्ध करने के लिए इटली उसी अवस्था मे बाध्य था यदि गुट के किसी सदस्य पर कोई अन्य राष्ट्र आक्रमण करता। किन्तु यहां तो आस्ट्रिया स्वयं ही सर्विया पर आक्रमण कर रहा था।

मुसोलिनी का समाजवादियों से सम्बन्ध-विच्छेद

युद्ध आरम्भ होने पर जर्मनी ने इटली को अपने पक्ष में लाने अथवा कम से कम तटस्थ रहने की प्रेरणा करने के लिये इटली के जनमत पर प्रभाव डालना आरम्भ किया। किन्तु मुसोलिनी को यह अच्छा न लगा। उस समय उसका सम्बन्ध सोशिएलिस्ट पार्टी से था। इटली के सोशिएलिस्टों का अधिकांश इटली को तटस्थ रखना चाहता था। उनमे से कुछ जर्मनी के पक्षपाती भी थे। किन्तु मुसोलिनी को यह दोनों ही बातें पसन्द न थी। उसकी दृष्टि मे आस्ट्रिया की ओर से युद्ध करना उसके जुवे को इटली पर और दृढ़ करना था। अतएव उसने इस विचार का विरोध किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उसको 'अवन्ती' पत्र को छोड़ना पड़ा और अन्त मे वह सोशिएलिस्ट पार्टी से भी प्रथक् कर दिया गया। २८ जुलाई १९१४ को महायुद्ध आरम्भ होने के दिन से ६० दिन के अन्दर २ ही मुसोलिनी का सम्बन्ध अवन्ती और सोशिएलिस्ट पार्टी दोनों से ही टूट गया।

मुसोलिनी का नया पत्र

मुसोलिनी अब स्वतन्त्र हो गया था। किन्तु उसको अपने सिद्धान्त का प्रचार करने की अत्यन्त आवश्यकता प्रतीत हो रही थी। 'अवन्ती' की सम्पादकी छूट जाने से अब उसे एक ऐसे पत्र की आवश्यकता प्रतीत हुई, जिसकी नीति पूर्णतया उसके आधीन हो। मुसोलिनी ने अपने कुछ अनुयायी मित्रों को एकत्रित किया और एक युद्ध समिति (War Council) बनाई। कुछ मित्रो ने इस पार्टी के लिये मिलन नगर मे एक कमरे का प्रबन्ध कर दिया। वहां पास ही एक प्रेस भी था। उसका मालिक मुसोलिनी के पत्र को बहुत कम लागत पर छापने को तयार हो गया। अन्त में तारीख १५ नवम्बर १९१४ को मुसोलिनी के पत्र पोपोली डीटैलिआ (Popolo d' Italia) का प्रथम अंक निकला। वास्तव मे यह सामग्री ही वर्तमान फासिस्ट पार्टी की आधार शिला थी। मुसोलिनी के यह मित्र पार्टी के आरम्भिक सदस्य और उसका पत्र पार्टी के सिद्धान्तो का प्रचारक था। मुसोलिनी का यह सद्योजात शिशुपत्र शीघ्र ही बड़ा बलवान हो गया। इटली का प्रधान मन्त्री मुसोलिनी उसका अब भी डायरेक्टर है। मुसोलिनी ने इसके द्वारा सन् १९१४ से १९२२ तक प्रचार किया। उसकी वर्तमान उन्नति का श्रेय इसी पत्र को है।

किन्तु वह अपने भाग्य अथवा अपने देशवासियों के भाग्य से बराबर बचते ही गए। हम ऐबीसीनिया और स्पेन के निहत्थों पर बम वर्षा की जाने की निन्दा करते है, किन्तु अन्य देशों में उसी से मिलते जुलते दृश्य को शांति से देख लेते हैं। हम इस बात को एक दम भूल जाते हैं कि कौरव पांडवों के जैसा धर्म-युद्ध केवल भारत भूमि में भारतवासियों के द्वारा ही संभव है; यूरोपवासियों के द्वारा तो वह एकदम असम्भव है। पाठकों को यह स्मरण रखना चाहिये कि क्रूरता के विषय में हिटलर, मुसोलिनी अथवा स्टालिन सभी भाई २ हैं, उनमें कम कोई नहीं है। उन सभी के क्रोध से बचते रहने में ही कुशल है।

अस्तु, इस प्रकार समाजवाद और फ़ासिस्टवाद के अन्दर पक्षपात रहित होकर हमको यह सोचना चाहिये कि हमको अपनी भावी शासनपद्धति में किसको अपनाना है।

मेरी तुच्छ सम्मति में भारत-वसुन्धरा समाजवाद के लिए उप-युक्त स्थान नहीं है। साम्यवाद अथवा समाजवाद अभी अभ्यास-कोटि में हैं। स्वयं रूस में ही उसके रूप के पश्चात् रूप बदलते रहे हैं। फिर भला धर्मप्रधान भारत देश मे यह वर्गयुद्ध वाला आंदोलन किस प्रकार शांति स्थापित कर सकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि फ़ासिस्टवाद में भी डिक्टेटरशाही और सैनिकवाद यह दो तत्त्व अग्राह्य हैं। यदि फ़ासिस्टवाद में से इन दोनों तत्त्वों को प्रथक् कर दिया जावे तो शेष विशुद्ध राष्ट्रीय समाजवाद (National Socialism) बच रहता है।

इटली की तत्कालीन पार्लमेंट की महायुद्ध के सम्बन्ध में नीति

इस समय इटली की पार्लमेंट (चैम्बर आफ डेपुटीज़) में ज्योलीटी (Giolliti) का बोलबाला था। वह वहां का प्रधान मन्त्री था। इस मन्त्रिमण्डल में सलाण्ड्रा भी था। इसमें बैरन सोनिनो परराष्ट्र सचिव था। सोनिनो और सलण्ड्रा दोनों ने पवित्र स्वार्थ की नीति को अपनाया हुआ था। वह मित्र राष्ट्रों और जर्मनी दोनों से बातचीत कर रहे थे। वह वास्तव में ही इटली की सहायता का सौदा कर रहे थे कि जो इटली को अधिक दे उसी की ओर से युद्ध किया जावे। इस प्रकार सलाण्ड्रा की बातचीत दोनों दलों से जारी थी।

इस समय चैम्बर आफ डेपुटीज़ अत्यन्त निर्बल था। उसमें छै दल थे, जिनमे से किसी का भी बहुमत न था। दो तीन मिलकर मन्त्रिमण्डल चला रहे थे। उदार और अनुदार दोनों ही दल युद्ध मे भाग लेने के पक्षपाती थे। किन्तु वह निश्चय न कर सके थे कि युद्ध किस पक्ष की ओर से किया जावे। ज्योलीटी जर्मनी की ओर से युद्ध में भाग लेना चाहता था और उसके लिए उसने जर्मन प्रधानमन्त्री से बातचीत करनी आरम्भ भी कर दी थी। चैम्बर आफ डेपुटीज़ उसके हाथ की कठपुतली था। जो लोग मित्र राष्ट्रों के पक्ष में थे, वह खुलकर कुछ न कह सकते थे। उधर रोमन कैथोलिक और सोशिएलिस्ट (समाजवादी) लोग युद्ध के विरोधी थे। उन्होंने चैम्बर आफ डेपुटीज़ मे केवल तटस्थ

नीति ही न रख कर देश मे युद्ध विरोधी प्रचार भी आरम्भ कर दिया था, जैसा कि ऊपर दिखलाया जा चुका है। राष्ट्रवादी (Nationalists), लोकतन्त्रवादी (Democrats) तथा भविष्यवादी (Futurists) युद्ध के पक्ष मे थे। वह मित्र-राष्ट्रों का समर्थन करना चाहते थे। इसके लिए उन्होने देश मे चुपचाप प्रचार कार्य भी आरम्भ कर दिया था।

इस प्रकार दलों की डावाडोल परिस्थिति के कारण मन्त्रि-मण्डल निष्पक्ष हो गया। किन्तु ज्योलिटी जर्मनी से लेन देन के आधार पर सौदा पटाता ही रहा। इधर जर्मनी भी चैम्बर आफ डेपुटीज़ के अन्दर और वाहर अपने पक्ष मे प्रचार कर रहा था।

किन्तु लोकमत जर्मनी के पक्ष मे न था। उसका प्रथम कारण तो यह था कि इटली का सनातन शत्रु—आस्ट्रिया जर्मनी के साथ था, जिसके कब्ज़े मे इटली का उत्तरीय तथा पूर्वीय सीमान्त प्रदेश अभी तक चला आता था। यह बात चाहे इटालियन राजनीतिज्ञो को न खटकती हो, किन्तु जनता अभी भी आस्ट्रिया के अत्याचारो और धूर्तता को न भूली थी। दूसरा कारण यह था कि इटली का बाज़ार सस्ते जर्मन सामानों से भरा हुआ था। जर्मनी के कारण इटली का वाणिज्य व्यवसाय अपनी अन्तिम श्वास ले रहा था। जनता इसे समझती थी और इसका प्रतीकार करना चाहती थी। अतएव ज्योलिटी की जर्मन लोगो के साथ समझौते की नीति इटलीवासियो को पसंद न थी।

मुसोलिनी की नीति

इस समय मित्रराष्ट्रों की ओर से युद्ध के पक्ष में पहले-पहल मुसोलिनी ने ही विचार प्रगट किये थे। यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि इसी बात से रुष्ट होकर समाजवादी दल ने उसको अपने दल से प्रथक् कर दिया था। मुसोलिनी ने यह कहते हुये अपना त्याग पत्र दिया था, "आज आप मुझ पर विश्वासघात का दोष लगाकर मुझे इटली के सार्वजनिक क्षेत्र से निकाल रहे हैं। बहुत अच्छा, मै शान्ति पूर्वक प्रतिज्ञा करता हूँ कि मै अपने विचारों को प्रगट करता रहूँगा और कुछ ही वर्षों मे इटली का जन-समूह मेरी हर्षध्वनि करता हुआ मेरा अनुकरण करेगा; जब कि आप में न तो कुछ बोलने की शक्ति शेष रहेगी और न आपका कोई अनुसरण ही करेगा।"

आज संसार जानता है कि समय ने मुसोलिनी की भविष्य वाणी को अक्षरशः सत्य कर दिखलाया। 'पोपोलो डीटैलिया' में प्रकाशित हुए मुसोलिनी के प्रथम लेख ने ही इटली के लोक-मत को बहुत कुछ बदल दिया। वहां फ्रांस और इंलैण्ड की ओर से युद्ध करने का आन्दोलन होने लगा।

मुसोलिनी की सहायता उसके फासिस्ट मित्र कर रहे थे। उनमें क्रांतिकर भावनाएं कूट २ कर भरी हुई थीं। उनको इटली की ओर से महायुद्ध में हस्तक्षेप करने में विलम्ब सह्य नहीं था। वह लोग प्रायः विश्वविद्यालयों के नवयुवक तथा उन समाजवादियों मे से थे, जिनकी कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों पर से श्रद्धा उठ चुकी थी।

महायुद्ध में इटालियन स्वयं सेवक

इटली के युद्ध में भाग न लेने पर भी इन लोगों ने मुसोलिनी के सहयोग से एक स्वयंसेवक दल तैयार करके उसे युद्ध करने के लिए फ्रांस भेजा। इटली के लिये उत्तरी सिसली और नेपुल्स को विजय करने वाले प्रसिद्ध राष्ट्रीय वीर गारीबाल्डी के भतीजे और रैसीउनोटी गारीबाल्डी के दो पुत्र—ब्रूनो और कास्टैण्टे अरगोन (Argonne) के युद्ध मे मारे भी गये। इन दोनों वीरों का अन्त्येष्टि संस्कार रोम मे अत्यन्त समारोह पूर्वक किया गया, जिसका प्रभाव इटली भर मे हुआ। इटली के लाल कुर्ती वाले वीरो ने अपने बलिदान से एक वार इटली के नाम को फिर अमर कर दिया।

मित्रराष्ट्रों के पक्ष में प्रचार

इस समय भूमध्य सागर के पिछले झगड़ों तथा लीबिया युद्ध में फ्रांस के विरोध को भी एक दम भुला दिया गया।

उसी समय इटली के सुन्दर सुहावने प्रदेश मे गौरवगुण गान करने तथा उसकी वीरदावली गाने वाला प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि दनुनसियो क्षेत्र मे अवतीर्ण हुआ। वह अपनी लेखनी को थोड़े समय के लिये विश्राम देकर साजर्वनिक रंगमंच की ओर बढ़ा। उसकी वाणी मे अग्नि थी। उसने किसी की चिन्ता न करके खुले शब्दों मे इटली सरकार की दुरंगी नीति की आलोचना करनी आरम्भ करदी। उसने जनता से इटली की सुप्त नैतिक वृत्ति को जाग्रत

करने की अपील की। उसने ५ मई सन् १९१५ को जिनोआ के पास क्वार्टो डे माइले नामक स्थान पर एक अत्यन्त ओजस्वी भाषण दिया। उसने मित्रराष्ट्रों का समर्थन किया। क्वार्टो डे माइले वही स्थान है, जहां से गारीबाल्डी ने अपने सहस्रों वीर सैनिकों के साथ सिसली पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान किया था।

इस समय देश में नवजीवन का संचार हो गया था। ज्योलिटी का विरोध डट कर किया जाने लगा था। इटली के राजा ने भी विधान के अनुसार क़ैसर के व्यक्तिगत प्रतिनिधि को टका सा जवाब दे दिया था।

मिलन, रोम, पैडुआ, जेनोआ और नेपुल्स के आन्दोलन की गति को देख कर इटली के राजा हिज़ मैजेस्टी विक्टल एमानुएल तृतीय ने प्रधानमन्त्री ज्योलिटी से अस्तीफा ले लिया। इसके पश्चात् उन्होंने सलाण्ड्रा से नया मन्त्रिमंडल बनाने को कहा। मुसोलिनी और उसके दल ने इस घटना को अपनी विजय का श्रीगणेश समझा।

नया मन्त्रिमण्डल युद्ध का पक्षपाती था। अतएव ज्योलिटी के करे कराये पर पूरी तौर से पानी फिर गया।

लन्दन सन्धि

सन् १९१५ के आरम्भ से ही लन्दन मे मित्रराष्ट्रों और इटली के बीच समझौते की बातचीत आरम्भ हो गई थी। बहुत सोच-विचार के पश्चात् मित्रराष्ट्रों और इटली के बीच वह प्रसिद्ध सन्धिपत्र लिखा गया, जो लन्दन सन्धि (London Pact)

के नाम से प्रसिद्ध है। इस सन्धिपत्र पर ता० २६ अप्रैल १९१५ को इटली, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और रूस ने हस्ताक्षर किये थे। इस सन्धि के अनुसार इटली ने मित्रराष्ट्रों की ओर से महायुद्ध में अपनी पूरी शक्ति लगा देने का वचन दिया। इसके बदले में उस को वचन दिया गया कि उसको ट्रेनिटो का जिला, ब्रेनर घाटी (Brenner Pass) तक का दक्षिणी टाइरोल (Tyrol), ट्रिएस्टे (Trieste), गोरीजिया (Gorizia) और ग्रैडिस्का (Gradisca) के देश, ग्वारनेरो (Guarnero) तक का सम्पूर्ण इस्ट्रिआ (Istria) वोलोस्का (Vcolcsca) तथा इस्ट्रियन द्वीपसमूह सहित, अपनी वर्तमान सीमाओं सहित डलमशिया प्रॉत, एड्रियाटिक समुद्र के बहुत से द्वीप (लीसा सहित), वैलोना (Valona), डोडेकैनीज (Dodecanese) तथा दक्षिण पश्चिमी एशिया माइनर देने का वचन दिया गया था। इटली को हल्की शर्तों पर पांच करोड़ पौण्ड ऋण देने का वचन भी दिया गया था। इसमे इटली ने यह भी स्वीकार किया था कि फ्यूम (Fuime) सहित एक बड़ा इलाका क्रोटिआ, सर्विया और मांटिनिग्रो को दे दिया जावेगा।

इटली का महायुद्ध में भाग

इस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् इटली ने २४ मई १९१५ को आस्ट्रिया के विरुद्ध और २१ अगस्त को टर्की के विरुद्ध युद्ध घोषणा करदी। बल्गेरिया के विरुद्ध भी उसके कुछ सप्ताह पश्चात् ही युद्ध घोषणा करदी गई। किन्तु जर्मनी के विरुद्ध इटली ने २७ अगस्त १९१६ तक कोई युद्ध घोषणा नही की। इटली के

इतिहास में यह बड़ी आश्चर्य की बात है कि बिना चैम्बर आफ-डेपुटीज़ की आज्ञा के ही युद्ध घोषणा कर दी गई।

इन घोषणाओं से मुसोलिनी और उसके दल वालों को अत्यन्त हर्ष हुआ। इस छोटे से ग्रन्थ मे महायुद्ध की सम्पूर्ण घटनाओं का विवरण नहीं दिया जा सकता और न इटली की सेनाओं द्वारा किये हुए सब युद्धों का वर्णन ही किया जा सकता है; क्यों कि जिस विषय पर संसार की समस्त भाषाओं में पन्द्रह सहस्र पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हों, उसका वर्णन इस छोटे से ग्रन्थ मे किस प्रकार किया जा सकता है।

इटली की सेनाओं मे तो युद्ध करने का उत्साह पहिले ही भरा हुआ था। वह युद्ध की आज्ञा सुनते ही एक दम अपने पुराने शत्रु आस्ट्रिया पर चढ़ दौड़ीं। यद्यपि युद्ध में इटली के भाग लेने से मित्रराष्ट्रों को बड़ा लाभ था, किन्तु सर्विया इससे बहुत भयभीत हुआ; क्यों कि वह पहिले से ही एक विशाल सर्विया राज्य की (जो अब यूगोस्लैविया के रूप में बन चुका है) कामना कर रहा था। सर्विया तो इटली को डलमाशिया आदि देने के बजाय उन पर आस्ट्रिया का प्रभुत्व ही अधिक पसन्द करता, किन्तु इस समय वह लाचार था।

इटली की सेनाओं ने इटली-आस्ट्रियन सीमा पर ईजोसो (Isonzo) को अपना युद्धक्षेत्र बनाया। इटली की सेनाओं न इस मोर्चे पर इतने वेग से आक्रमण किया कि ता० २ जून १९१५ को आस्ट्रिया की सेनाओं को बुरी तरह से पराजित होना पड़ा।

आस्ट्रिया इस पराजय से बुरी तरह खीज गया। उसने जून और जुलाई १९१५ मे इस मोर्चे पर २२१ बैटालियन भेज कर कारसो (Caiso) की पहाड़ी पर मोर्चा जमाया। इटली की सेनाओं ने ६ जून से २२ जून तक शत्रु सेना पर ४१ आक्रमण और २३ जून से ७ जुलाई १९१५ तक ८६ भयंकर आक्रमण किये। इस युद्ध के कारण आस्ट्रिया को अपने रूसी मोर्चे की सेनाओं को कम करके इटली लाना पड़ा। इन युद्धों के लिये आस्ट्रिया को अपनी छै डिविजने रूसी मोर्चे से और आठ सर्विया के मोर्चे से हटा कर इटली के मोर्चे पर लानी पड़ी। इसी समय इटली ने टर्की तथा १८ अक्तूबर को बल्गेरिया के विरुद्ध भी युद्ध घोषणा करदी।

सर्विया के युद्ध न करने और शत्रु सेनाओ के ईजोसो मोर्चे पर जमे होने पर भी इटली की सेनाओं ने अक्तूबर १६१५ में तृतीय युद्ध आरम्भ कर दिया। यह युद्ध ऐल्प्स की पहाडियों मे था। इसमें मुसोलिनी भी सैनिक वेष में उपस्थित था। इसी युद्ध मे इटली की सेनाओं ने ८०० व्यक्तियों की हानि उठा कर भी सात वार आक्रमण किया। इसका परिणाम यह हुआ कि आस्ट्रिया की थर्ड हानवेड रेजीमेंट के ३१ अक्तूबर को एक सहस्र सैनिक धराशायी हो गए और नं० २० हंगेरियन सेना तो इतनी थक गई कि उसको वहां से पूरी तौर से बदल देना पड़ा।

ईजोंसो का चौथा युद्ध १० नवम्बर से २ दिसम्बर तक हुआ। इस युद्ध मे इटली की सेना ने सैबोटिनो (Sabotino) पर १५ बार,

पोडगोटा पर ४० बार और ओस्लैविया पर ३० बार आक्रमण किया।

कार्सो (Carso) का युद्ध भी कम भयानक नहीं था। उसमें नं० १७ आस्ट्रियन डिविज़न के १५ अक्तूबर से १५ नवम्बर १९१५ तक २५० अफसर और ११४०० सैनिक मारे गये। १७ नवम्बर को तो पूरी तयारी होने पर भी उस सेना में कुल साढ़े सात सहस्र सैनिक बचे थे।

जनवरी १९१६ मे फ्रांस के वर्दून नामक स्थान पर बड़ा भारी आक्रमण किया गया, जिससे फ्रेंच सेनापति मार्शल जाफर को इटालियन सेनापति जेनेरल कैडोरना से और सहायता मंगानी पड़ी। मार्च में इटली ने सैन माइकेल प्रदेश में आक्रमण किया। इटली की सेनाओं ने ११ मार्च से १५ मार्च तक भयंकर युद्ध किया, जिसमें आस्ट्रिया के साढ़े तीन सहस्र सैनिक मारे गये। सन् १९१६ मे आस्ट्रिया को बड़ी भारी हानि उठानी पड़ी। इटली ने सभी मोर्चों पर ऐसी वीरता का परिचय दिया, जिसकी उससे आशा नही की जा सकती थी। सन् १६ मे ही इटली ने गोरीज़िया नामक आस्ट्रियन प्रान्त को विजय किया। इस युद्ध के लिये जैनेरल कैडोरना ने अपने युद्ध विद्या मे कुशल तीन लाख इटालियन सैनिकों को ट्रेंटाइन मोर्चे से हटा कर ईजोंसो के मोर्चे पर डटा दिया, और आस्ट्रिया के गोरीज़िया (Gorizia) प्रान्त को जीत कर अपने राज्य मे मिला लिया। इस घटना से शत्रु सेना मे ऐसा आतंक छा गया कि उसको अपनी कई डिविज़नों को पूर्वी मोर्चे से

हटा कर वहां जर्मन सेना भेजनी पड़ी। इसके अतिरिक्त इसका प्रभाव सारे युद्ध पर ही बहुत बुरा पड़ा। इस विजय के कारण इटली का सम्मान बहुत अधिक बढ़ गया। इन युद्धों को ईजोंसो का सातवां, आठवां और नौवां युद्ध कहा जाता है।

कुछ माह के पश्चात् मई जून सन् १९१७ में ईजोंसो का दसवां युद्ध आरम्भ हुआ। यह युद्ध तोलमिनो (Tolmino) से समुद्र की लाइन तक हुआ।

इस बार इटली की सेनाएं ट्रिएस्टे (Tieste) में प्रवेश करना चाहती थी। उन्होंने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये २४, २५ और २६ मई को रात और दिन बराबर युद्ध किया। कार्सो प्लैटो पर तो अत्यन्त भयंकर युद्ध हुआ।

इधर नदी पार मांटे कुक (Monte kuk) पर बड़ा भारी युद्ध हो रहा था। जो पर्वतीय प्रदेश दो वर्ष तक अदम्य सिद्ध हुआ था उसका अब पतन होने वाला था। इटली की तोपों ने कुछ घंटों मे ही आस्ट्रिया के तारों और उसकी खाइयों को नष्ट कर दिया। इसके पश्चात् पैदल सेना ने आक्रमण किया। वह उस ढलुवां पहाड़ी पर सीधे चढ़ी चली गई। चोटी पर पहुंचने पर भयंकर मार काट हुई। इस समय पैदल पलटन और तोपखाने सभी युद्ध कर रहे थे। अन्त में शान्ति होने पर वहा पूरी शान्ति छा गई और शत्रु को पीठ दिखानी पड़ी।

इधर तो इटली के मोर्चे पर मित्रराष्ट्रों को विजय पर विजय मिलती जाती थी। किन्तु उधर रूसी मोर्चे पर शत्रु निर्बल पड़ते

किन्तु एक बात और भी मज़े की है । हम फासिज्म मे डिक्टेटरशाही और सैनिकवाद की निन्दा करते हैं, किन्तु यह दोनों तत्त्व साम्यवादी तथा पार्लमेंटवादी दोनों ही प्रकार के देशों में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान हैं। आज संसार की शास्त्रास्त्रों की होड़ में साम्यवादी रूस जर्मनी और इटली से भी आगे बढ़ कर सैनिकवाद का उपासक बना हुआ है। विश्वशान्ति के दैवदूत ब्रिटेन और अमेरिका भी आज इस दौड़ मे आगे निकल जाने-का उद्योग कर रहे हैं। रूस ने तो सारे संसार को फ़ासिस्टों फ़ासिस्ट-विरोधी दो विभागों मे बांट कर फासिस्ट-विरोधी सभी शक्तियों को एक ही स्थान में एकत्र करके पापुलर फ्रांट बनाने का आन्दोलन करना आरभ कर दिया है। भारतवर्ष में भी यह पापुलर फ्रांट का आन्दोलन बड़े भारी रूप मे चलाया जा रहा है। इस आन्दोलन के सूत्रधार यह भूल जाते है कि डिक्टेटरशाही और सैनिकवाद के विषय में साम्यवाद अथवा फ़ासिस्टवाद दोनों मे से कोई भी कम नहीं है। साम्यवादियो और फासिस्टों दोनों का ही यह विश्वास है कि "राजनीतिक समस्याएं वाद विवाद से तय नहीं की जा सकती, अल्पसंख्यकों को कोई संरक्षण नही मिलन चाहिये और बल की अपेक्षा तर्क से काम लेना मूर्खता है ।" इस समय साम्यवादी अथवा फासिस्ट सभी डिक्टेटर भूतपूर्व ज़ार सम्राटों अथवा पोप के समान निरंकुश सत्ताधारी हैं। सारांश यह है कि सैनिकवाद और डिक्टेटरशाही के विषय मे फासिस्टों और फासिस्ट-विरोधियों मे कोई अन्तर नही है।

जाते थे; क्यों कि आस्ट्रिया हंगैरी की सारी सेना उस मोर्चे को छोड़ कर इटली की ओर आ रही थी।

कुछ सप्ताह के पश्चात् ७ अगस्त से ईज़ोंसो का ग्यारहवां युद्ध आरंभ हुआ। इसमें शत्रु का व्यूह भेद कर बाइनसित्सा (Bainsi-zza) के सारे प्लैटो (ऊंची चौरस भूमि) पर कब्ज़ा कर लिया गया। इस बार आस्ट्रिया-हंगैरी की सेनाएं बहुत निराश हो गईं और उनकी सहायता के लिये जर्मन सेनाओं को बुलाया गया।

अब ईजोंसो के बारहवें युद्ध के लिये बहुत सी जमन सेना मैदान में आ गई; क्यों कि इस समय रूस में क्रान्ति हो कर १५ सितम्बर १९१७ को वहां प्रजातन्त्र की घोषणा की जा चुकी थी। इससे मित्रराष्ट्रों को बड़ी भारी हानि और शत्रु पक्ष को बड़ा लाभ हुआ। जर्मनी अपने रूसी मोर्चे से निश्चिन्त हो गया और युद्ध का प्रधान मोर्चा इटली का सीमान्त कापोरेटो (Caporetto) बन गया। यद्यपि इटली की थकी हुई सेनाएं आस्ट्रिया और जर्मनी की संयुक्त सेनाओं के वेग को न सम्भाल सकीं, किन्तु उन्होंने तौभी २४ अक्तूबर से १० नवम्बर तक बड़ी वीरता से युद्ध किया। बाइनसित्सा प्लैटो पर सैकिंड इटालिन सेना ने अपनी एक २ इंच भूमि की बड़ी वीरता से रक्षा की; किन्तु २४ अक्तूबर से उसको बुरी तरह पीछे हटना पड़ा। इसके पश्चात् थर्ड इटालियन सेना को भी पीठ दिखानी पड़ी। गलियों और सड़कों की अत्यन्त भयंकर मारकाट के पश्चात् तारीख २८ अक्तूबर को गोरीज़िया

का पतन हुआ। सायंकाल होने २ शत्रु ने पोडगोरा (Podgora) को भी फिर ले लिया। इस युद्ध में शत्रु को २३०० वन्दूकें और दो लाख कैदी मिले। किन्तु सेला नदी के किनारे पर तारीख ६ नवम्बर तक भी इटालियन पीछे नही हटे। ७ नवम्बर को आस्ट्रिया की सेना ने लाइवेंज़ा नदी के किनारे आक्रमण किया। किन्तु इटली की सेनाएं सभी घाटों पर मज़बूती से मोर्चे-बन्दी की हुई थी। उन्होने किसी घाट पर भी शत्रु को पार न उतरने दिया। पर्वतों पर भी इटालियनों ने अनेक स्थानों पर मज-बूत मोर्चेबन्दी की हुई थी। टालमेत्सो (Tolmezzo) के दक्षिण मे इटालियन ३६ वी डिविजन के अफसर की आधीनता मे कुछ सेना ने आस्ट्रिया की पहाड़ी सेनाओं और जर्मनी की ऐल्प्स पर्वत की सेनाओं के आक्रमणो को कई दिन तक रोके रखा। केवल ७ नवम्बर को इटली के तोपखाने ने आग उगलनी बंद की। बड़े भयंकर युद्ध के पश्चात उन कुछ सहस्र इटालियन वीरो ने शस्त्र रख दिये। इस पराजय का इटली भर मे बहुत बुरा प्रभाव पड़ा।

यद्यपि सन् १९१७ मे मित्रराष्ट्रो को अनेक पराजय स्वीकार करनी पड़ी, किन्तु इस वर्ष के अन्त तक उनको संयुक्त राज्य अमरीका की भी पूरी सहायता मिल गई।

जर्मनी की सब ओर युद्ध करने की नीति से तारीख ३ फ़र्वरी १९१७ को ही संयुक्त राज्य अमरीका ने उससे राज-नीतिक सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था। १२ मार्च को जिस

दिन रूस में क्रान्ति हुई थी, उसी दिन अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन ने अमरीके का व्यापारिक जहाजों को भी सशस्त्र करने की घोषणा की थी। इसके पश्चात् अमरीका की दोनों सभाओं से महायुद्ध मे सम्मिलित होने की स्वीकृति मांगी गई। इस प्रस्ताव को ता० ५ अप्रैल १९१७ को अमरीकन सीनेट ने ६ के विरुद्ध ८१ वोटों से और प्रतिनिधि सभा (House of Representative) ने ५० के विरुद्ध ३७३ वोटों से स्वीकार करके महायुद्ध मे भाग लेने का निश्चय किया। इसके परिणाम स्वरूप २६ जून को अमरीकन सेना का पहला दस्ता फ्रांस में आया। किन्तु अभी तक अमरीका का युद्ध जर्मनी के विरुद्ध ही था, जिससे इटली की सेनाओं को कोई लाभ नही पहुंचा। ७ दिसम्बर को संयुक्त राज्य अमरीका ने आस्ट्रिया-हंगरी के साथ भी युद्ध करने की घोषणा कर दी। इस प्रकार अब सभी मोर्चों पर फिर अत्यन्त भयानक युद्ध होने लगा।

सन् १९१८ मित्रराष्ट्रों की विजय का वर्ष था।

इटली की सेनाओं ने जनवरी १९१८ मे ही बड़ी भारी वीरता का परिचय दिया। अप्रैल मे दो इटालियन डिविज़नों को फ्रांस मे युद्ध करने को भेजा गया। इन सेनाओं ने बड़ी भारी वीरता का परिचय दिया।

जून के मध्य मे अब का सब से भंयकर युद्ध हुआ। इसको पिआवे का युद्ध कहते है। इसमे आस्ट्रिया-हंगैरी की ५४ डिविज़ने मुकाबले पर थीं। इटली के लिये यह युद्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण

था, क्योंकि पिआवे नदी की रक्षा पर ही वेनिस, वेरोना, और वाइसेंज़ा की रक्षा निर्भर थी। इस मौके पर फ्रांस और इंगलैण्ड की सेनाएं भी इटली की सहायता को आगई। अतः इधर ५० इटालियन डिविजन, तीन ब्रिटिश और दो फ्रेंच डिविजनें हो गई। इस युद्ध का प्रबन्ध आस्ट्रिया सम्राट् ने स्वय किया था। किन्तु आस्ट्रिया को इस युद्ध मे भी मुंहकी खानी पड़ी। सम्राट् निराश होकर विएना को लौट गया। २२ जून को आस्ट्रिया-हंगैरी की सेनाओं को वापिस आने की आज्ञा दी गई। इस युद्ध मे आस्ट्रिया-हंगैरी के अफ़सरों मे ७७३ मरे, २६८४ ज़ख्मी हुए और ५२४ खोएगए। उसके सैनिकों मे १७४७४ मरे, ८८५३९ ज़ख्मी हुए और ३९०४८ खोए गए। इस प्रकार इस युद्ध मे शत्रु पक्ष को कुल १४६०४२ मनुष्यों की हानि उठानी पड़ी। इस युद्ध मे इटली के अफसरों में ४१६ मरे, १३४३ घायल हुए और ११५३ खोए गए। उसके सैनिकों मे ७५८५ मरे, २७६१३ घायल हुये और ४६५०४ खोए गए। इस प्रकार इटली को कुल २४६१४ मनुष्यों की हानि उठानी पड़ी। ब्रिटिश सेना के अफ़सरों मे २६ मरे, ८४ घायल हुए और ११ खोए गए। उनके सैनिकों मे २४४ मरे, १०४० घायल हुए और ३५४ खोए गए। फ्रांस के अफ़सरों मे ४ मरे और १८ घायल हुए। उसके सैनिकों मे ६२ मरे, ४६३ घायल हुए और १५ खोए गए। इस प्रकार सिद्ध है कि पिआवे (Paive) का युद्ध इतिहास के सब से बड़े युद्धो में से था। इस पराजय

से जर्मनी और हिडनेबर्ग को बड़ी निराशा हुई। उनका आस्ट्रिया पर से भरोसा जाता रहा। इस युद्ध से आस्ट्रिया का प्रभाव इटली के ऊपर से पूरा उठ गया।

२५ अक्टूबर १६१८ को इटली और इंगलैण्ड की सेनाओं ने पिआवे (Paive) नदी को पार करके आस्ट्रिया को पूरी तौर से इटली मे से निकाल दिया। इस बार विटोरिओ वेनेटो (Vittorio Veneto) में बड़ा भयंकर युद्ध हुआ।

आस्ट्रिया और हंगैरी की सेनाओं ने २४, २५, २६, २७ और २८ अक्तूबर को अपनी रक्षा बडी वीरता से की। २४ से २८ तारीख तक एसोलोन पर्टिका और सोलारोला घाटियों मे चार दिन तक बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। जर्मन सेनापति के शब्दों में इस युद्ध से केवल आस्ट्रिया की ही पराजय नही हुई, वरन् सारा युद्ध ही समाप्त हो गया और आस्ट्रिया स्वयं भी नष्ट हो गया। इस युद्ध से जर्मनी भी वरबाद हो गया और उसका पतनकाल समीप आ गया। इस युद्ध में इटली को ३४ सहस्र, इंगलैण्ड को १५०० और फ्रांस को ५०० मनुष्यों की हानि उठानी पड़ी। युद्ध में शत्रु के पीठ दिखाने पर २९ अक्तूबर को इटली की सेनाओं ने बड़े वेग से आगे बढ़ कर सब मोर्चो पर अपना अधिकार कर लिया।

इटली की इस विजय से मित्रराष्ट्र शीतकाल का पांचवां वर्ष खाइयों मे व्यतीत करने से वच गए और जर्मनी को शीघ्र ही शस्त्र डालने को विवश होना पड़ा। इस प्रकार मित्रराष्ट्रों

को विजय दिलाने मे इटली का प्रमुख हाथ था । इटालियनों के इस युद्ध की उनके शत्रु आस्ट्रियन सेनापतियों ने भी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी ।

आस्ट्रिया पर इस युद्ध का ऐसा भयंकर प्रभाव पड़ा कि उसकी रीढ़ की हड्डी ही टूट गई और उसने पराजय के चार दिन के अन्दर ही तारीख ४ नवम्बर १९१८ को आत्म-समर्पण करके युद्ध बन्द कर दिया । इस प्रकार आस्ट्रिया द्वारा वर्षों तक पीड़ा पाए हुए इटली ने उससे अपना बदला व्याज समेत चुका लिया ।

चतुर्थ अध्याय

महायुद्ध में मुसोलिनी

महायुद्ध की घोषणा से मुसोलिनी को अपार हर्ष हुआ। उसको इस समय वास्तव मे विजय मिली थी। अब उसकी नसों में युद्ध मे भाग लेने के उत्साह से नवीन रक्त का संचार होने लगा। इसके अतिरिक्त वह अपने देशवासियों को दिखलाना चाहता था कि राजनीतिज्ञता केवल अखबारों के कालम काले करने और व्याख्यान मंचों पर व्याख्यान भाड़ने में ही नही, वरन् युद्ध भूमि में अपना शौर्य दिखलाने में भी है। मुसोलिनी ने युद्ध आरम्भ होते ही उसमे भर्ती होने का प्रार्थनापत्र भेजा, किन्तु उस को प्रतीक्षा करने को कहा गया। अन्त मे इटली के युद्ध आरम्भ करने के तीन माह बाद तारीख १ सितम्बर १९१५ को उसको भी बुलाया आ गया। उसको पहिले तो लम्बार्डि जिले मे ब्रेशिया (Brescia) स्थान पर भेजा गया, किन्तु फिर उसको शीघ्र ही भीषण

युद्धस्थल से ऐल्प्स् पर्वत पर भेज दिया गया। यहां उसको कई मास तक पहाड़ी खाइयो मे जीवन की कठिन परीक्षाएं देनी पड़ीं। यहां प्रथम मास में ही शीत, वर्षा, कीचड़ और भूख के कष्ट भोगने पड़े। किन्तु इन कष्टा से भी मुसोलिनी का युद्ध के लिये उत्साह कम न हुआ। उसको इटली के युद्ध मे भाग लेने का अव भी गर्व था।

मुसोलिनी की वीरता

आरंभ में मुसोलिनी को प्रधान कार्यालय का लेखक वनाये जाने को कहा गया। किन्तु उसने लेखक वनने से इन्कार कर दिया। उसके हृदय मे तो लोथो पर पांव धर २ कर युद्ध करने की उमंगे आ रही थी। अन्त में सेनाधिकारियों को उसकी इच्छा पूरी करनी ही पड़ी। युद्धस्थल में उसने वड़ी भारी वीरता का परिचय दिया। उसकी वीरता की प्रशंसा उसके सभी अधिकारी किया करते थे। वह कुछ माह मे ही कारपोरैल (Corporal) बना दिया गया।

अब उसको एक सप्ताह के लिये सैनिक पदाधिकार की शिक्षा के लिये भेजा गया, इसके पश्चात् वह फिर खाइयो मे भेज दिया गया, जहां उसको कई माह तक रहना पड़ा। यहां अत्यन्त परिश्रम करने के कारण उसको टाइफाएड (Typhoid) ज्वर हो गया, जिससे उसको सिविडेल (Cividale) के सैनिक अस्पताल मे भेज दिया गया। ज्वर दूर होने पर उसको स्वास्थ्यलाभ के लिये कुछ समय को फेररा (Ferrara) भेज दिया गया। इसके

पश्चात् उसको ऐलपस् पर्वत के ऊपर फिर तोपों और अग्नि वर्षा के वीच मृत्यु के दृश्य में भेज दिया गया।

मुसोलिनी सेक्शन १४४ मे था। अब इस सेना को कार्सो (Carso) पर आक्रमण करने की आज्ञा दी गई। मुसोलिनी को हाथ से बम के गोले फेंकने वालों मे रखा गया। वह बड़ा भीषण दृश्य था। प्रत्येक क्षण मृत्यु सामने खड़ी दिखलाई देती थी। कई २ बार वह लोग शत्रु से केवल पच्चीस तीस गज के फासले पर खड़े होकर ही युद्ध करते थे।

कुछ समय कष्ट भोगने के पश्चात् मुसोलिनी खाइयों के कष्टकर जीवन का अभ्यासी हो गया। अपने पत्र 'पोपोलो डीटैलिया' को वह यहां भी बड़ी उत्सुकता पूर्वक पढ़ा करता था। वह इस पत्र को यह कह कर कुछ अपने विश्वासी मित्रों के हाथ में दे आया था कि युद्ध का समर्थन अन्तिम क्षण तक किया जावे। इस विषय में अनेक बार उसने अपने मित्रों को युद्धस्थल से भी लिखा। किन्तु उसने युद्धस्थल के अपने सब भावों को पत्रो मे कभी नहीं लिखा, क्यों कि वह अपने को एक आज्ञाकारी सैनिक समझता था। खाइयों मे सैनिकों और अफसरों की मनोवृत्ति का अध्ययन करने में उसे बड़ा आनन्द आता था।

सैनिकों के प्रति उसके हृदय मे अत्यन्त सम्मान था। युद्ध के अनेक सैनिक इटली के युद्ध में सम्मिलित होने का हृदय से समर्थन नहीं करते थे। तो भी वह अपने अफसरों की प्रत्येक आज्ञा का पालन प्राणपन से करते थे। उनमे से अनेक अफसर

कालेजों और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी थे। नवीन इटली के शौर्य को प्रकट करते हुए मुसोलिनी को वह वड़े अच्छे जान पड़ते थे।

इटली में युद्ध विरोधी आन्दोलन

युद्धस्थल में इतना अधिक कार्य होने पर भी रोम के राजनीतिक क्षेत्र मे अब भी अशांति बनी हुई थी। पार्लियामेंटरी दल अपने पुराने स्वभाव के छोड़ने को अब भी तयार नही थे। युद्ध विरोधी लोग अब भी पूरे वेग के साथ आन्दोलन कर रहे थे। वह लोग सुगमता से हार मानने वाले नही थे। वह सेनाओ को पूरे वेग से युद्ध करने देना भी नही चाहते थे। सैनिकों के उत्साह को मन्द करने के लिए अनेक साधन काम मे लाये जा रहे थे।

किन्तु सैनिक लोग किसी आन्दोलन की चिन्ता किये विना बराबर वीरता पूर्वक युद्ध किये जाते थे। उन्होंने वड़ा भारी साहस दिखला कर सन् १९१६ मे ईजोसो के युद्ध मे ऐल्प्स् की दुर्गम पहाड़ियों मे विजय प्राप्त की। इस युद्ध में मुसोलिनी ने फिर अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया।

इन सब युद्धों मे मुसोलिनी अपने समाचार वराबर 'पोपोलो डीटैलिया' को भेजता रहता था, जिससे शान्ति की पुकार करने वाले युद्ध विरोधी समाजवादी यह न समझ लें कि मुसोलिनी युद्ध के भय से कही मुह छिपाये पड़ा है। वह युद्ध आरम्भ होने के कुछ समय के पश्चात् ही अपनी बरसालिएरी (Bersaglieri) नामक सेना का मैजर कारपोरैल बना दिया गया। इस पद पर वह फर्वरी १९१७ तक कार्य करते हुए बराबर वीरता दिखलाता

फासिस्टों और फ़ासिस्ट-विरोधियों की नीति में सब से बड़ा अन्तर यह है कि फ़ासिस्ट कूटराजनीति को पसन्द न कर स्पष्टवादिता से काम लेते हैं। वह अपनी आवश्यकता को स्पष्ट शब्दों मे रख कर अपनी सेना की ओर संकेत कर देते हैं, किन्तु उनके विरोधी शान्ति के ढोल पीट २ कर सैनिक तयारी किये जाते हैं। इसी लिये फ़ासिस्ट बदनाम हैं और उनको संसार की शान्ति का शत्रु समझा जाता है; जब कि उनके विरोधियों की सैनिकवृत्ति और डिक्टेटरशाही की उपेक्षा करके उनको शान्ति का देवदूत समझा जाता है।

भारतीय राजनीति के विद्यार्थियों को इन सब बातों पर सूक्ष्मदृष्टि से विचार करके भारत को किसी भी यूरोपीय सिद्धान्त के पीछे न बांध कर भारत की परिस्थिति के योग्य महात्मा गान्धी की सम्मति के अनुसार नवीन मार्ग खोजना चाहिये। यूरोपीय राजनीति अध्ययन की वस्तु है, अनुकरण की नहीं। उससे हम इतिहास और राजनीति में शिक्षा लेकर अपने देश में की जाने वाली गलतियों से बच सकते हैं। किन्तु राष्ट्र-निर्माण के रचनात्मक कार्य के लिये तो हमको सेगांव के सन्त के चरणों में बैठ कर ही आशीर्वाद प्राप्त करना होगा।

प्रस्तुत ग्रन्थ में मुसोलिनी के चरित्र का वर्णन करके हमारा हिटलर और मुसोलिनी दोनों के चरित्र को लिखने का संकल्प पूरा हो गया है। पाठक देखेंगे कि हिटलर और मुसोलिनी में अनेक बातों की समानता है—

रहा। समय २ पर वह अपने पत्र मे युद्ध मे दृढ़ बने रहने के लेख भी दिया करता था। उसको अन्त मे पूर्ण विजय की पूरी आशा थी। इस प्रकार उसको युद्धस्थल में अग्नि वर्षा से और देश मे युद्ध विरोधियों के साथ लेख वर्षा से युद्ध करना पड़ रहा था।

मुसोलिनी का घायल हो कर अस्पताल में आना

२२ फर्वरी १९१७ को मुसोलिनी के साथियों की खाई मे एक उनका ही बम का गोला फट गया। उस समय उस खाई मे मुसोलिनी सहित बीस सैनिक थे। वह सब के सब धूल और धुवें से भर गये। धातु के टुकड़ों ने उनके शरीर को छिन्न भिन्न कर डाला। उनमें से चार तो तुरन्त ही मर गए और शेष भयानक रूप से घायल हुए।

मुसोलिनी को शत्रु की खाइयों से कुछ मील की दूरी पर रौंशी (Ronchi) के अस्पताल में भेज दिया गया। डाक्टर पाइकाग्नोनी (Piccagnoni) तथा अन्य डाक्टरों ने उसकी अत्यन्त उत्साह पूर्वक चिकित्सा की। मुसोलिनी के घाव संगीन थे। उसके शरीर मे से बम के ४४ टुकड़े निकाले गए। केवल मांस ही नहीं कटा था, कई एक हड्डियां भी टूट गई थी। शरीर मे बड़े ज़ोर की पीड़ा हो रही थी। एक माह मे उसके सत्ताईस आपरेशन किये गए। उसने दो के अतिरिक्त शेष सभी को बिना नशा सूंघे हुए करा लिया।

मुसोलिनी इस अस्पताल मे बीमार पड़ा था कि भयंकर बम उस अस्पताल पर भी आकर पड़ा, जिससे रोगी के उस अस्पताल

का मध्यभाग टुकड़े २ हो गया। अस्पताल के सभी रोगी अस्पताल से रक्षा के स्थान पर चले गए, किन्तु मुसोलिनी की दशा इतनी खराब थी कि वह उठाने योग्य भी नही था। उस समय उसको उस अरक्षित दशा मे ही शत्रु की तोपों की आग के नीचे कई दिन तक रहना पड़ा। किन्तु शीघ्र ही उसके घाव भरने लगे और उसको चैन पड़ने लगा।

मुसोलिनी को बुलाने के तार पर तार आ रहे थे। एक वार तो स्वयं इटली के राजा ने ही उसको बुलाया। कुछ माह के पश्चात वह मिलन (Milan) नगर के एक सैनिक अस्पताल मे पहुचा दिया गया। माह अगस्त मे वह लाठियों के सहारे चलने योग्य हो गया। इस दशा में उसको कई माह तक चलना पडा।

मुसोलिनी का प्रचार युद्ध

अब वह अपने समाचार पत्र के कार्यालय में आकर युद्ध करने लगा। रूसी सेना के युद्धस्थल से हट जाने के कारण युद्ध का वेग इटली के मोर्चे पर अधिक हो गया था, जिससे इटली की सेनाओं को पीछे हटना पड़ा था। इटली की इस पराजय से युद्ध विरोधियो के आन्दोलन को अच्छी सहायता मिली। समाजवादी यह आन्दोलन कर रहे थे कि "सैनिकों को खाइयों मे से वापिस बुला लो"। इसी समय अक्तूबर १९१७ मे कापोरेटो (Caporetto) मे इटली की सेनाओ की भारी पराजय हुई।

इस समय देश के ऊपर भारी संकट आया हुआ हुआ था। किन्तु समाजवादी लोग अब भी युद्धस्थल छोड देने की रट लगाए

हुए थे। उनको यह ध्यान नहीं था कि इस दशा में पराजय स्वीकार करने से देश को शत्रुओं के हाथों सौंपना पड़ेगा। मुसोलिनी ने इस आन्दोलन का प्रबल विरोध करना आरंभ किया। उसने अपने पत्र द्वारा केन्द्रीय सरकार से इन आन्दोलनों का कठोरता से दमन करने की मांग उपस्थित की। उसने स्वयंसेवक सेना का संगठन करने, उत्तरी इटली में सैनिक शासन की घोषणा करने, सोशिएलिस्ट समाचार पत्रों का दमन करने और सैनिको की योग्य चिकित्सा करने की जोरदार मांग सरकार के सम्मुख उपस्थित की। इस मांग का अच्छा प्रभाव पड़ा और सरकार अपनी दब्बू नीति को छोड़ती हुई दिखलाई देने लगी।

युद्ध विरोधी आन्दोलन का भयंकर रूप

किन्तु समाजवादी लोग भी इस हद तक पहुंच गए थे कि सैनिकों को सरकार की आज्ञा का उल्लंघन करने की प्रेरणा करने लगे। सरकार भी विवश थी। यदि वह समाजवादियों का विरोध करती तो आन्दोलन खड़ा होने का भय था और समर्थन करने से न केवल मित्रराष्ट्रों के साथ विश्वासघात होता, वरन् इटली की राष्ट्रीयता की रक्षा भी न की जा सकती थी।

युद्धवादी इस समय फिर देश की सहायता के लिये कमर कस कर खड़े हो गए। उन लोगों ने समाजवादियो के विरुद्ध प्रचार आरम्भ कर दिया। उनकी बातों का उत्तर अखबारों, व्याख्यानों तथा कहीं कहीं लड़ाइयों तक से दिया जाने लगा। इस समय समाजवादियों और युद्धवादियों मे इतने युद्ध हुए

कि उनकी तालिका देना कठिन है। युद्धवादी एक ओर तो समाजवादियों के प्रचार कार्य का मुंहतोड उत्तर देते थे, दूसरी ओर वह सरकार को युद्धसामग्री तथा सेना के संगठन में सहायता देते और जनता की मनोवृत्ति को युद्ध के पक्ष मे करने का उद्योग करते थे।

किन्तु जब सन् १९१७ में इटली मे बोल्शेविकों की सफलता का समाचार पहुंचा तो अवस्था बहुत ही भयानक हो गई।

सेनाओं में युद्धविरोधी आन्दोलन

इटालियन समाजवादियों ने रूसी राज्यक्रान्ति का स्वागत किया। वह श्रमिकों द्वारा उसी प्रकार की राज्यक्रान्ति इटली मे कराने के उद्देश्य मे दुगने उत्साह से प्रयत्न करने मे लग गये। वह श्रमिकों तथा कृषको को रूसी राज्यक्रान्ति के नाम पर उभारने लगे। वह श्रमिकों और कृषकों को बतलाते थे कि उनकी यह पहिली विजय है और वह दिन दूर नहीं है जब समस्त संसार मे श्रमिको का लाल झण्डा फहराता मिलेगा और पूंजीपति लोग या तो अपमानित किये जावेंगे अथवा उनको केवल जीवन के भरण पोषण योग्य सामग्री देकर उनसे उनका शेष धन छीन लिया जावेगा। उन्होने सैनिक शिविरो तथा सीमान्त प्रदेश पर लड़ती हुई सेना की खाइयों को युद्धविरोधी साहित्य से भर कर सैनिकों का आह्वान किया कि वह भी इटली मे रूस के समान क्रान्ति करे। किन्तु युद्धवादी भी उनका डट कर विरोध करते रहे।

समाजवादियों और युद्धवादियों मे चक्के चलते, एक दूसरे पर आक्रमण होता और प्रायः गोली भी चल जाती थी। आये दिन गलियों और सड़कों पर दंगा होता, किन्तु न तो पुलिस ही कुछ हस्तक्षेप करती और न सरकार ही। सरकारी अधिकारियो ने उदासीनता की नीति ग्रहण कर ली थी। कभी २ दंगे इतना उग्र रूप धारण कर लेते थे कि शीघ्र ही गृहयुद्ध फूट निकलने की आशंका हो जाती थी। किन्तु यह स्थिति किसी प्रकार टलती ही गई।

इटली की विजय

इस प्रकार शीत ऋतु और सन् १९१७ निकल गया। सन् १९१८ की वसन्त ऋतु में पिआवे नदी के ऊपर भीषण मोर्चा लगा। इटालियन सैनिक प्राणों की बाज़ी लगा कर युद्ध करने लगे। जून में शत्रुओं के आक्रमण और भी भीषण होने लगे। पिआवे नदी के किनारे कई माह तक भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध की गणना संसार के सब से बड़े युद्धों मे की जाती है। अन्त मे जैसा कि पीछे लिखा जा चुका है २५ अक्तूबर को आस्ट्रिया-हंगैरी की ऐसी पराजय हुई कि इतिहास में उनका मान चित्र ही बदल गया। इटली की सेना ने शत्रुओं को भगा कर पिआवे नदी को पार कर ट्रिएस्टे (Trieste) पर पड़ाव डाला और ट्रेण्टो (Trento) पर अधिकार कर लिया।

इस विजय से सारे इटली में आनन्द छा गया। यह विजय सारी इटालियन जाति की विजय थी। इस बार एक सहस्र

वर्ष के पश्चात् इटली ने फिर अभिमान से अपने मस्तक को ऊंचा करके अपनी वीरता का परिचय संसार को दिया था। इस युद्ध से उसने भावी योरोप मे अपने लिये सम्मानपूर्ण स्थान बना लिया था। दान्ते के चौदहवी शताब्दी के स्वप्न के अनुसार ट्रेण्टो और ट्रिएस्टे अब इटली के भाग बन कर उसकी स्वाभाविक सीमा बन गये थे। इस समय सारे इटली मे विजय उत्सव मनाया गया। गिर्जाघरो मे घण्टे बजा कर हर्ष मनाया गया। युद्ध के सैनिक, युद्ध की विधवाएं और युद्ध के अनाथ तो हर्ष के मारे फूले न समाते थे। इस समय ट्रेण्टो और ट्रिएस्टे जीत लिये गए थे। फ्यूम भी आधा जीत लिया गया था और डलमाशिया का भाग्य उसके भाग्य के साथ बंधा हुआ था।

इस युद्ध में इटली के लगभग साढे बावन लाख सैनिकों ने युद्ध किया और उसको निम्नलिखित हानि उठानी पड़ी—

मृत	६, ५०,०००
अंगभंग	४, ५०,३००
घायल	१० लाख

यह निश्चय है कि बिना इटली के महायुद्ध मे सफलता मिलनी असम्भव थी। यदि इटली शत्रुओ को कार्सो (Carso) पर न रोक लेता तो फ्रास का मान चित्र आज कुछ और ही होता।

इस महायुद्ध में दोनो पक्ष की ओर से अपने २ वंश के

सब से अधिक शक्तिशाली ८० लाख नवयुवक मारे गए थे। इससे कही अधिक नवयुवक अंग भंग आदि कारणों से सदा के लिये अपाहिज तथा असमर्थ हो गए थे और इतनी ही संख्या मे भूख, कष्ट और रोग के कारण मर चुके थे। गिल्बर्ट मरे (Gilbert Murray) के अनुसार तो इस युद्ध के कारण अढ़ाई करोड़ व्यक्ति मरे थे। इस युद्ध के कारण विजयी और विजित सभी को संसार भर में अपार हानि उठानी पड़ी। इसी के कारण भारतवर्ष में भी इंफ्लुएंजा (युद्ध ज्वर) फैल गया, जिससे ६० लाख मनुष्य मर गए।

पांचवां अध्याय

महायुद्ध के बाद इटली की राजनीतिक दशा

युद्ध से लौटे हुए सैनिकों का अपमान—लौटते हुए विजयी सैनिक युद्धस्थल से बड़ी २ कल्पनाएं लेकर आ रहे थे। वह सोचते थे कि देश में जाने पर जनता उनका स्वागत प्राचीन रोमनो के समान करेगी तथा उनके अभिनन्दन में अनेक प्रकार के उत्सव होंगे। किन्तु यहां तो और ही दशा थी। यद्यपि भविष्यवादियो और राष्ट्रवादियो ने उनके सम्मान में स्वागत का प्रबन्ध किया था, किन्तु सभाज-वादी उनका पूर्ण बहिष्कार करने पर तुले हुए थे। समाजवादी उनका स्वागत देशद्रोही, खूनी, हत्यारे, लुटेरे और डाकू आदि सम्बोधनो से करने लगे। उनके ऊपर भीषण दोषारोपण किया गया कि युद्ध में भाग लेकर उन्होंने ऐसा गुरुतर अपराध किया है, जिसका प्रायश्चित उनके बहिष्कार तथा इटली में रूसी राज्यक्रान्ति के समान राज्यक्रान्ति करने से ही हो सकता था।

समाजवादी लोग युद्ध से लौटे हुए सैनिकों को पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों का साधन कह कर उन पर व्यङ्ग्य की बौछार करते थे। वह जिधर से निकल जाते, उन पर सडे अण्डे, बदबूदार शराब, चक्के और जूठे तथा गले फल आदि फेंके जाते थे। कुछ बोलने का साहस करते ही उन पर लाठियों से प्रहार किया जाता था। उस समय पिस्तौलें निकल आती, और सङ्गीनें चमक उठती थी। समाजवादियों और युद्ध वादियों मे भयंकर संघर्ष की सम्भावना अधिकाधिक होती जाती थी।

इस घटना का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। सैनिकों का मस्तक लज्जा से झुक गया। वह विजेता नही, किन्तु हत्यारे और चोर कह कर पुकारे जाते थे। समाजवादियों द्वारा उनका सामाजिक बहिष्कार किया जा रहा था। मुसोलिनी यद्यपि आरम्भ से ही इनसे अनेक प्रकार के मोर्चे ले रहा था, किन्तु इस समय उसने भविष्यवादियों और राष्ट्रवादियों का संगठन करके अपने सैनिक भाइयों को इस बुरी गति से बचाने का यत्न किया। तथापि कुछ समय के लिये तो उसका प्रयत्न भी नक़ारख़ाने मे तूती की आवाज़ के जैसा ही प्रमाणित हुआ।

समाजवादियों का क्रान्तिकर आन्दोलन

समाजवादियों ने सारे देश में अपने संगठन का जाल फैला दिया। प्रत्येक नगर, उपनगर तथा प्रान्त मे सभा-समितियां स्थापित की गई। सब में यही भावना कूट २ कर भरी गई कि इटली मे बहुत शीघ्र राज्यक्रान्ति होने वाली है। जनता के

उदासीन हृदयों मे उत्साह एवं जीवन का संचार हो उठा। वह लोग क्रान्ति का स्वप्न देखने लगे। प्रचलित शासन के विरुद्ध नारे लगने लगे। इटली के लिये यह समय बड़ा भयानक था। उसने अपने प्रारम्भिक जीवन के इतिहास से इस समय तक ऐसे बड़े उपद्रव का सामना नही किया था।

युद्ध के बाद मन्दी, सरकारी ऋण और बेकारी की समस्या इतनी जटिल हो गई थी कि समाजवादियों को सरकार के विरुद्ध प्रचार करने मे और भी सुभीता होने लगा। जनता समाजवादियों का अनुकरण इस लिए कर रही थी कि शायद देश तथा उनका सुधार समाजवादियो द्वारा ही हो।

मिलन की समाजवादी म्यूनिसिपैलिटी से एक विशेष मिशन विएना के भाइयो (?) की सहायता के लिये भेजा गया। ट्रिएस्टे मे समाजवादी पिटोनी (Pittoni) ने उस नगर के पुनः संगठन का कार्य आरम्भ किया, जिससे उसको इटली राज्य मे न मिलाया जा सके। समाजवादी लोग युद्ध का कोई लाभ इटली को नही पहुंचने देना चाहते थे।

इसी समय सरकार ने सैनिको की पलटनो को तोड़ना आरम्भ किया। उसके इस कार्य से परिस्थिति और भी जटिल हो गई। सरकार ने आर्थिक स्थिति के सुधार के लिये फौजी विभाग को तोड़ा था, किन्तु बेकार सैनिक भी सरकार के शत्रु बन गए। वह विरोधी पक्ष से मिल कर सरकार के ही नाश का उपाय सोचने लगे और समाजवादी दल मे सम्मिलित हो गए।

१. दोनो ही निर्धन कुलों में उत्पन्न हुए थे।
२. दोनों महायुद्ध में सामान्य सैनिक के रूप मे सम्मिलित हुए थे।
३ दोनों ही वरसाई की सन्धि के प्रबल विरोधी हैं।
४. दोनों का आन्दोलन वरसाई की सन्धि की प्रतिक्रिया है।
५. दोनों को ही शान्ति की अपेक्षा भुजाओं में अधिक विश्वास है।
६ दोनों के संकेत पर लाखों सैनिक आकर कट और मर सकते हैं।
७. दोनों ने ही अपने २ देश को छोटी स्थिति से उठा कर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया है।
८. साम्यवाद तथा कूटनीति से दोनों ही घृणा करते है।
९. दोनों अब तक बराबर उन्नति करते जाते है।
१० दोनों के ही राजनीतिक सिद्धान्त प्राय: एक से हैं।
११. दोनों ही रहन सहन और खानपान में सादे हैं।

इन दोनो महानुभावों मे इतनी बातें समान होने के अतिरिक्त कुछ अपनी २ विशेषताएं भी हैं।

हिटलर बालब्रह्मचारी है। उसके हृदय में स्त्री-प्रेम के लिये स्थान नहीं है; जब कि मुसोलिनी विवाहित है और उसके बाल-बच्चे भी हैं। गत वर्षों के अनुभव से स्पष्ट है कि हिटलर शस्त्र बिना उठाए केवल धमकी से ही काम बना लेता है, जब कि मुसोलिनी को प्राय: शस्त्र उठाना पड़ जाता है। जर्मनी के पास इटली की अपेक्षा विज्ञान और कच्चा माल अधिक है। राजनीतिज्ञों का कहना है कि मुसोलिनी गुरु है और हिटलर शिष्य

अनेक आवारे बदमाश तथा सरकारी कर्मचारियों से व्यक्तिगत द्वेष रखनेवाले भी समाजवादी दल में सम्मिलित हो गए। इस प्रकार यह दल बहुत ही हिंसात्मक निकम्मा, किन्तु मज़बूत हो गया। निर्वाचन मे इस दल को आशातीत सफलता मिली। किन्तु बिना विचारशील नेता के वह अपनी शक्ति का उपयोग न कर सका।

ऐसी दशा में तारीख २६ फर्वरी १६१९ को मिलन नगर मे समाजवादियों का एक बडा भारी जलूस निकाला गया। जलूस क्या था! महिलाओं, बच्चों, रूसियों, जर्मनों और आस्ट्रियनों का तूफ़ान था। इस जुलूस ने कई सभाएं कीं। जुलूसवाले युद्ध से भाग जाने वालों को क्षमा देने और भूमि के बटवारे के नारे लगा रहे थे।

इस जुलूस के सड़कों में आने पर मध्य श्रेणि वालों, दूकानदारों और होटलवालों ने शीघ्रता से अपने २ दरवाज़ों और खिड़कियों को बन्द कर लिया। इसी समय उनके इटली का एक राष्ट्रीय झण्डा देखने में आया। उन्होंने उसको फौरन उतार लिया। एक अध्यापिका से यह दृश्य न देखा गया। वह तुरन्त ही उसको बचाने के लिये अपने प्राणों की बाज़ी लगा कर भीड़ के सामने जा पहुंची। बाद मे इस स्त्री को इस वीरतापूर्ण कार्य के लिये स्वर्ण पदक दिया गया।

उस समय मुसोलिनी का पत्र 'पोपोलो डीटैलिया' इसी प्रकार के वादविवादों से भरा रहता था। उसके द्वार पर प्रति

दिन युद्ध होता था । अतएव दंगा न होने देने के लिये इस सड़क की रक्षा सदा ही पुलिस या पल्टन किया करती थी। इस के कार्यकर्ता लोग जब बाहिर निकलते थे तो उनकी भी रक्षा की जाती थी। इस पत्र के ऊपर सेन्सर भी बिठला दिया गया था। मुसोलिनी ने अगले दिन के पत्र मे इस जुलूस की वड़ी कड़ी आलोचना करते हुए युद्ध में प्राण देने वालों की प्रशंसा की। उसने घोषणा की कि इस प्रकार के सब कार्यों का विरोध करके युद्ध से वापिस आए हुओं के सम्मान की रक्षा की जावेगी ।

इसी समय पेरिस मे जर्मनी और मित्रराष्ट्रों मे सन्धि की वार्ता हो रही थी। देश की आन्तरिक परिस्थिति के बेकाबू होने से इटालियन प्रतिनिधिमंडल भी वहां अपने पक्ष का दृढ़ता से उपस्थित करने का साहस न कर सकता था।

फासिस्टों की प्रथम सभा

मुसोलिनी को इस दशा से वड़ी चिन्ता हुई। उसने इसका डट कर विरोध करने का पूर्ण निश्चय कर लिया। २३ मार्च १६१९ को मिलन मे उसने आन्दोलन द्वारा युद्ध करने का फासिस्ट कार्यक्रम प्रकाशित किया।

इटली के युद्ध-प्रेमी फासिस्टों की पहिली सभा मिलन नगर के एक हाल में तारीख २३ मार्च १९१८ को हुई। यह स्थान वहां के व्यापारियों तथा दुकानदारो द्वारा दिया गया था। हाल मे सभा करने की स्वीकृति बड़ी कठिनता से मिली।

'पोपोलो डीटैलिया' मे इस सभा के लिये खूब प्रचार किया

गया था। तौ भी उपस्थिति बहुत कम थी । दो दिन के वाद-विवाद के पश्चात् चव्वन व्यक्तियों ने फ़ासिस्ट कार्यक्रम पर हस्ताक्षर करके उन सिद्धान्तों को कार्यरूप मे परिणत करने की सहायता देने का वचन दिया। इन लोगों में पुराने युद्धवादी, निकाले हुए सैनिक अफ़सर तथा आर्डीटी (Arditi) नामक स्वयंसेवक थे। आर्डीटी स्वयंसेवक युद्ध में बहुत अधिक सहायता ही नहीं दिया करते थे, वरन् वह आगे बढ़ कर बड़ी वीरता से युद्ध भी किया करते थे। वह लोग हाथों मे बम और दांतों में छुरे लेकर मृत्यु की चिन्ता न करते हुए युद्ध के गीत गाते हुए भयानक से भयानक युद्ध में कूद पड़ते थे। इस आर्डीटी ऐसोसिएशन ने कई बार मुसोलिनी को अपना सरदार बनाया। यह दल महायुद्ध के समय मे ही बन गया था । मुसोलिनी अब भी आर्डीटी ऐसोसिएशन का सभापति है ।

इस आरम्भिक सभा में भाग लेने वालों के हृदय मे सच्ची लगन थी। वह कुछ भी मूल्य देकर विजय की रक्षा, मृतकों की पवित्र स्मृति की स्थापना और घायलों तथा सैनिकों का सम्मान करना चाहते थे। इस सभा ने तीन प्रस्ताव पास किये।

प्रथम प्रस्ताव से युद्ध में भाग लेने तथा हानि उठाने वालों को बधाई दी गई ।

द्वितीय प्रस्ताव द्वारा इटली को हानि पहुंचाने वाले किसी भी साम्राज्यवादी देश का विरोध करने का निश्चय करके इटली की स्वाभाविक सीमा ऐल्प्स् पर्वत तथा ऐड्रियाटिक समुद्र को बतला

कर फ्यूस (Fiume) और डलमाशिया को अपने अधिकार में करने का अधिकार सुरक्षित रखा गया।

तृतीय प्रस्ताव नवीन फासिस्ट दल के संगठन के सम्बन्ध में था। प्रत्येक बड़े नगर में 'पौपोलो डीटैलिया' के सम्वाददाता को दल के संगठन करने का अधिकार दिया गया। आरम्भिक व्यय मुसोलिनी ने 'पोपोलो डीटैलिया' के सीमित कोप से देने का वचन दिया। समस्त कार्य की देख रेख के लिये एक केन्द्रीय समिति बनादी गई।

उस समय इस मीटिंग को कोई महत्व नहीं दिया गया। यह किसी को भी विश्वास न था कि किसी समय यही मीटिंग इटली में 'नवराष्ट्रनिर्माण' के कार्य को पूर्ण करने का कारण बनेगी।

देश की दशा उस समय बड़ी खराब थी। राजनीतिक दंगे, झगड़े और हड़ताल इटली के प्रत्येक नगर की विशेषता बन गई थीं।

पेरिस की सन्धिवार्ता

इस समय आरलैंडो (Orlando) कौंसिल का सभापति था। वह इटली की ओर से वरसाई में शांति का वार्तालाप करके राष्ट्रसंघ की रूप रेखा में योग दे चुका था। किन्तु देश की आंतरिक स्थिति अच्छी न होने तथा फ्रेंच भाषा न जानने के कारण वहां वह इटली के स्वार्थों की रक्षा न कर सका। अन्त में वह वहां से निराश होकर चला आया और देश की आंतरिक दशा को सुधारने का यत्न करने लगा। यद्यपि आरलैण्डो के साथ वैरन एस.
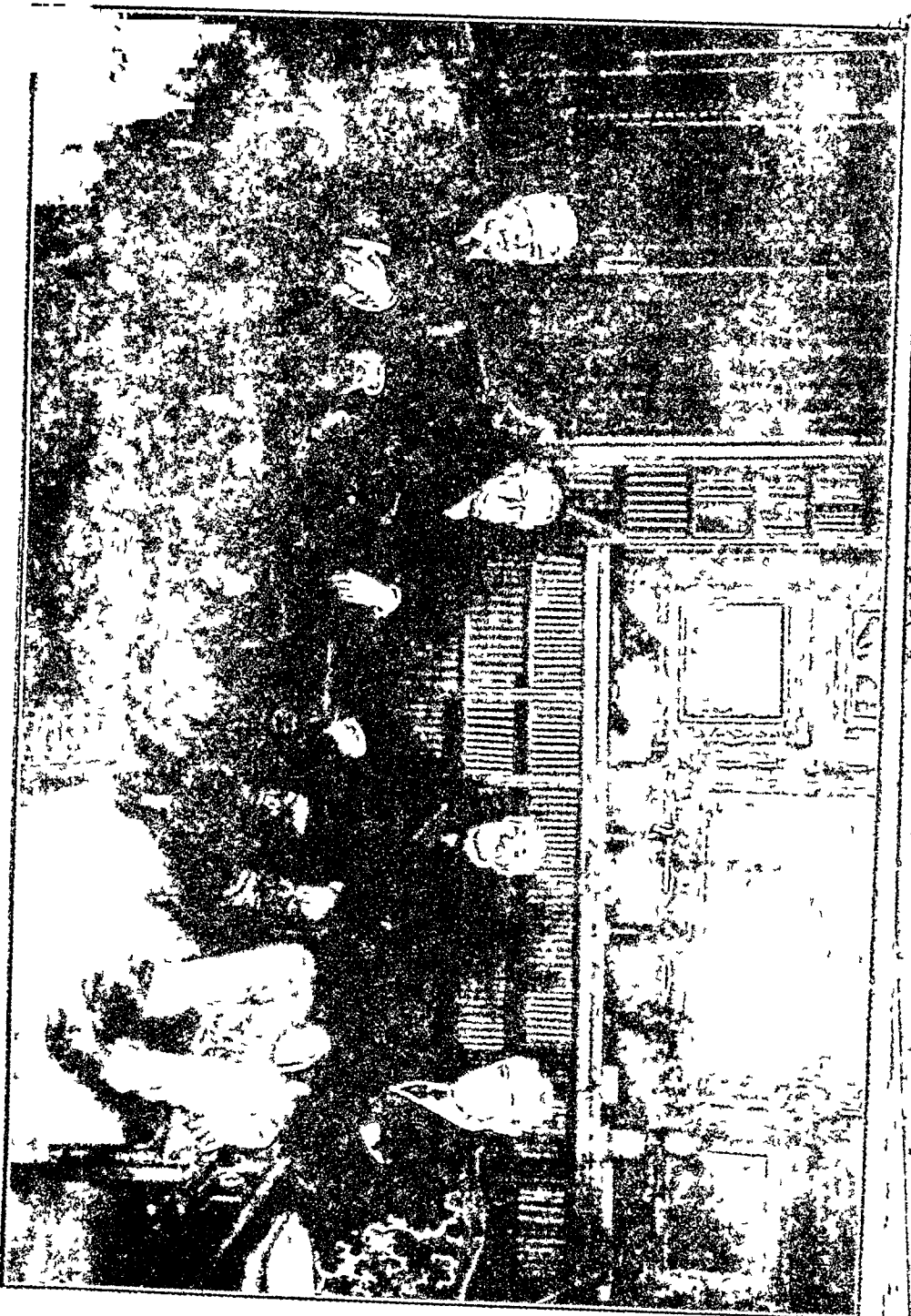
वारसाई की सन्धि के विधाता--

आरलैण्डो, लायडजार्ज, क्लेमेंशू, राष्ट्रपति विल्सन।

सोनिनो (Baron S Sonnino) भी था, किन्तु विल्सन की नीति इटली के विषय में निश्चित न होने से वरसाई में कुछ भी न हो सका। अन्त में २३ अप्रैल को इटली का प्रतिनिधि-मण्डल पेरिस से वापिस आ गया। ५ मई को यह लोग द्विविधा में पड़े हुए फिर वापिस चले गए। जून में चैम्बर आफ डेपूटीज़ के एक प्रस्ताव से आरलैण्डो के मंत्रीमण्डल का पतन हुआ। इसी बीच में जून में फ्रांसीसी मल्लाहों और इटली के सैनिकों में भारी झगड़ा हो गया।

आरलैंड के पश्चात् नीती (Nitti) का मन्त्रीमण्डल बना। किन्तु यह आरलैण्डो के मन्त्रीमण्डल से भी बुरा था। नीती समाजवादियों को प्रसन्न रखना चाहता था। उसने सार्वजनिक क्षमा प्रदान करके उनको संतुष्ट कर दिया। वह भावी इटालियन प्रजातन्त्र का सभापति बनने का स्वप्न देखा करता था। उस ने रोटी के मूल्य को निश्चित करने की आज्ञा राजा के हस्ताक्षरों से निकलवाई। इसके पश्चात् दूसरे ही दिन उसने उस आज्ञा को वापिस लेकर राजा के हस्ताक्षरों से ही दूसरी आज्ञा निकाली। इस समय चैम्बर मे समाजवादियों का बोल बाला था। अतः वह नीती को जिस प्रकार चाहते नचाते थे।

वरसाई की सन्धि

२८ जून १९१९ को वरसाई के दर्पणों के हाल में सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर हो गए। इटली की ओर से उस पर निम्न लिखित तीन व्यक्तियों ने हस्ताक्षर किये थे—

बैरन एस सोनिनो, डेपुटी,

मार्किस जी इम्पीरिएली, इटली के राजा के लन्दन राजदूत। और मिस्टर एस क्रेप्सी।

यद्यपि इस सन्धि के द्वारा इंगलैंड, फ्रांस और जापान आदि अनेक राष्ट्रों की मनोकामनाएं पूरी हो गई थी, किन्तु इससे इटली की आशाओं पर एक दम पानी फिर गया। इस सन्धिपत्र को देखते ही इटली के राष्ट्रवादियों की आंखें एक दम चढ़ गईं। युद्ध में जीता हुआ इटली इस सन्धि के द्वारा राजनीतिक वाजी हार गया। सन् १६१५के लन्दन पैक्ट द्वारा किये हुए वायदे एक दम कोने में पड़े रह गये। डलमाशिया और फ्यूम कुछ भी न मिले। डलमाशिया मे केवल उसकी राजधानी ज़ारा (Zara) को देकर ही टाल दिया गया। उपनिवेशों के सम्बन्ध मे तो इटली की बात भी न पूछी गई। यद्यपि नीती (Nitti) ने इटली की जनता को इस सन्धि के लाभ बताने का बहुत प्रयत्न किया, किन्तु उसकी किसी ने न सुनी। सारे देश मे असन्तोष छा गया।

४ नवम्बर १९१८ को इटली और आस्ट्रिया मे जो अस्थायी सन्धि हुई थी, उसके अनुसार आस्ट्रिया ने अपनी सेना केवल इटली से ही नहीं, वरन् उन सव प्रदेशों से भी हटा लिया था, जो लन्दन सन्धि के अनुसार इटली को मिलने वाले थे। इस प्रकार इटली का वोजेन (Bozen) और ट्रेंट (Trent) सहित दक्षिणी टाइरोल (Tyrol), गोरीजिआ (Gorizia), ट्रिएस्टे,
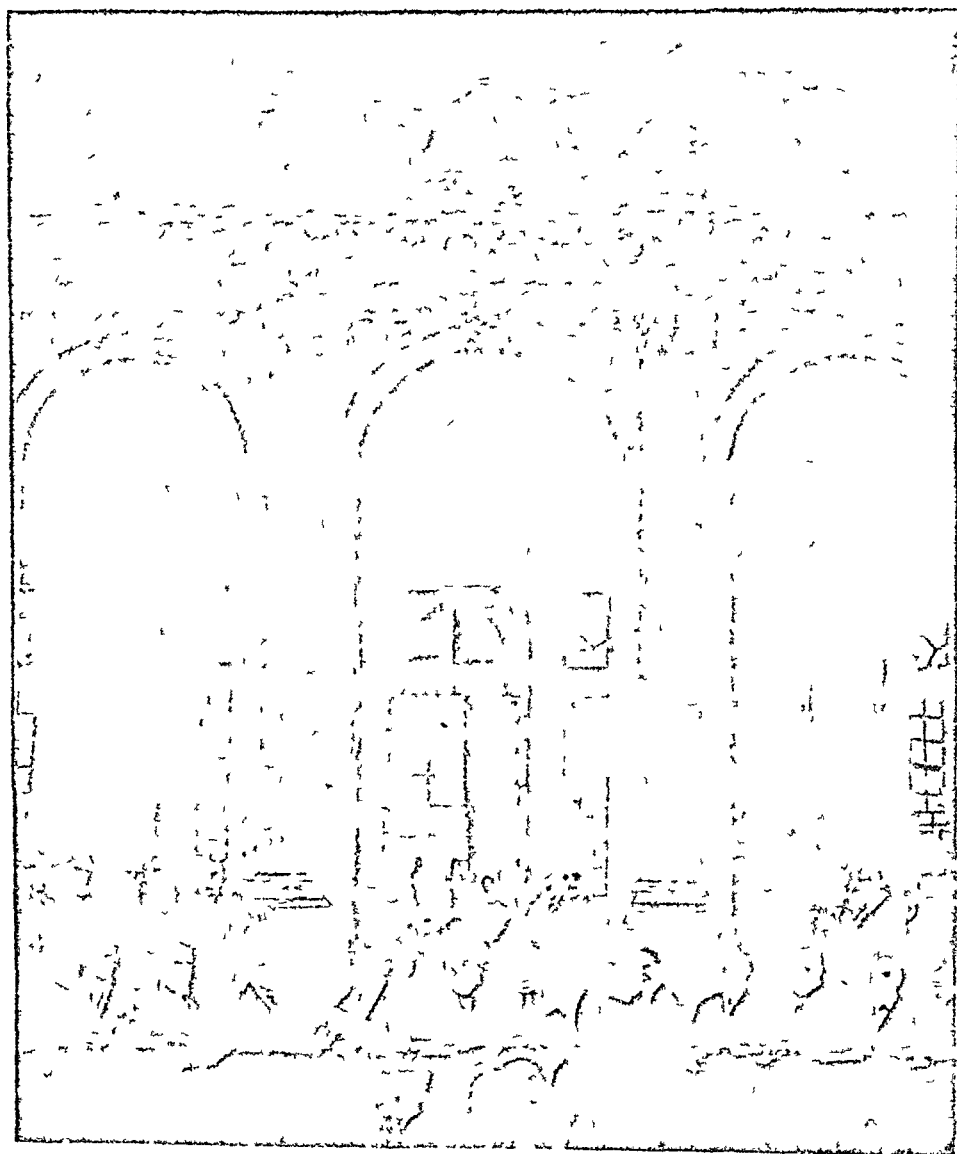
वारसाई की सन्धि

है। किन्तु आज विज्ञान और कोयले की बदौलत शिष्य गुरु जी से वाज़ी ले जाता हुआ दिखलाई दे रहा है। इत्यादि इत्यादि।

महापुरुषों का इस प्रकार का विश्लेषणात्मक वर्णन न केवल अध्ययन को गम्भीर करता है, वरन् इससे निर्णय-शक्ति को भी अच्छी सहायता मिलती है।

हमने इस ग्रंथ में फ़ासिस्टवाद को मुसोलिनी के शब्दों में रखते हुये भी अपने दृष्टिकोण को स्थान २ प्रगट कर दिया है। यद्यपि इसमें मुसोलिनी की प्रशंशा है, किन्तु उसके दुर्गुणों को भी छिपाने का यत्न नहीं किया गया है। यह अवश्य है कि साम्यवादियों के समान केवल छिद्रान्वेषण का ही कार्य नहीं किया गया है।

अब वर्तमान ग्रन्थ के विषय में दो शब्द और भी कह देने चाहियें। यह हिन्दी का दुर्भाग्य है कि उसमें विद्वानों की बहुत कमी है। हिन्दी के पाठक तथा लेखक प्राय: अल्प अध्ययन के बल पर ही हिन्दी जगत् पर शासन करना चाहते हैं। शोध (Research) की रूपरेखा का तो उनमें से अनेक को आभास तक नहीं है। इसीलिए वह हिन्दी के किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय ग्रंथ को देखते ही फौरन उसको अनुवाद कह डालते हैं। उनको यह पता नहीं है कि इस प्रकार के ग्रंथ गम्भीर शोध से तयार किये जाते हैं और इस शोध का आधार इंगलिश अथवा हिन्दी आदि सभी भाषाओं के ग्रन्थकारों के लिये एकसा होता है।

हिन्दी वालों की दृष्टि मे विदेशी भाषाओं में लिखना अथवा

इस्ट्रिया, ज़ारा और लूसिन सहित ऐड्रियाटिक समुद्र के अन्य द्वीपों पर उसी समय अधिकार हो गया था। किन्तु वरसाई की सन्धि परिषद् मे इटली ने फ्यूम पर भी अपना दावा प्रगट किया। फ्यूम के प्रश्न पर बड़ा भारी झगड़ा मचा और कांफ्रेस के भंग होने की नौबत आगई, क्योंकि फ्यूम के ऊपर इटली से भी अधिक नवीन यूगोस्लैविया राज्य की दृष्टि थी। यूगोस्लैविया के अतिरिक्त एक और बड़ी बाधा थी। अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन अपनी स्वर्णनिर्मित १४ शर्तो का राग अलाप रहे थे। सन् १९१५ की लन्दन सन्धि के तो वह एक दम विरोधी थे।

फ्यूम के प्रश्न ने वरसाई की सन्धि वार्ता को और भी जटिल बना दिया। भौगोलिक रूप से यूगोस्लैविया के लिये फ्यूम के अतिरिक्त और कोई अच्छा बन्दर नहीं था; किन्तु फ्यूम की आधे से अधिक जनसंख्या इटालियन है। इटली ने लन्दन पैक्ट के अनुसार फ्यूम को लेने पर इस कारण ज़ोर नही दिया कि उसको आशा थी कि फ्यूम को आत्म-निर्णय का अधिकार तो दिया ही जावेगा। उस समय जनमत इटली के पक्ष मे होगा। किन्तु यूगोस्लैविया ने इस विषय पर अपनी पूरी शक्ति लगा दी। इटली और यूगोस्लैविया मे पूर्वी ऐड्रियाटिक के प्रश्न को लेकर सन्धि परिषद् मे खूब झगड़ा रहा। यह झगड़ा सन्धि परिषद् के बहुत बाद तक भी चलता रहा।

फ्यूम के कठिन प्रश्न को मुसोलिनी सन् १९२४ तक न सुलझा सका। सन् १९२४ में रोम की सन्धि द्वारा कुछ इलाके

सहित फ्यूम इटली को दे दिया गया। किन्तु इसके आस पास के प्रदेश को इटली और यूगोस्लैविया ने आपस में बांट लिया। इससे पूर्व रैपैलो (Rapallo) की सन्धि द्वारा १२ नवम्बर सन् १६२० में ज़ारा (Zara) और उसके पास के नगर तथा चेर्सो, लूसिन, लैगोस्टा और पेलैगोनी के द्वीप इटली को, तथा लाइसा (Lissa) और शेष द्वीपों सहित डलमाशिया यूगोस्लैविया को दिये जा चुके थे।

रैपैलो सन्धि के ऊपर २ फरवरी सन् १९२१ को आचरण किया गया। इसके अनुसार इटली को ३३०० वर्ग मील भूमि और उसके लगभग ९ लाख १० हज़ार निवासी मिल गए।

सेंट जर्मेन की सन्धि

मित्रराष्ट्रों की जर्मनी के साथ सन्धि को वरसाई की सन्धि और आस्ट्रिया के साथ की हुई सन्धि को सेंट जर्मेन की सन्धि कहा जाता है। इस सन्धि के द्वारा इटली को ब्रेनर घाटी के दक्षिण का कुल टाइरोल प्रदेश साढ़े छैः लाख जनसंख्या सहित मिल गया। इस प्रकार उसको यूरोप मे कुल ७३०० वर्ग मील भूमि और १६ लाख निवासी मिल गए।

वरसाई की सन्धि के अनुसार पचास सहस्र जनसंख्या तथा आठ वर्ग मील क्षेत्रफल के फ्यूम नगर को राष्ट्रसंघ के आधीन एक स्वतन्त्र राज्य बना दिया गया।

दनुनसियो की फ़्यूम पर चढ़ाई

राष्ट्रीय कवि दनुनसियो (D' Annunzio) तो इस समाचार से एक दम जल भुन गया। उसने सरस्वती की पूजा को त्याग कर

पुनः दुर्गा का आह्वान किया। उसने अपने को विद्रोही घोषित किया। उसने सरकार को ललकारा कि यदि उसमें शक्ति हो तो उसे रोक ले। उसने इटालियन जाति तथा देश के मान और गौरव के नाम पर फिर सैनिकों और युवकों का आह्वान किया। उसने घोषित किया कि वह डलमारिया और फ्यूम पर चाहे जैसे भी हो इटली के राष्ट्रीय झण्डे को अवश्य फहरावेगा।

इस सैनिक कवि के आह्वान पर उत्साही युवक और सैनिक एक दम दौड़ पड़े। काली कमीज़ और हथियार धारण करके स्वयं सेवकों का दल दनुनसिओ के नेतृत्व में फ्यूम पर चढ़ दौड़ा। मित्रराष्ट्र अवाक् रह गए। इटली भी भौचक्का हो गया। दनुनसिओ ने ११ सितम्बर १९१९ को मुसोलिनी को एक पत्र द्वारा सूचित किया कि वह अगले दिन १२ सितम्बर को फ़्यूम पर आक्रमण करने वाला है। मुसोलिनी इस पत्र को पाकर प्रसन्नता से उछल पड़ा। उसने अपने पत्र पोपोलो डीटैलिया द्वारा देश से दनुनसिओ की सहायता करने की अपील की; क्योंकि इस समय फासिस्ट दल अपनी बाल्यावस्था मे था और उसमें वस्तुतः कुछ कर सकने योग्य शक्ति नही थी।

इस समय देश में फिर १९१५ जैसा दृश्य उपस्थित था। दनुनसिओ को धन और जन की पर्याप्त सहायता पहुंची। संसार भर के प्रवासी इटालियनों तक ने उसकी सहायता को बहुत सा धन भेजा। फ्यूम के इटालियन नागरिक भी अपनी शक्ति भर सहा-

यता करते थे। नगर के द्वार पर बड़ा भयानक युद्ध हुआ। इसमे कवि ने अद्भुत वीरता दिखलाई।

इस समय प्रधान मन्त्री नीती ने इस कार्य का महान् विरोध किया। उसने साम्यवादियों तथा युद्धविरोधियों से दनुनसिओ के विरुद्ध सड़कों मे प्रदर्शन करने को कहा। उसने यूगोस्लैविया के मन्त्री की सम्मति के अनुसार पर्याप्त दमन किया, किन्तु कुछ वीर नवयुवकों के सामने उसकी एक न चली। उसने फ्यूम के आक्रमण का विरोध प्रत्येक संभव उपाय से किया। सैनिकों को भगोड़ा घोपित किया गया। नगर पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इस समय पार्लमेंट विसर्जित कर दी गई और नये निर्वाचन के लिए १६ नवम्बर १९१९ का दिन नियत किया गया।

सन् १९१९ का निर्वाचन

इस समय सब दल अपना २ प्रचार करने लगे। मुसोलिनी ने एक निर्वाचन कमैटी बना कर संगठित रूप से काम करना आरम्भ किया। इस समय फासिस्ट पार्टी के सिद्धान्तों का निर्वाचकों मे व्यापक प्रचार करके उन्हे फ़ासिस्ट पार्टी को वोट देने के लिए कहा गया। किन्तु यह सब होने पर भी ता०१६ के निर्वाचन में फासिस्ट पार्टी को नाम मात्र की सफलता भी न मिली। स्वयं मुसोलिनी तक को पर्याप्त वोट न मिले। निर्वाचन में उनके केवल तीस सदस्य सफल हो सके। समाजवादी पत्रों ने इस घटना को मुसोलिनी की राजनीतिक मृत्यु कहा।

इतना ही नही उन्होंने मुसोलिनी के शव का नियमित जुलूस निकाल दिया। उस जुलूस में जलते हुये लैंप भी थे।

इस निर्वाचन में समाजवादियों को १५३, पापुलर या कैथोलिक पार्टी को १०१ तथा फासिस्टों अथवा युद्धवादियों को कुल तीस स्थान मिले। समाजवादियों का कार्यक्रम रूस की तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय के समान क्रान्तिकारी था। वह पूरी तौर से मास्को के कार्यक्रम पर चलते थे। उनका उद्देश्य पूंजीवाद को पूर्णतया नष्ट करना और रूस के जैसे प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना करना था। कैथोलिक लोग यद्यपि सामान्य रूप से समाजवादियों के विरोधी थे, किन्तु उनका सिद्धान्त तथा कार्यक्रम भी समाजवादियों से ही मिलता जुलता था। यह सभी उग्रवादी थे। पार्लमेंट के शेष सदस्यों मे इतने अधिक दल थे कि वह मिल कर कोई संगठित आन्दोलन न कर सकते थे। यह निश्चय था कि इस प्रकार की निर्बल पार्लमेंट का मन्त्रीमण्डल भी निर्बल ही होता।

मुसोलिनी की गिरफ़्तारी

समाजवादियों ने अब प्रत्येक विभाग पर स्वयं कब्जा करने की तैयारी की। उन्होंने मिलन की एक तीस सहस्र व्यक्तियों की सभा में म्यूनीसिपल भवन पर लाल झण्डा लगाने की मांग उपस्थित की। उस समय सबकी एक सी ही दशा थी। केवल कुछ मुट्ठी भर फासिस्ट, आर्डीटी और फ्यूम वाले निष्फल विरोध कर रहे थे। उसी समय एक बम फेंका गया, जिससे कुछ मरे और कुछ घायल हुए। इसका दोष मुसोलिनी पर लगाया गया और एक

डेपूडेशन के द्वारा उसको गिरफ्तार करने की मांग मिलन के गर्वनर से की गई। मुसोलिनी को एक दिन हवालात मे रख कर छोड दिया गया।

निर्वाचन की इस दुर्घटना से फासिस्टों का केन्द्रीय दल भी टूट गया था। उनमे से अनेक गिरफ्तार हुए और अनेक भय के मारे गुप्त रूप से रहने लगे। धीरे २ परिस्थिति संभल गई। मुसोलिनी अपने पत्र पोपोलो डीटैलिया को चलाने लगा।

समाजवादियों की इस विजय से उदारदल वाले और राष्ट्रवादी (Democrats) लोग बिल्कुल नष्ट हो गए। मुसोलिनी के पत्र के ग्राहक बहुत कम हो गये। उस पर प्रतिदिन सैंसर बिठलाया जाता था। किन्तु इन आपत्तियों को सह कर भी मुसोलिनी उसको निकालता ही रहा। इधर दनुनसिओ (D' Annunzio) अभी तक फ्यूम में ही डटा हुआ था। समाजवादियों का व्यवहार मुसोलिनी के साथ इतना बुरा था कि एक दिन ता डाकखाने के एक समाजवादी क्लर्क ने उसको न जानने का वहाना बना कर मनीआर्डर देने के लिये बहुत हैरान किया।

समाजवादी लोग निर्वाचन के परिणाम से फूले न समाते थे। अतएव जब इटली के राजा इस इक्कीसवी पार्लमेंट के उद्घाटन का भाषण देने के लिये आये तो उन्होंने ज़बर्दस्त प्रदर्शन किया। राजा के भाषण मे भी कोई विशेष बात न थी। फ्यूम का तो उसमे उल्लेख तक न था।

उस पार्लमेंट के प्रथम तीन माह में ही नीती के मंत्रीमण्डल का तीन बार पतन हुआ। वह मरता था और फिर जी उठता था।

मुसोलिनी द्वारा फ़ासिज़्म का प्रचार

दनुनसिओ अब भी आर्थिक प्रतिबन्ध का मुकाबला कर रहा था। इस समय मुसोलिनी ने बचे खुचे फासिस्टों को सगठित किया। बड़ी कठिनता से फ्लोरेंस मे एक सभा की गई, किन्तु इस सभा में भी बड़ी २ बाधाएं पहुंचाइ गइे। इस सभा के होने के पूर्व मुसोलिनी हवाई जहाज़ मे बैठ कर फ्यूम गया हुआ था। यहां उसकी दनुनसिओ से खूब जी भर कर बातें हुई। फ्यूम से वह गाड़ी मे बैठ कर सीधा फ्लोरेस आया। यहां उसको उस सभा का सभापति पद ग्रहण करना था। यह सभा बड़ी सफल हुई। इसके अंत मे सब लोग फासिस्ट भाव धारण करके घर गये।

यहां से मुसोलिनी मोटर में बैठकर रोमोइञा (Romogna) के लिये चला। इस समय उसके मोटर को महायुद्ध का प्रसिद्ध उड़ाका गुइडो पैकैनी (Guido Pancani) चला रहा था। उसी मोटर में पैकैनी का बहनोई गैस्टन गैलवनी (Ganstone-Galvani) और बोलोइञा के रेल्वे कारखाने के लीएड्रो आरपीनैटी (Leandro Arpinati) भी थे। मुसोलिनी मार्ग में फ़ाएंज़ा (Faenza) नामक स्थान पर रुक कर कुछ अपने मित्रों से मिला। इसके पश्चात् जब वह आगे चले तो मोटर पूरी रफ्तार से छोड़ दी गई। इस समय मोटर एक रेल्वे दर्वाजे से बड़े

जोर से टकरा गई। इस दुर्घटना से उसके सभी यात्री खिलौने के समान उछल २ कर दूर जा गिरे। इनमे मुसोलिनी को चोट नही लगी। आरपीनैटी को भी कम चोट लगी थी। किन्तु शेष दो के बड़ी भारी चोट आई। बड़ी कठिनता से सहायता मिल सकी। घायलो को मोटर मे डालकर उसे बैल गाड़ी मे बाध कर फ़ाएंज़ा के अस्पताल मे लाया गया। रोगियो को यथा शक्ति सहायता देकर मुसोलिनी बोलाइञा (Bologna) चला गया।

निर्वाचन के पश्चात् राजनीतिक दलो ने मुसोलिनी से समझौता करना चाहा; किन्तु उसने साफ इन्कार कर दिया। इस घटना से उसके समीपवर्ती भी उससे कुछ अप्रसन्न हो गए। यहां तक कि उसके दो उपसंपादको तक ने उससे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। इस समय मुसोलिनी के व्यक्तिगत छिद्र खोजे जाने लगे। सैनिकों और पुलिस को रिश्वत दे दे कर उसके पीछे लगाया गया। कुछ गुप्तचर भी छोड़े गए। किन्तु इन सबका कुछ परिणाम न हुआ। मुसोलिनी का चरित्र अत्यन्त निर्मल तथा शुद्ध था। उसमे दोष न मिल सका।

सन् १९२० के आरम्भ में इटली की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति बहुत पेचीली थी। एक ओर तो पेरिस मे अब भी राजनीतिक दांव-पेंच चल रहे थे। उधर डलमाशिया के घाव से अब भी रक्त बह रहा था और उस पर भी दनुनसिओ फ्यूम में था। यद्यपि समाजवादियों को विजय मिल गई थी, किन्तु वह प्रतिदिन अपनी

अयोग्यता का प्रमाण देते जाते थे। मन्त्रीमण्डल बड़ी बुरी तरह से अपने अस्तित्व को बनाए हुए था।

हड़तालों का तांता

जनवरी में एक रेलवे हड़ताल की सम्भावना दिखलाई देने लगी। इसके पश्चात् एक सप्ताह तक डाकखाने और टेलीफोन के कर्मचारियों ने हड़ताल की। इससे केवल नागरिकों के कार्यों में ही बाधा न पड़ी, वरन् राज्य का पत्रव्यवहार भी रुक गया। समाजवादी पत्र अवन्ती (जिसका मुसोलिनी भी कभी सम्पादक था) ने डाकखाने, तार और टेलीफोन को आधुनिक भोग-विलास बतलाया। वास्तव में हड़तालों का उद्देश्य धीरे २ इटली में सोवियट शासन की स्थापना करना था। मुसोलिनी ने अपने १५ जनवरी १९२० के लेख मे इसका तीव्र विरोध किया। उसने लिखा कि पेरिस मे शान्ति के वार्तालाप के समय हड़ताल कदापि नहीं की जानी चाहिये थी। कम-से-कम नीती के पेरिस से वापिस आने के लिए दो सप्ताह तो ठहरना था।

यद्यपि २१ तारीख को डाकखानों और तारघरों की हड़ताल खुल गई, किन्तु कर्मचारियों ने तारीख १६ से हड़ताल कर दी। यह हड़ताल बिल्कुल व्यर्थ थी।

इस समय विरोध बहुत अधिक बढ़ गया था। जनता के अनेक व्यक्तियों ने हड़ताल का विरोध किया। कुछ समाजवादी भी इससे भयभीत थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि उनका हड़ताली नेताओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। मुसोलिनी ने ता० २१ जनवरी

के पोपोलो डीटैलिया में कुछ समाजवादियों के इस कार्य को असामयिक बतलाया।

नीती का मन्त्रीमण्डल

रेलवे की हड़ताल २६ जनवरी तक रही। इस बीच मे समझौते की बराबर बातचीत होती रही। इस समय यह निश्चय किया गया कि फ्यूम के पीड़ित निवासियों को मिलन लाया जावे। आर्थिक प्रतिबन्ध के कारण वह बड़ा भारी कष्ट पा रहे थे। फासिस्ट लोगों की इस अपील पर सारे देश मे प्रसन्नता प्रगट की गई। इन लोगों का प्रत्येक स्टेशन पर स्वागत किया गया।

इसी समय पेरिस मे अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन फ्यूम और जारा को स्वतंत्र नगर बनाकर उसको राष्ट्रसघ की आधीनता मे लाने का उद्योग कर रहे थे, किन्तु नीती ने इस अवसर पर तारीख ७ फर्वरी को चैम्बर के अपने भाषण में स्लैव लोगों के साथ इस प्रश्न पर समवेदना प्रगट की।

मुसोलिनी ने अगले दिन अपने पत्र में इस भाषण की बड़ी कड़ी अलोचना की। उसमें पेरिस के वार्तालाप का संक्षिप्त इतिहास देकर अन्त मे यह लिखा गया था—

"तथ्य यह है कि नीती फिर वापिस जाने की तयारी कर रहा है। पेरिस वह अपना कमीज़ देने जाया करता है। हमारा कैजोइया (दनुनसिओ उसका घृणा पूर्वक यही नाम लिया करता था) अड़ियल यूगोस्लैविया वालों के सामने रोने, झींकने और त्याग करने के अतिरिक्त और कुछ नही जानता। उसके

विदेशों मे हो आना ही मौलिकता है। उनको पता नही कि भारत मे रहने वाले अधिकांश यूरोपवासी भी राजनीति के उन गम्भीर तत्वों से अपरिचित हैं, जिनका इस ग्रंथ मे वर्णन किया गया है। ऐसे उत्तरदायित्वशून्य समालोचकों तथा पाठकों के लिये ही इस ग्रंथ के अन्त मे उस सामग्री का कुछ आभास दिया गया है, जिसके आधार पर इस ग्रन्थ की रचना की गई है। वास्तव में शोध के कार्य मे केवल शोध को ही उपस्थित किया जा सकता है, उसकी अधारभूत सामग्री के यथार्थ रूप को तो सर्वांश में उपस्थित किया ही नहीं जा सकता।

अनेक पाठक तथा समालोचक हमारे उच्चारणों पर भी चौकेंगे। किन्तु इटली के प्रचलित नामों के उच्चारणों को कई २ बार भारत-स्थित अनेक इटालियनों से पूछ २ कर मालूम करने पर हमको पता चला कि इटालियन उच्चारण की पद्धति इंगलिश उच्चारण से एक दम भिन्न है। वास्तव में इटालियन नामों का उच्चारण इंगलिश ढग से करने से हम उन नामों के वास्तविक उच्चारण से बहुत दूर भटक गए हैं। अपने पाठकों की सुविधा के लिए हमने कुछ ऐसे उच्चारणों की तालिका इस ग्रन्थ के आरम्भ में दे दी है।

आशा है कि हिन्दी के पाठक इस ग्रंथ को हमारे पिछले ग्रंथ 'हिटलर महान्' से भी अधिक अपनावेंगे।

नं० ८११ धर्मपुरा, देहली।
१—१२—१९३७

चन्द्रशेखर शास्त्री

भाषण का सारा ढंग कमीना और अत्यन्त नीच है। नीती जैसा नीच मंत्री पराजित जर्मनी अथवा आस्ट्रिया में भी कभी नहीं हुआ। यदि वहां कोई ऐसा होता तो एक कदम भी न चल पाता। वह भगोड़ों और स्वयं ही चोट खाने वालों का एक ऐसा मन्त्री है, जिसको किसी भी मूल्य पर केवल शान्ति चाहिये।

..........क्या यूगोस्लैविया की मित्रता का यही मूल्य दिया जावेगा? ....आदि आदि"

उस समय सरकार की घरेलू और विदेशी नीति के सम्बन्ध मे खूब टीका टिप्पणी हो रही थी। मुसोलिनी तो उस पर अत्यन्त कठोर टिप्पणी किया करता था। उदार पत्र भी मंत्री-मण्डल की इस नीति के विरोधी थे। केवल 'अवन्ती' उसका पक्षपाती था।

हड़तालियों की पुलिस, सैनिकों और नागरिकों के साथ आए दिन मुठभेड़ होती रहती थी। कभी २ तो पार्लमेंट मे भी घूंसे चल जाते थे।

कुछ माह में ही तीन मंत्रीमण्डल बदले। किन्तु नीती बराबर प्रधानमन्त्री बना रहा। राष्ट्र का सामाजिक जीवन प्रतिदिन बिगड़ता जाता था। उसको ठीक करने वाला कोई न था।

फासिस्टवाद का आदर्शवाद (Idealism) से सदा युद्ध होता रहता था। नीती का तो सारा क्रोध मुसोलिनी पर ही उतरता था। उसके दल वाले सदा ही मुसोलिनी पर उबलते रहते थे। एक दिन तो मिलन के एक होटल मे लगभग एकसौ

यह आशा लगाए हुए था कि सन्धि के समय या तो अल्बेनिया उसको मिल जावेगा, अथवा उस पर उसका प्रभाव तो अवश्य ही बना रहने दिया जावेगा। जून १९१७ मे इटली ने अपने संरक्षण मे अल्बेनिया की स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। अगले वर्ष आस्ट्रिया के पराजित होने से इस देश के बहुत बड़े भाग पर इटली का अधिकार हो गया। शेष भाग पर सर्विया तथा अन्य राज्यों का कब्जा रहा।

किन्तु इस बीच में अल्बेनियन लोग भी स्वतन्त्रता के लिये बराबर प्रयत्न कर रहे थे। इटली से एक राष्ट्रीय अस्थायी सरकार बनाने की अनुमति पाकर वह फिर पूर्ण स्वतन्त्र होने का यत्न कर रहे थे। सन् १९१९ मे पेरिस की सन्धिपरिषद् मे अल्बेनिया का प्रश्न भी उसके प्रतिनिधि द्वारा उपस्थित किया गया। राष्ट्रपति विल्सन इस देश को विभक्त नही करना चाहते थे। इधर इटली को इस देश के ऊपर राष्ट्रसंघ द्वारा नियन्त्रण(Mandate) मिल जाने की आशा थी। किन्तु कुछ इटालियन अफ़सरों ने वहा के मूलनिवासियो के साथ कठोरता का व्यवहार किया। इस समय एक समझौता हुआ, जिसके द्वारा अल्बेनिया का कुछ भाग यूनान और यूगोस्लैविया को दिया जाने को था। इस पर इटली मे बहुत असन्तोष छा गया।

इस बार अल्बेनिया वालों ने इटली के विरुद्ध विद्रोह किया। इस समय एक तो यहा इटली की सेना कम कर ही दी गई थी, फिर मलेरिया के कारण तो वह और भी निर्बल हो गई थी, अन्त

में इटली की सेनाओं को भगा कर वेलोना नगर में बन्द कर दिया गया। जून १९२० में इस नगर पर भी आक्रमण किया गया, किन्तु इटली की सेनाओं ने इस आक्रमण का बड़ा सफलतापूर्वक मुकाबला किया। इसी समय इटली के समाजवादियों ने युद्ध बंद करने का आन्दोलन किया।

ज्योलिटी इसी समय प्राधानमन्त्री बना था। उसने युद्ध को बन्द करने का निश्चय किया। परिणामस्वरूप अल्बेनिया और इटली मे सन् १९२० में तीराना (Tirana) की सन्धि हुई, जिसके अनुसार इटली ने अल्बेनिया की पूर्ण स्वतन्त्रता को स्वीकार करके वहां से अपनी सेनाओं को वापिस बुला लिया। सेनाओं ने सितम्बर १९२० मे हटना आरंभ किया। इस समय वेलोना भी खाली कर दिया गया। इटली ने अपने पास केवल सैसेनो (Saseno) बन्दर को रहने दिया। इस प्रकार ज्योलिटी मन्त्री-मण्डल में यह मामला भी इटली के विपक्ष मे ही हुआ।

इटली और टर्की

इसके अतिरिक्त एक और क्षेत्र में भी इटली को निराशा का सामना करना पड़ा। वह अपना पैर डोडेकैनीज़ द्वीप के सामने एशिया माइनर मे भी जमाना चाहता था। मित्रराष्ट्रों से महायुद्ध में उसका यह तय था कि दक्षिण पश्चिमी ऐनातोलिया उसके भाग मे आवेगा, किन्तु सन्धि के समय इस विषय में उसकी कुछ भी न सुनी गई। बाद मे ज्योलिटी ने सन् १९२० में सेवर्स (Sevres) की निर्बल सन्धि पर हस्ताक्षर करके इस

उनका साथ बिजली के कर्मचारियों ने भी दिया। उन्हों ने बिजली भी देना बन्द करके नगर को पूर्णतया अंधकारमय बना दिया।

इन लोगो की सहानुभूति स्वरूप अन्य कई नगरों मे भी हड़-तालें हो गईं। यद्यपि इस समय इटला की जनता महान् कष्ट में थी, तौ भी विरोध करने का साहस किसी मे न था। केवल मुसो-लिनी नकारखाने में तूती आवाज के समान विरोध करता रहता था। विरोध करने वालों को सरकार की ओर से दण्ड दिया जाता था।

ज्योलिटी के मंत्रीमण्डल को आर्थिक कठिनाइयो का सामना भी करना पड़ा। वह युद्धकालीन लाभ को जव्त करके समाजवादियो को प्रसन्न कर रहा था।

रैपैलो की संधि

वरसाई की सन्धि से इटली और यूगोस्लैविया दोनों ही असन्तुष्ट थे। अतः उस सन्धि के हो जाने पर उन दोनो ने वार्तालाप करना आरम्भ किया। यह वार्तालाप बहुत समय तक चलता रहा। इसमें भी कई बार खींचातानी, कई बार शांति और कई बार समझौते की बातें हुई। अन्त मे १२ नवम्बर सन् १९२० को रैपैलो नामक स्थान मे सन्धिपत्र पर यूगोस्लेविया और इटली के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये। इटली की ओर से इस पर प्रधानमंत्री ज्योलिटी और परराष्ट्रमन्त्री काउट स्फोर्जा (Sforza) ने हस्ताक्षर किये थे। इस सन्धि के अनु-सार जारा (Zara) और उनके आसपास के नगर तथा चेर्सो,

लूसिन, लैगोस्टा और पैनेगोनी के द्वीप इटली को दिये गए।
लाइसा (Lissa) तथा शेष द्वीपों सहित डलमाशिया यूगोलैविया
को दिया गया। इस सन्धि के अनुसार इटली को ३३०० वर्ग
मील भूमि और लगभग ९ लाख १० हजार निवासी मिल गए।
इस सन्धि पर २ फर्वरी सन् १९२० को आचरण किया गया।

अल्बेनिया का प्रश्न

इसी समय अल्बेनिया के प्रश्न का भी इटली के विपक्ष में
निर्णय हुआ। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही इटली अल्बे-
निया मे अपना प्रभाव जमाने का यत्न कर रहा था, क्योंकि यह
देश भी एड्रियाटिक समुद्र के किनारे पर है। सन् १९०८ में इटली-
वालों ने उसके वेलोना (Valona) नामक नगर में बड़ा भारी
अस्पताल खोला। सन् १९१३ मे वहां एक स्वतंत्र अस्थायी सर-
कार बन भी गई, किन्तु यह सरकार महायुद्ध की प्रथम चोट मे ही
सन् १९१४ में नष्ट हो गई। सन् १९१४ से यहां इटली की सेना भी रहने
लगी। इटली वालों ने वहां अच्छा नगर बसा कर बड़ी २ सड़कें
बनाईं। इस नगर मे अस्पताल भी बनाए गए। सन् १९१६ में
सर्विया की सेनाओं ने युद्ध से भाग कर यही आराम पाया था।
महायुद्ध आरम्भ होने पर अल्बेनिया पर कई पड़ोसी राज्यों की
गृद्ध-दृष्टि पड़ी। आस्ट्रिया की सेनाओं ने इसके एक बड़े भाग को
रौंद डाला। सर्विया, इटली और यूनान इस में अपनी सेनाएं भेज
कर किसी प्रकार इसकी रक्षा करते रहे। इटली के तो यहां सहस्रों
सैनिक काम आये और बहुत सा धन व्यय हुआ। अतएव इटली

समाजवादियों ने मुसोलिनी को पहचान कर घेर लिया। वह उसको पीटना चाहते थे। भीड़ बराबर बढ़ती गई। किन्तु मुसोलिनी को दृढ़ देख कर किसी को भी उस पर हाथ छोड़ने का साहस न हुआ। मुसोलिनी तो सस्ता ही छूट जाता था, किन्तु अन्य फासिस्टों को बुरी तरह पीटा जाता, उन पर चाकुओ से आक्रमण किया जाता और अनेकों को तो बड़े २ कष्ट देकर स्वर्गलोक का मार्ग भी बतला दिया जाता था।

इसी समय गत युद्ध के सेनापति जनरल डिआज़ (General Diaz) और नीती में झगड़ा आरम्भ हो गया। लन्दन सन्धि की शर्तों के पूरा न होने से देश भर मे आन्दोलन छा गया। रोम में यह सम्भावना दिखलाई देने लगी कि ऐड्रियाटिक समुद्र के सब किनारे यूगोस्लैविया को दे दिये जावेंगे। विद्यार्थी, प्रोफेसर, श्रमिक, नागरिक और प्रतिनिधि लोग मंत्रीमंडल से इसका विरोध करने का अनुरोध कर रहे थे। डलमाशिया को लेने के लिये इटली के सभी वर्गों की ओर से अपील निकाली गई। इटली के महायुद्ध में भाग लेने के वर्ष-दिन के अवसर पर २२ मई १९२० को इन लोगों ने बड़ा भारी प्रदर्शन किया।

किन्तु इसी समय एक दुर्घटना हो गई। नीती की आज्ञा से पुलिस ने इन प्रदर्शकारियो पर गोली चला दी, जिससे कई एक मरे और लगभग पचास घायल हुए। रोम मे यह अभी तक की सबसे बड़ी दुर्घटना थी। इतने से भी संतुष्ट न होकर

नीती ने २४ मई को रोम में रहने वाले स[illegible] ड[illegible] तथा फ्यूम वालों को उनकी स्त्रियों सहित गिरफ्तार करवा लिया। इस से जनता पर इतना आतंक छा गया कि बहुत कम को इसका विरोध करने का साहस हुआ। चैम्बर मे भी इसका विरोध करने का कुछ परिणाम न हुआ। मुसोलिनी ने इस दुर्घटना की अपने पत्र में बड़े तीव्र शब्दों में निन्दा की। उसने इस विषय पर सार्वजनिक घृणा प्रदर्शित करने का अनुरोध किया।

मुसोलिनी के लेख का सिनेट पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इसपर जेनेरल डिआज़ (General Diaz) ने सिनेट में इस विषय पर घृणा प्रदर्शित करने का प्रस्ताव उपस्थित किया। इस प्रस्ताव पर ६४ सीनेटरों के हस्ताक्षर थे, जिनमें सिनेट के चार उपसभापति भी थे।

प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया और नीती के मंत्रीमण्डल का तीसरी बार पतन हुआ।

ज्योलिटी का मंत्रीमंडल

नीती के पश्चात् मई १९२० में ज्योलिटी फिर प्रधान-मंत्री बनाया गया। वह इटली के महायुद्ध में भाग लेने का विरोधी था। उसके विषय मे यह समझा जाता था कि मन्त्रीपद को उसने पेशा ही बना लिया है। उसके प्रधानमंत्री बनाये जाने को सरकार का दिवालियापन समझा गया।

ज्योलिटी के समय देश की आंतरिक अवस्था और भी खराब हो गई। इस समय रोम के रेलवे कर्मचारियो ने हड़ताल करदी।

विषय में सभी करे कराये पर पानी फेर दिया, इसी समय टर्की मे मुस्तफा कमाल पाशा ने राष्ट्रीय तुर्क आन्दोलन को बड़े जोर शोर से उठा कर यूनान को पराजित किया। इसके पश्चात् सन् १९२३ में टर्की की यूरोपीय राष्ट्रों से फिर सन्धि हुई, जिसमे उसकी निर्बाध स्वतन्त्रता को स्वीकार कर लिया गया।

फ़ासिस्टों का फिर संगठित होना

देश की आन्तरिक तथा परराष्ट्रीय नीति में मन्त्रीमण्डल की पूर्वोक्त प्रकार की निर्बलता का अनुभव करके मुसोलिनी ने अपने मित्र फासिस्टों तथा पत्र पोपोलो डीटैलिया को नये सिरे से संगठित करना आरम्भ किया। रूस के जादू से उसको पूरा भय था। वह लेनिन के नाम के चमत्कार को देख चुका था। अतः उसको अपने दल की उसके प्रभाव से पूर्णतया रक्षा करनी थी। इसी समय मुसोलिनी के कुछ साथी रूस से लौट कर आये। उन्होने रूस के अकाल का वर्णन करके बतलाया कि रूस के आन्दोलन की कल्पना निरी मृग-तृष्णा है। इस घटना से इटली वालो की आंखें खुली और फासिस्ट आन्दोलन जोर पकडने लगा।

उस समय इटली के हवाई जहाजो की दशा बहुत बुरी थी। एक जहाजी दुर्घटना का उदाहरण देकर ज्योलिटी ने इस विषय के वादविवाद तक को बन्द कर दिया था। इसी समय मुसोलिनी के मन से भी इस विद्या को जानने की इच्छा हुई। उसने बहुत शीघ्र हवाई जहाज़ का चलाना सीख लिया।

समाजवादियों का कारखानों पर अधिकार

रेलों की हडतालों का ऊपर वर्णन किया जा चुका है। कुछ दिनों के पश्चात हडताली स्वयं ही काम पर वापिस आ गए। अब उन्होंने लाल झंडे लेकर प्रदर्शन करने का यत्न किया। इस समय तक जनता इनसे काफी चिढ़ गई थी। उसने इन प्रदर्शनकारियों पर आक्रमण किया। इस आक्रमण में कुछ फासिस्ट भी थे। उन्होंने मुख्य २ समाजवादी पत्रों के दफ्तरों पर आक्रमण करके उनको तोड़-फोड़ डाला और कई समाजवादी नेताओं को पीट दिया।

सितम्बर १६२० में धातु के कारखानों के श्रमिकों ने अनेक कारखानों पर कब्ज़ा कर लिया। उन्होंने कारखाने के मालिकों से उनके अधिकार को छुड़ाने का यत्न किया। धीरे २ यह आन्दोलन कपड़े की मिलों और औषधि के कारखानों मे भी फैल गया। इस समय 'लाल रक्षकों' का संगठन किया गया और क्रान्तिकारी अदालतें बनाई गई। कारखाने मे घुसने वाले बाहिरी व्यक्ति को इस समय गोली मार दी जाती थी। साम्यवादियों के इस सारे कार्य मे अधिकारियों ने बिलकुल बाधा न दी। मजदूरों ने कारखानो पर तो कब्जा कर लिया, किन्तु वह बिना मैनेजरों के न तो कच्चा माल पा सके और न कारखानों को ही चला सके। अब कारखाने केवल शैतानियत के अखाड़े मात्र ही रह गये। इस समय झगड़े बढ़ते जाते थे और परिस्थिति बराबर बिगड़ती जाती थी। कहीं २ तो मजदूरों के नेताओं ने तिजोरियों को तोड़ २ कर

छटा अध्याय

फ़ासिज़्म का अभ्युदय काल

इस समय इटली की दशा वहुत बुरी थी। राष्ट्रीय ऐक्य का तो वहां नाम तक न था।

जनता इस समय समाजवादियों के दंगों से ऊब उठी थी। उसने अब आत्मरक्षा के लिये संगठित होना आरम्भ किया। वह लोग बड़ी संख्या मे फासिस्टो के झण्डे के नीचे आने लगे। अनेक विद्यार्थी भी विश्वविद्यालयों को छोड़ २ कर फासिस्ट दल मे आ मिले।

फ़्यूम के प्रश्न पर दनुनुसियो से समझौता

उस बीच में मुसोलिनी फ्यूम की ओर से भी उदासीन नही था। फ़्यूम-युद्ध के प्रथम दिन से ही वह दनुनसिओ के हृदय से साथ था। उसके पास कवि के प्रेम पूर्ण पत्र सदा ही आते रहते थे। इस बात का प्रमाण कवि के १४ सितम्बर

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री M. O. Ph., H. M. D.,
काव्य-साहित्य-तीर्थ-आचार्य, प्राच्यविद्यावारिधि, आयुर्वेदाचार्य,
भूतपूर्व प्रोफेसर बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी।

१९१६ के पत्र से मिलता है। यह पत्र उसने समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिये भेजा था। उसने लिखा था।

''प्रिय मुसोलिनी

'शीघ्रता में कुछ ही पंक्तियां लिख रहा हूं। इस समय मुझे घंटों काम करना पड़ता है। यहां तक कि हाथ और आंखें दोनों दुखने लगती हैं। मै अपने वीर सहयोगी—अपने ही पुत्र गैब्राइलीनो के हाथ यह लेख भेज रहा हूं। यदि समझो तो इसमे स्वयं ही आवश्यक संशोधन कर लेना। युद्ध का यह सबसे प्रथम कार्य है। इसको मै अन्त तक अपने ढंग पर पूरा करूंगा। यदि सेसर इस पत्र मे साहस पूर्वक हस्तक्षेप करे तो कृपया पत्र को छाप कर निकाले हुये शब्दों के स्थान को खाली छोड़ देना। इसके पश्चात् हम अपने कर्तव्य पर विचार करेंगे।

'मै आपको फिर पत्र लिखूंगा। मै स्वयं ही आऊंगा। मैं आपकी लगन और उस सहायता की सराहना करता हूं, जो आपने सुन्दर मार्ग प्रदर्शन करके पहुंचाई है। मेरा आलिङ्गन स्वीकार करे।

भवदीय

गैब्रील दनुनसिओ

जुलाई से दिसम्बर तक फ्यूम की दशा अधिकाधिक गड़ती गई। इधर तो दनुनसिओ मोर्चे पर दृढ़ता से ड़ा हुआ था, उधर ज्योलिटी रैपेलो सन्धि के ऊपर

जा रही थी। मुसोलिनी भी उसकी तीव्र आलोचना कर रहा था।

इसके थोड़े समय बाद ४ नवम्बर १६२० को इटली का विजयदिवस था। इस अवसर पर सारे देश मे हर्ष छा गया। रोम और मिलन में देशभक्तों ने बड़ा भारी प्रदर्शन किया। किन्तु यह सब अस्थायी था।

बोलोइञा में भयंकर संघर्ष

बोलोइञा (Bologna) समाजवादियों का प्रधान केन्द्र था। उन्होंने यहां अपनी सरकार कायम कर ली थी। २१ नवम्बर को वह इसके लिये व्यापक रूप मे उत्सव मनाने को थे। नगर के टाउनहाल तथा अन्य मकानों पर लाल झण्डे लगा दिये गए। इस समय इटली के अन्य नगरो को भी इस उत्सव की सूचना देने के लिये अनेक कबूतरों को छोड़ देने की योजना की गई थी। किन्तु यहां आरपीनैटी (Arpinati) के नेतृत्व मे थोडे से फासिस्ट भी थे। नगर पूर्णतया समाजवादियों के हाथ मे था। वह यहां सोवियट विधान को चलाना चाहते थे। एक बड़ी भारी सभा बुलाई गई, जिसमे फासिस्ट भी आए।

फासिस्टो ने इसका पूर्ण विरोध करने निश्चय कर लिया था। उन्होने इश्तहार लगा २ कर स्त्रियों और बच्चों को सभा मे जाकर घरो मे ही रहने का आदेश दे दिया था। नगर मे दं[illegible] होने के सारे चिन्ह प्रगट हो गए थे।

तीस फासिस्टों को सैनिक ढंग से सड़कों में निकलते [illegible] समाजवादी घबरा गए। वह तितर बितर हो कर हल्ला [illegible]

चाने लगे। अनेक लोग डर कर टाउनहाल में जा घुसे। उन
ो नगर पर आक्रमण किये जाने का भय होने लगा। वह बाहिर
; प्रत्येक व्यक्ति को फासिस्ट समझ रहे थे। अतएव उन्होंने भीड़
; ऊपर एक बम फेंका।

किन्तु यह बम समाजवादियों की ओर ही भूल से फेंका
या। इससे सब कहीं भय छा गया। लोग अपने समाजवादी
टकटों को फाड़ २ कर भागने लगे। उधर हाल के अन्दर ही
ासिस्टों के धोखे मे समाजवादियों के ऊपर बम चलाये जा रहे
। उधर हाल के निकलने के मार्ग पर हाल मे ही गोली की
आवाज़ सुनाई दी; जिसमें कौंसिल के कई सदस्य मर गए।

इसी प्रकार की घटना फेरेरा (Feraia) नामक नगर
ं भी हुई। यहां तीन फासिस्ट मारे गए और अनेक घायल हुए।

मिलन में फासिस्टों की सभा

इन घटनाओ से मुसोलिनी ने देश के सभी भागों से प्रधान २
ासिस्टों को मिलन बुलाया। यद्यपि इन आने वालों की संख्या
धिक नही थी, किन्तु वह सभी दृढ़ निश्चय और दृढ़-
तिज्ञा वाले थे। मुसोलिनी ने उनसे कहा कि सफलता केवल
माचार पत्रों से ही नही हो सकती। ईंट का जवाब पत्थरों से
ना होगा। अन्त में समाजवादियों का दृढ़ता के साथ मुक़ाबला
रने का निश्चय किया गया।

जो कुछ उनके अन्दर था सब निकाल लिया। इस समय अनेक दंगे हुए, जिनमें अनेक हत्याये भी हुई और 'लाल दल' वालों ने अपने नाम को ठीक २ चरितार्थ कर दिया। ज्योलिटी इस सब दृश्य को शान्त भाव से देखता रहा। परिस्थिति को अधिक बिगड़ते देख कर उसने कुछ करने के इरादे से ट्यूरिन मे अपने पास कारखानेदारों और मजदूरों दोनों को ही बुलवाया। उसने एक इकरारनामा लिखवा कर उसको दवाव डाल कर कारखानेदारों से स्वीकार कराया। उस समय जाकर मज़दूरों ने कारखानों मे से कई सप्ताह के पश्चात् अपना बिस्तर उठाया। कारखानों के खाली होने पर काम फिर आरम्भ कर दिया गया, किन्तु इस अपमान-रक तथा खर्चीले उपाय से कारखानों को लाभ कुछ न हुआ❋।

किसानों का जमींदारियों पर अधिकार

इसी बीच मे इटली के विभिन्न भागो के किसानों ने भी क्रान्ति की। उन्होने बड़ी २ जमींदारियों को छीन लिया। कुछ ज़मींदारों को तो जान से ही मार डाला गया और अनेक बरबाद कर दिए गए। इस आन्दोलन का गर्म दल अथवा कैथोलिक पार्टी ने समर्थन किया। किन्तु इस क्षेत्र मे इतनी अधिक गडबडी होने पर भी व्यापारिक सफलता के लिये उद्योग न किया जा सका। ❋

❋Europe since 1815 by Charles Downer Hazen Pages 1033, 1034

कारखानों का साम्यवादी संगठन

मज़दूरों ने उत्पत्ति के साधनों पर इस प्रकार अधिकार करके मालिकों, मैनेजरों और मुडों को प्रथक् कर दिया। इसके पश्चात् ट्रेडमार्कों और कारखानों के चिह्नों को हटाकर छतों और द्वारों पर लाल झण्डे के साथ २ सोवियट के चिह्न दरांती और हथौड़े लगाए गए। प्रत्येक कारख़ाने में समाजवादी-साम्यवादी उप-नियमों के अनुसार एक कमैटी बनाई गई। इस आन्दोलन का विरोध करने वालों को टेलीफोन द्वारा ऐसा न करने की चेतावनी दे दी गई।

साम्यवादियों के अत्याचार

कारखानों पर कब्ज़ा करने के साथ २ निर्दयतापूर्ण कार्य भी किये गए। पिएडमांट की पुरानी राजधानी ट्यूरिन में 'रक्त न्यायालयों' का बड़ा ज़ोर था। वहां मैरियो सोंज़िनी नामक एक देश-भक्त फासिस्ट को पकड़ कर रक्त न्यायालय मे पेश किया गया। उसको गोली से डरा कर खाई मे फेंक दिया गया। फिर उसको न्यारिये की भट्टी मे डाला गया, किन्तु भट्टी उस समय काफी उष्ण नही थी। अतएव फिर उसको प्राण निकलने तक पीटा गया। इस प्रकार के अत्याचारों से स्त्रियां तक नही बच पाती थी। इस प्रकार के अत्याचार इटली के अनेक नगरों मे किये गए।

विदेशों में इटली की साख उठती जा रही थी। आर्थिक पतन अधिकाधिक होता जाता था। छापेखानों से नोट पर नोट निकाले जा रहे थे। देश भर में इस आर्थिक नीति की समालोचना की

वास्तव मे आचरण करना चाहता था। अन्त मे उसने नगर का घेरा डालना आरम्भ किया। उसने नगर को सैनिक आक्रमण से लेने का निश्चय किया। इस समय बड़े दिन की छुट्टियो के कारण समाचार पत्रों की भी छुट्टी थी। अब इटली के ही एक नगर के विरुद्ध इटली वालों को भेजा गया। इस युद्ध मे दनुनसिओ के अनेक सैनिक खेत रहे। इस घटना से सारे इटली मे क्रोध छा गया।

इसके पश्चात् ज्योलिटी ने इस घटना पर बहुत पश्चात्ताप प्रगट किया। फलस्वरूप फिर समझौता हुआ। फ़्यूम का शासन करने के लिये वहीं के नागरिको की एक कमेटी बना दी गई। फलतः दनुनसिओ ने फ़्यूम को छोड़ दिया। उसका फ़्यूम पर १६ माह तक निर्बाध अधिकार रहा। अब यह आवश्यक था कि उसका भाग्य उसके ही नागरिको के के हाथ मे सौंप दिया जाता।

फ़ासिस्टों का नवीन सङ्गठन

इस समय तक फासिस्टों के संगठन का कार्य भी बहुत कुछ आगे बढ़ चुका था। समाजवादियों से युद्ध करने के लिये उनको बिल्कुल सैनिक ढंग पर सगठित करके वर्गों (Squads) और श्रेणियों (Units) मे विभक्त कर दिया गया था। विनयानुशासन उसकी मुख्य विशेषता रखी गई थी।

यद्यपि यह लोग अत्यन्त उग्र और युद्ध प्रिय थे। किन्तु गारीबाल्डी के सैनिकों के समान वह सभी राजभक्त थे। वह

सब एक केन्द्रीय समिति के नियन्त्रण में थे और यह समिति मुसोलिनी की आज्ञा के अनुसार कार्य करती थी। अनेक विद्यार्थी स्कूलों और विश्वविद्यालयों को छोड़ कर इनमें सम्मिलित हो गए थे। राष्ट्र की रक्षा के लिये वह सब अपने प्राणों की बाज़ी लगा देने को तयार थे। यह सब काली कमीज़ें पहिनते थे।

इस समय की लिबरल डेमोक्रैटिक सरकार ने इस आन्दोलन के मार्ग में बड़ी २ कठिनाइयां उत्पन्न कीं। उन पर रायल गार्ड के द्वारा बड़े बड़े अत्याचार कराये जाते थे। उनको जेल में बन्द करके बहुत समय तक बिना मुकद्मे के ही रख कर उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये जाते थे। किन्तु अत्याचारों से उनकी निर्भीकता बढ़ती ही जाती थी। अपने नेता—मुसोलिनी—में उनका अगाध प्रेम और श्रद्धा थी। वह मरते समय भी अपनी काले कमीज को ही मांग कर अपनी मातृभूमि और नेता का स्मरण करते थे।

इस समय इटली के युवक उत्साह से भर गए थे। उनके चेहरे से पुरुषत्व झलक रहा था। समाजवादी तो उनकी शकल देख कर ही भयभीत हो जाते थे। उस समय सब कहीं युद्ध का ही राग—जागृति ही जागृति दिखलाई देती थी।

फ़ासिस्टों का शक्तिसंचय

समाजवादियों के साथ युद्धों में असंख्य फ़ासिस्ट मर जाते थे। लोगों के उत्साह को देख कर जनता में भी उत्साह भरता

था। मध्य श्रेणि वाले इस समय अपने अधिकारों और
के लिये चिन्तित थे। वह फासिस्टों के उद्भव को
मा की विशेष कृपा समझ कर तुरन्त उनके झण्डे के
आगए। अनेक समझदार श्रमिक, किसान, छोटे २ ज़मींदार
भूतपूर्व सैनिक और सेनाधिकारी भी फासिस्टों में आ
। समाजवादियों के अत्याचारों से अनेक समझदार
जवादी भी उकता गए थे। अथवा यह कहना चाहिये कि
उदार विचार के समाजवादी थे वह सभी साम्यवादियों
उग्रवादियों के कार्यों से घृणा करके फासिस्ट दल मे
मलित हो गए। अब फासिस्टों ने आग का जवाब आग से,
का दांत से और पत्थर का पत्थर से देने का यत्न किया।
सिस्टों का संगठन प्रायः प्रत्येक नगर मे हो गया। वोलोइआ
ऊपर लिखी हुई दुर्घटना से वहां की जनता ने सारी
शेविक प्रणाली को उलट दिया। फ़ासिस्टों ने साम्यवादियों
प्रधान केन्द्र को जला दिया। समाजवादियो अथवा साम्य-
दियों ने इटली के अनेक कम्यूनों (Communes) की
रकार पर अधिकार कर लिया था। अब वह उस पद से
ाम लेकर फासिस्टों का दमन करने लगे। डाके, रिश्वत और
बाव देकर पैसा लेने का बाज़ार सरे आम गर्म था। फासिस्टों
पहिले स्थानीय स्वेच्छाचारिता के उन घोसलों को उतारने का
नेश्चय किया। उस समय साम्यवादियों और फासिस्टों मे
बराबर दंगे होते थे। कई बार तो इनमे दोनों ओर से अनेक

हताहत होते थे। सन् १९२० इटली के लिये वास्तव में ही बड़ा दुःखदायी वर्ष था।❀

फासिस्टों का संगठन बड़ा उत्तम था। उन्होंने गांव से लेकर प्रान्त तक सारे इटली का संगठन कर डाला। सब समितियां केन्द्रीय सभा के नियन्त्रण में काम करती थीं। सब सदस्यों को अपने काम के लिये समितियों के सम्मुख उत्तरदायी होना पड़ता था। न तो कोई सदस्य और न समिति ही अपने मन से कोई कार्य करने के लिये स्वतन्त्र थी। सदस्यों और समितियों पर इतना कड़ा नियन्त्रण रखा गया था कि फ़ासिस्ट लोग अपने ठोस और शक्तिशाली संगठन के लिये प्रसिद्ध हो गए।

किन्तु फ़ासिस्ट लोग बदला लेने के लिये इतने क्रोध मे भर कर आक्रमण करते थे कि वह अपने नेता मुसोलिनी तक की रुकने की आज्ञा का पालन बड़े दुःखी होकर करते थे। उनको अपने साथियों की धोखे से की हुई हत्या बहुत स्मरण रहती थी।

इस समय कावूर, गारीबाल्डी और मत्सीनी के प्रयत्नों से बना हुआ राष्ट्र नष्टप्राय हो रहा था। ज्योलीटी इस समय नितान्त अकर्मण्य बना हुआ था।

सन् १९२१ में मुसोलिनी का सरकार की सहायता से विरोधियों के साथ एक राजनीतिक समझौता हुआ। इस विषय में

❀Europe Since 1815, by Charles Downer Hazen.

समाजवादियों और उदार दलों (लिबरलों) मे बड़ा भारी मत-भेद हो गया। इसके अतिरिक्त समझौते पर समाजवादियों ने ही हस्ताक्षर किये थे, न कि साम्यवादियो ने। अतएव साम्यवादियों ने अपने युद्ध को जारी रखा। उनको समाजवादी स्वयं भी सहायता देते जाते थे। समझौता करना बिल्कुल व्यर्थ गया। समाजवाद ने इटली के सामाजिक जीवन को नष्ट कर दिया। इस समय युद्ध फिर नये सिरे से आरभ कर दिया गया। सन् १६२१ मे दुबारा आरंभ किया हुआ यह युद्ध अन्तिम सफलता प्राप्त होने तक चलता ही रहा।

अब फिर बड़ा भीषण युद्ध हो चला। आरभ मे पो घाटी (Po Valley) में बड़ा भारी दंगा हुआ। रोम मे समाजवादी फासिस्टों के अन्त्येष्टि संस्कार के जुलूस पर भी गोली चलाने को तयार हो गए। उस समय लेगहार्न (Leghorn) मे समाजवादियों की बड़ी भारी कांग्रेस हुई, जिसमे साम्यवादी दल अधिक बलिष्ट हो गया।

फ़ासिस्टों का कार्यक्रम

इस के कुछ ही समय के पश्चात् ट्रिएस्टे में फासिस्टों की एक बड़ी भारी सभा हुई। इसका सभापति गिउण्टा (Giunta) नामक एक फ़ासिस्ट था। यह इटालियन चैम्बर का सदस्य भी था। इस सभा में मुसोलिनी ने फासिज्म के सिद्धान्तों पर भाषण दिया। इस सभा में मुसोलिनी न फ्यूम का भाग्य-निर्णय करने वाली

रैपैलो सन्धि को रद्द करने की मांग की। इस सभा में मुसोलिनी ने सन् १९२१ के लिये निम्न लिखित कार्यक्रम उपस्थित किया—

"प्रथम, उन राजनीतिक सन्धियों पर इटली के हित की दृष्टि से फिर विचार कराया जावे, जिनके ऊपर आचरण करना कठिन है अथवा जिनके कारण नये युद्ध का भय हो।

द्वितीय, फ्यूम का आर्थिक नियंत्रण इटली के हाथ मे रहे और डलमाशिया निवासी इटालियनों की सुरक्षा का प्रबन्ध कराया जावे।

तृतीय, देश की उत्पादक शक्तियों की उन्नति करके धीरे २ पश्चिम की धनी सरकारों से सम्बन्ध कम किया जावे।

चतुर्थ, एक वार फिर आस्ट्रिया, जर्मनी, बल्गेरिया, टर्की और हंगैरी के साथ सम्बन्ध बनाया जावे। किन्तु इसमे इटली की प्रतिष्ठा को हानि न पहुंचे और अपनी दक्षिण तथा उत्तर की सीमाएं सुरक्षित रहें।

पञ्चम, पूर्व के दूर और समीप के सब देशों से घनिष्टता बढ़ाई जावे, चाहे उसपर सोवियट रूस का ही शासन क्यों न हो।

षष्ठ, औपनिवेशिक नीति में इटली के अधिकारों और आवश्यकता को वार वार प्रगट किया जावे।

सप्तम, अपने सभी राजनीतिज्ञ प्रतिनिधियों का उनको विश्वविद्यालय की विशेष शिक्षा देकर विशेष सुधार किया जावे।

अष्टम, भूमध्य सागर ('Mediterranean Sea') और और ऐटलांटिक महासागर मे आर्थिक और सांस्कृतिक संस्थाओ तथा विनियम द्वारा उपनिवेश बनाए जावें।"

मुसोलिनी अपने इस राजनीतिक कार्यक्रम के द्वारा रोम को फिर एक बार पश्चिमी यूरोप का मार्गप्रदर्शक बनाना चाहता था।

इसके पश्चात् मिलन नगर की लम्बार्डी के फासिस्टों की सभा में मुसोलिनी ने फासिस्टों को युद्ध के सम्बन्ध मे नियम बतलाए।

इस प्रकार यह लोग बल तथा विधान दोनों से ही शक्ति प्राप्त करने में लग गये।

फ़ासिस्टों का साम्यवादियों से मुकाबला

समाजवादियों और साम्यवादियों मे यद्यपि पर्याप्त अंतर था, किन्तु फासिस्टों का मुकाबला दोनों ही मिलकर करते थे। साम्य-वादी लोग विधान की लेशमात्र भी चिन्ता नहीं करते थे। वह फासिस्टां को बुरी तरह से मारते थे, फिर वह चाहे बच्चे ही क्यो न हो।

यह दशा इटली के सभी प्रान्तों में थी। समाजवादी लोग फ़ासिस्टो पर चुन २ कर प्रहार करते थे, जिससे अनेकों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता था।

मिलन नगर में २३ मार्च १९२१ को साम्यवादियों ने डायना थियेटर मे बम का धड़ाका किया, जिससे बीस शान्त नागरिक तुरंत मर गये और पचास के अंग भंग हो गए। इस पर फ़ासिस्टों को बड़ा क्रोध आया। उन्होने उनके पत्र 'अवन्ती' के कार्यालय पर धावा करके उसे जला दिया। वह श्रमिकों के कार्यालय पर भी आक्रमण करने वाले थे कि एक सेना के दस्ते ने उनको रोक दिया।

क्रोधी फासिस्टों ने ग्राम ग्राम और नगर नगर में समाजवादियों और साम्यवादियों से बदले लिये। २६ मार्च को मुसोलिनी ने मिलन नगर मे फासिस्टों का बड़ा भारी प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन से विरोधियों के छक्के छूट गये। मुसोलिनी को इस समय बहुत अधिक काम करना पड़ता था। उसको फासिस्टों के संचालन के अतिरिक्त पोपोलो डीटैलिया को भी सम्पादन करना पड़ता था। इस समय मुसोलिनी हवाई जहाज़ को चलाने का फिर अभ्यास करने लगा था। किन्तु एक बार एक दुर्घटनावश वह ऊपर से गिर पड़ा, जिससे उसके बहुत अधिक चोट आई। डाक्टरों की सुश्रूषा से वह इस आपत्ति से भी शीघ्र ही पार हो गया।

इस के बाद उसके शत्रुओं ने कई बार उसके प्राण लेने का यत्न किया, किन्तु इटली के सौभाग्यवश वह सदा ही चमत्कारिक ढंग से बच जाता। हत्यारे उसके मुख को देख कर ही भयभीत हो जाते और स्वयं ही अपनी राम कहानी सुना देते थे।

सन् १९२१ का निर्वाचन

देश की इस प्रकार की परिस्थिति से मन्त्रीमण्डल का आसन भी डोलने लगा था। ज्योलिटी ने पार्लमेंट का दलों की संख्या के अनुसार विभाग करने के लिए पार्लमेंट को भंग कर दिया। नये निर्वाचन १९२१ में रखे गए।

इस समय फिर सब पार्टियों ने अपना २ प्रचार करना आरंभ किया। इस समय फासिस्ट पार्टी सबसे अधिक बलवान् थी। समाजवादी और साम्यवादी भी प्रथक् २ होकर निर्वाचन के

लिए प्रचार कर रहे थे। पापुलर पार्टी निर्वाचन को धार्मिक आधार पर लड़ रही थी।

इस समय मुसोलिनी ने देश का दौरा करना आरम्भ किया। अप्रैल के आरम्भ मे वोलोइञा में उसका वड़ा भारी स्वागत हुआ। वहां से वह फेरैरा आदि अनेक स्थानों में गया। इस कार्य मे एक माह लग गया।

निर्वाचन का परिणाम बहुत आशाजनक रहा। मुसोलिनी को सन् १६१९ के चार सहस्र वोट की अपेक्षा इस वार एक लाख ७८ हजार वोट मिले थे। इस वार उसकी पार्टी को चैम्बर मे ३५ स्थान मिले।

मुसोलिनी अव पार्लमेंट के कार्य मे वड़े उत्साह पूर्वक भाग लेने लगा। चैम्बर मे उसने कई भाषण दिये। २१ जून के भाषण में तो उसने ज्योलिटी की परराष्ट्रनीति की वड़ी कड़ी आलोचना की। उसके इस व्याख्यान की देश भर में प्रशंसा की गई।

बोनोमी का मंत्रीमंडल

अनेक राजनीतिक उतार चढ़ाव के पश्चात् ज्योलिटी के मन्त्रीमण्डल का जून १९२१ मे ही पतन हो गया। अब उसके स्थान पर बोनोमी (Bonomi) प्रधानमन्त्री हुआ। वह समाजवादी होते हुए भी फासिस्टों के साथ सन्धि करना चाहता था। किन्तु इस सन्धि चर्चा के बीच मे ही सर्ज़ना (Sarzana) मे एक दंगा हो गया, जिसमे कम से कम अठारह फासिस्ट काट डाले गए। इस पर फासिस्टों को भी क्रोध मे आकर भयंकर रूप

से बदला लेना पड़ा। अन्त में सेना ने आकर उन पर गोली चलाई, जिससे दस फ़ासिस्ट मरे और कई घायल हुए।

मुसोलिनी तलवार चलाने मे बड़ा कुशल है। यूरोप में यह प्रथा है कि यदि दो व्यक्तियों में अधिक झगड़ा बढ़कर मानापमान का प्रश्न उपस्थित होता है तो उनमें से एक दूसरे को द्वन्द्व-युद्ध करने का निमन्त्रण देता है। इस युद्ध को वह डुएल (Duel) कहते हैं। मुसोलिनी को इस पार्लमेंट में दो डुएल करने पड़े, किन्तु उसकी दोनों में ही जीत हुई। घाव तो उसके शरीर पर एक भी नहीं आया।

रोम की सन् २१ की फ़ासिस्ट कांग्रेस

नवम्बर १९२१ मे उसने रोम मे ही फ़ासिस्टों की एक कांग्रेस बुलाई। इसमे फ़ासिस्टों के संगठन को अधिक बलिष्ट किया गया। इस कांग्रेस मे इटली भर के फासिस्ट आये थे। इसमें नवीन संगठन के अतिरिक्त नवीन कार्यक्रम भी बनाया गया। इस समय भी रोम मे कुछ फ़ासिस्ट मारे गए। इसके पश्चात् फ़ासिस्टों ने सैनिक ढंग पर रोम में भी प्रदर्शन किया। उनकी बढ़ी हुई शक्ति को देख कर सब के होश दंग रह गए।

देश की आर्थिक दुरवस्था

सन् १६२१ के अन्त मे 'बैका इटैलिआना डी सौंको' नामक बैंक की परिस्थिति बिगड़ती दिखलाई देने लगी। इटली के श्रमिक अपने रुपये को प्रायः इसी बैंक मे रखते थे। अतएव इस बैंक की दशा का प्रभाव सारे देश पर पड़ा। अब सारे राज-

नीतिज्ञों का ध्यान इटली की आर्थिक दशा पर गया। मुसोलिनी ने तो अभी तक युद्ध के अतिरिक्त आर्थिक विषयों की ओर कभी भी ध्यान नही दिया था। उसको अब इस बात का अध्ययन करने पर पता चला कि महायुद्ध के पश्चात् देश की दशा कितनी बिगड़ गई थी। जांच करने पर उसको और भी अनेक बैंकों और फर्मों की बिगड़ी हुई दशा का पता चला।

देश की इस नाज़ुक परिस्थिति के अवसर पर सरकार भी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। उसने—जैसा कि ऐसी परिस्थितियो मे प्रायः किया जाता है—अधिक नोट छापना आरम्भ किया, किन्तु इससे परिस्थिति और भी खराब हो गई।

मुसोलिनी का फ्रांस की कांफ्रेन्स में भाग

जनवरी १९२२ मे दक्षिणी फ्रांस में एक अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेन्स हुई। मुसोलिनी ने इसमें अपने पत्र के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित होने का निश्चय किया; क्यों कि यहां उसको अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के अध्ययन का अच्छा अवसर मिलना था। उसने आवश्यक व्यय के लिए दस सहस्र *लीरा (Lira) एकत्रित किए। उसका भाई आरनैल्डो उस रकम को लेकर एक बैंक मे फ्रांस के सिक्के लेने गया तो उसको केवल ५२०० फ्रैंक× (Franc) ही मिले। इस घटना से मुसोलिनी को विदित हुआ कि इटली के सिक्के की दर गिर कर फ्रांस के सिक्के की अपेक्षा आधी हो गई थी। यह बात गम्भीर थी। इससे उसे पता चला कि वास्तव मे इटली

---

*इटली का सिक्का ×फ्रांस का सिक्का

दिवालिया बनता जा रहा है। अब उसने यह निश्चय कर लिया कि फ़ासिज्म की शक्ति से इस परिस्थिति को बदलना होगा।

मुसोलिनी ने इस कांफ्रेंस में फ्रांस के प्रधानमंत्री मोशिये ब्रियांद आदि अनेक प्रमुख राजनीतिज्ञों से भेंट की। इस कांफ्रेंस के परिणामस्वरूप मो० ब्रियांद के मंत्रीमण्डल ने चैम्बर के वोट की प्रतीक्षा किये बिना ही अस्तीफा दे दिया। मुसोलिनी ने इस घटना पर ता० १४ जनवरी १९२२ को अपने पत्र में टिप्पणी करते हुए इटली को विशेष रूप से सावधान रहने की चेतावनी दी।

किन्तु इस पूरे समय भर फ़ासिस्टों और विरोधी शक्तियों में बराबर भीषण संघर्ष चलता रहा। यहां तक कि पिस्टोरिया के एक संघर्ष मे दनुनसिओ के साथ फ्यूम में युद्ध करने वाला लेफ्टिनेट फेडेरिको फ्लोरियो भी मारा गया। इस घटना से सारे फ़ासिस्टों में भारी शोक छा गया। मुसोलिनी ने इस दुर्घटना पर एक विशेष लेख लिखा।

फैक्टा का मन्त्रीमंडल

फर्वरी १९२२ में बोनोमी के मन्त्रीमण्डल का पतन हुआ। अब राजा विक्टर एमानुएल तृतीय ने अनेक राजनीतिज्ञों से परामर्श किया। उन्होंने मुसोलिनी को भी अपने राजमहल में दो बार बुलाया। इस समय इटली के राजनीतिक क्षेत्र में प्रधान मन्त्रित्व के लिए तीन नाम आ रहे थे—आरलैंडो, डे निकोला और बोनोमी। ज्योलिटी का नाम भी लिया गया, किन्तु कैथोलिक दल उसका विरोधी था। अन्त मे बहुत कुछ सोच विचार

के पश्चात् फैक्टा (Facta) को ही प्रधान मन्त्री बनाया गया, किन्तु वह ज्योलिटी का ही अनुयायी था। अन्त में वह बोनोमी से भी अधिक निर्बल प्रमाणित हुआ।

फासिस्टों और साम्यवादियों में भयंकर संघर्ष

इस पूरे समय भर फासिस्ट और साम्यवादी एक दूसरे से बराबर लड़ते रहे। इस समय तो संघर्ष और भी प्रबल हो गया। फासिस्टों की संख्या और शक्ति बराबर बढती ही जाती थी। २४ मई १६२२ को युद्ध का स्मृति-दिवस होने के कारण फ़ासिस्टों ने इटली भर मे परेड (Paıade) करके उत्सव मनाया। रोम की परेड में साम्यवादियों ने गोली चला दी, जिससे एक फ़ासिस्ट मारा गया और चौबीस घायल हुए। इस घटना ने अग्नि मे घृताहुति का काम किया। फ़ासिस्टों ने बड़े वेग से साम्य-वादियो पर आक्रमण किया। सड़कों में रक्त ही रक्त दिखाई देने लगा। सब कहीं के फ़ासिस्ट इस समाचार को सुन कर अधीर हो गये। उन्होंने क्रोधित होकर तार और टेलीफोन के सम्बन्ध काट दिए। उन्होंने प्रत्येक गांव पर दखल करने के लिए वहां के समाजवादी अथवा साम्यवादी मेयरो (Mayoıs) को अस्तीफे देने को विवश किया। उनके अस्तीफा न देने पर गावों पर बम फेंके गये अथवा आग लगादी गई। उस समय देश में घरेलू यद्ध की सम्भावना दिखलाई देने लगी थी।

फासिस्ट विरोधियों ने भी इस घटना का सामना करने की पूरी तयारी की। उन्होंने सार्वजनिक हड़ताल की घोषणा करदी।

किन्तु फैक्टा की सरकार अब भी हाथ-पर-हाथ धरे ही बैठी रही। मुसोलिनी से यह सहन न हो सका। उसने सब फ़ासिस्टों को युद्ध के लिए एक दम तयार होने की आज्ञा दी। फ़ासिस्ट लोग तो आज्ञा की प्रतीक्षा मे थे ही। वह बिजली के समान शीघ्र गति से एक दम एकत्रित हो गये।

इस घटना से हड़ताल उसी दिन खुल गई।

एक ओर तो मुसोलिनी के फ़ासिस्ट सैनिक सड़कों, मुहल्लों, खेतों और कारखानों की रक्षा कर रहे थे, उधर पार्लमेंट में बजट पेश होने वाला था। उसमे कई लाख रुपये का घाटा था।

मुसोलिनी को इस घटना पर बड़ा रोष आया। उसने ता० १९ जुलाई १९२२ को पार्लमेंट मे बजट की तीव्र समालोचना करते हुए घोषणा की कि वह फैक्टा के पक्ष से फ़ासिस्ट वोटों को वापिस लेता है। उसने फैक्टा को सम्बोधन करते हुए उसकी खूब भर्त्सना की।

इसके परिणाम स्वरूप फैक्टा के मन्त्रीमण्डल का उसी दिन पतन हो गया।

अब फिर नये प्रधानमन्त्री की आवश्यकता पड़ी। फिर आरलैंडो, बोनोमी, फैक्टा और ज्योलिटी के ही नाम लिये जाने लगे। बहुत वादविवाद के पश्चात् पापुलर पार्टी के प्रतिनिधि मेडा (Mada) को प्रधानमंत्री बनाने का निमंत्रण दिया गया।

फ़ासिस्ट स्वयंसेवकों द्वारा राष्ट्ररक्षा का कार्य

जिस समय पार्लमेंट मे नया मन्त्रीमण्डल बनाने के प्रश्न पर विचार हो रहा था इटली में बड़ी विषम परिस्थिति हो गई। इस समय मजदूर संघ (Labour Confederation), समाजवादियों के पार्लमेन्टरी दल, लोकतन्त्र दल (Democratic groups) और प्रजातन्त्र दल (Republicans) ने एक प्रबल विरोधी दल बना कर इटली भर में हड़ताल करने की घोषणा की। यह हड़तालें पूर्णतया फासिस्ट विरोधी थीं। इनका उद्देश्य फ़ासिज्म के आंतक से जनता की रक्षा करना बतलाया गया था।

मुसोलिनी ने इसका मुक़ाबला करने के लिये फिर फासिस्टों को युद्ध के लिये एकत्रित होने (General Mobilization) की आज्ञा दी। फासिस्ट कौंसिल को स्थायी रूप से बैठने की आज्ञा दी गई। फ़ासिस्ट कारीगरों से कारख़ाने चलवाए जाने लगे। आक्रमण करने वालों का मुकाबला किया गया। मिलन के फ़ासिस्टों ने विरोधियों के पत्र 'अवन्ती' पर आक्रमण करके उसके दफ्तर को जला दिया।

इस समय फ़ासिस्टों ने उन कल कारख़ानों पर पहरा बैठा दिया; जहां हड़ताल, तालेबन्दी अथवा समाजवादियों के आक्रमण का भय था। जो कारखाने समाजवादियों के आतंक के कारण बन्द हो गए थे, उनको उन्होंने अपने संरक्षण मे खुला किया। फ़ासिस्टों के इस कार्य से उनकी समस्त देश पर

कुछ नामों के शुद्ध उच्चारण

	इंगलिश आधार का अशुद्ध उच्चारण	शुद्ध इटालियन उच्चारण
Aloisi	अलायसी	ऐलोईज़ी
Arnoldo	ऐरनोल्डो	आरनोल्डो
Badoglio	बैडोगलिओ	बदोल्लिओ
Baron Aloisi	बैरन अलायसी	बैरन ऐलोईज़ी
Bologna	बोलोग्ना	बोलोइञा
Cavour	कैवर	कावूर
Ciano	सियानो	चानो
Count Ciano	काउंट सियानो	काउंट चानो
Dalmatia	डैलमेशिया	डलमाशिया
D' Annunzio	डी. ऐननज़िओ	दनुनसिओ
Dante	डैन्टे	दान्ते
Emmanuel	एमैनुएल	एमानुएल
Garibaldi	गैरीबाल्डी	गारीबाल्डी
Genoa	जिनोआ	जेनोआ
Giolitti	जिओलिटी	ज्योलीटी
Grandi	ग्रैण्डी	ग्राण्डी
Graziani	ग्रैज़िआनी	ग्रैजियानी
Marseilles	मारसीलीज़	मारसेल्स
Mazzini	मैज़िनी	मत्सीनी

धाक बैठ गई। उनके इस कार्य से लाखों बेकार श्रमिकों को कार्य मिल गया। फ़ासिस्टों के इस कार्य से पूंजीपति लोग भी फ़ासिस्टों की धन से सहायता करने लगे।

फ़ासिस्टों ने एक कार्य से तो सरकार तक का समर्थन प्राप्त कर लिया। वह था सरकारी इमारतों, रेलों और ट्रामवे का रक्षण। समाजवादी लोग रेलगाड़ियों को गिरा देने, डाकखानों मे काम करनेवालों पर आक्रमण करने और चीजों के नष्ट भ्रष्ट करने ही में अपनी क्रान्ति की सफलता समझते थे। वह ट्रामवे के शीशे तोड़ देते थे। उनके सामने पटरियों पर बड़े २ पत्थर रख कर उनको गिरा देते थे। सरकारी इमारतों, स्थानीय संस्थाओं तथा कचहरियों पर आक्रमण होने तथा उनके फूंके जाने का भय तो सदा ही बना रहता था। सरकारी कर्मचारियों के कार्यालयों मे घुस जाना और उन्हे पीट देना तो मामूली बात हो गई थी। फासिस्टों ने इस सबके विरुद्ध अपने स्वयं-सेवकों को रेलवे स्टेशनों तथा पटरियों पर नियुक्त कर दिया। ट्रामवे की रक्षा का भी इसी प्रकार प्रबन्ध किया गया। कचहरियों, डाकखानों तथा अन्य सरकारी भवनों के चारों ओर सशस्त्र फ़ासिस्ट सैनिक स्वयंसेवकों का पहरा लगा दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकारी कर्मचारी तथा सरकार में भी भीतर ही भीतर फासिस्टों के प्रति सहानूभूति उत्पन्न होने लगी।

केवल मिलन नगर में ही तीन युवक फ़ासिस्ट मारे गये। इन

मे से दो विश्वविद्यालय के विद्यार्थी थे। घायल तो अनेक बालक हुए।

इस समय फासिस्टों ने वास्तविक शक्ति का परिचय दिया। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि कल के इटली पर केवल शक्ति से ही नहीं, वरन् दृढ़ निश्चय, बुद्धि, आचरण और निस्वार्थ देशभक्ति के कारण शासन करने योग्य वही है।

विरोधी पराजित हो गये, घबरा गये और अन्त मे चुप हो गए। फ़ासिज़्म की निर्बाध शक्ति को सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाने लगा। अब समाजवादी पत्र भी फासिज़्म को एक वास्तविक शक्ति मान कर यह प्रस्ताव करने लगे कि मंत्रीमण्डल मे उनको भी स्थान मिलना चाहिये। मंत्रीमण्डल की आपत्ति अभी समाप्त नही हुई थी। राजा ने फिर मुसोलिनी को बुलाया। मुसोलिनी की आरलैंडो से भी कई बार भेंट हुई। फैक्टा ने भी मुसोलिनी के पास अपना आदमी भेज कर मालूम कराया कि वह किन शर्तों पर उसके मन्त्रीमण्डल मे स्थान ले सकता है। मुसोलिनी ने कहला दिया कि केवल सभी महत्वपूर्ण पदों को लेकर।

मुसोलिनी से मंत्रीमण्डल में स्थान लेने का बहुत आग्रह किया गया। किन्तु वह अपने आलोचना करने के अधिकार से वंचित होना नही चाहता था। अन्त मे फैक्टा का मंत्रीमण्डल ही बना रहा।

इस समय मुसोलिनी ने ५ अक्तूबर को मिलन नगर के अपने एक भाषण में कहा—

"इटली मे इस समय दो सरकार हैं—एक कल्पित, जिसको फ़ैक्टा चला रहा है; दूसरी वास्तविक, जिसको फ़ासिस्ट चला रहे हैं। इनमें से कल्पित वास्तविक के सामने कभी नहीं टिक सकती।"

नेपुल्स में फासिस्ट कांग्रेस

मुसोलिनी ने इस मन्त्रीमण्डल का पूर्ण विरोध करने का निश्चय कर लिया। उसने नेपुल्स (Naples) नगर मे फ़ासिस्टों की एक कांग्रेस की। इसमें ४० सहस्र फ़ासिस्ट एकत्रित हुए। इन सब के हृदय मे मुसोलिनी के लिए अपार श्रद्धा थी। मुसोलिनी ने इस मे भाषण देते हुए कहा, 'या तो देश की सरकार शांति से फ़ासिस्टों को देदी जावे, अन्यथा मैं यह शपथ करता हूं कि हम उसको बल पूर्वक ले लेंगे।" मुसोलिनी ने यह भी घोषित किया कि वह राजा और उनके वंश की रक्षा करेंगे।

इस प्रकार अढ़ाई वर्ष के प्रचार और कठिन परिश्रम के द्वारा फ़ासिस्टों ने देश को प्रमाणित कर कर दिया कि वह देश का शासनसूत्र संभालने योग्य हैं। पूंजीपतियों के कारखानों तथा सरकारी इमारतों और रेलवे का रक्षण कर वह अपनी शक्ति और योग्यता का काफ़ी परिचय दे चुके थे। देश उन्हे सच्चा समझता था। वह समाजवादियों के समान केवल लम्बी चौड़ी योजना बनाना और सुखस्वप्न देखना न चाहते थे। यद्यपि चैम्बर में उनके सदस्यों की सख्या केवल ३५ थी, किन्तु उन लोगों ने वहां भी अपने रचनात्मक कार्य एवं योग्यता का परिचय देकर प्रमा-

णित कर दिया था कि जिस प्रकार वह वाहिर शक्तिशाली और योग्य प्रमाणित हुए हैं, उसी प्रकार वह सरकार को अपने हाथ मे लेने पर देश का नियन्त्रण तथा शासन सुचारु रूप से कर सकेंगे।

फ़ासिस्टों का राष्ट्रीय विभागों पर अधिकार

नेपुल्स की इस सभा के पश्चात् फ़ासिस्ट लोग अपने क्रियात्मक कार्यों मे जी जान से लग गए। रेल, डाकखानों तथा ट्रामवे पर अब तक तो वह केवल पहरा ही देते थे, किन्तु अब उन्होंने उन पर अपना अधिकार भी स्थापित कर लिया। रेलवे आदि उनके नियन्त्रण मे चलने लगी। डाकख़ाने उनकी आज्ञानुसार खुलने और बन्द होने लगे।

सरकार को यह भली प्रकार प्रगट हो गया कि सरकारी दफ्तरों, पुलिस के थानों, रेलवे और डाकख़ाने आदि पर अधिकार करने मे कर्मचारियों की ओर से किसी प्रकार की भी बाधा उपस्थित नहीं की गई थी। इसके विरुद्ध वे लोग प्रसन्नतापूर्वक फ़ासिस्टो की मांगों को स्वीकार कर उनके नियन्त्रण मे काम करने मे गर्व का अनुभव कर रहे थे।

स्वायत्त विभाग के मन्त्री ने साफ कह दिया था कि फ़ासिस्टो की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना सरकार के बूते के बाहिर है। सेना और पुलिस पूर्णतया फ़ासिस्टों के पक्ष मे है। उनको यदि फ़ासिस्टो पर हाथ उठाने की आज्ञा दी जावेगी तो हमारी आज्ञा का पालन न होकर उलटे हमारी ही खिल्ली उड़ जावेगी। इस समय उनकी

बढ़ती हुई शक्ति को रोकने का प्रयत्न करना केवल अपनी मूर्खता प्रमाणित करना होगा। हां, उसका फल यह होगा कि सरकार की बची खुची साख भी उखड़ जावेगी।

मुसोलिनी की रोम पर आक्रमण की तयारी

१६ अक्तूबर को मुसोलिनी ने मिलन में फ़ासिस्ट अफ़सरों को बुलाया। उसने फ़ासिस्टों का सैनिक संगठन प्राचीन रोमन सम्राटों के ढंग पर किया। उसने फ़ासिस्टों की सेना के अनेक विभाग किये। नेताओं के साथ परामर्श करके उसने एक शब्द, एक वर्दी और एक संकेत निश्चित किया। उसको इटली भर में शत्रु और मित्र का ज्ञान था। वह टाइरीनियन समुद्र (Tyrrhenian Sea) में से अम्ब्रिया (Umbria) होकर रोम पर आक्रमण करने योग्य हो गया था। दक्षिण से पुगली (Puglie) और नेपुल्स नगर के फ़ासिस्टों की सेना उसकी सेना से मिल सकती थी। बाधा केवल एक ऐंकोना (Ancona) की थी। मार्ग में केवल वही विरोधी था। मुसोलिनी ने आरपिनैटी (Arpinati) तथा दूसरे सेनापतियों को आज्ञा दी कि ऐंकोना से समाजवादियों तथा साम्यवादियों का नामनिशान मिटा दिया जावे। उस नगर पर क्रांतिकारियों का अधिकार था। अतएव ऐंकोना पर बिल्कुल सैनिक ढंग से चढ़ाई की गई। इस युद्ध में अनेक मरे तथा अनेक घायल हुए। वहां की फ़ासिस्टविरोधी शक्तियों को पूर्णतया नष्ट कर दिया गया और फ़ासिज्म के शत्रु केवल रोम मे ही शेष रह गए।

अब लगभग सारे इटली पर फ़ासिस्टो का अधिकार हो गया था। फ़ासिस्ट लोग अपनी सफलता से प्रसन्न थे। वह अब जाकर स्वतन्त्रता से श्वास ले सके थे। फ़ासिज़्म की प्रवल लहर अब सारे इटली में बढ़ रही थी। अब बड़े २ अध्ययनशील, बड़े २ समालोचक, बड़े २ राजनीतिज्ञ तथा बड़े २ ऐतिहासिक भी मुसोलिनी के इस विजयोन्मुख आन्दोलन की ओर जिज्ञासा की दृष्टि से देख रहे थे।

इस समय मुसोलिनी रोम पर आक्रमण करने की तयारी में लगा हुआ था। व्यक्तिगत लाभ, बड़े से बड़े लालच और कीर्ति की इच्छा भी उसको अपने निश्चय से डिगाने में समर्थ नही थी। मुसोलिनी को इस समय व्यक्तित्व का लेशमात्र भी ध्यान नही था। उसको सारे राष्ट्र का ध्यान था। वह इस समय इटली की कीर्ति तथा समृद्धि के लिये उस पर फासिस्ट शासन देखना चाहता था। 'पोपोलो डीटैलिया' रोम पर किये जाने वाले इस आक्रमण की तयारी का केन्द्र बना हुआ था। मुसोलिनी ने चढ़ाई के सब उपाय तथा प्रस्ताव ठीक कर लिये। सब तयारी हो चुकने पर उसने अन्तिम आज्ञाएं दी। अब फ़ासिस्टों ने इसकी तयारी के लिये अपने विरोधियों पर चढ़ाई करना आरम्भ किया। ट्रेंटो, ऐंकोना और बोलज़ैनों को इसी प्रकार युद्ध द्वारा विजय किया गया।

इस समय मुसोलिनी फ़ासिस्टों की योग्यता और उनके दृढ़-निश्चय की परीक्षा करना चाहता था। अतएव उसने इटली के भिन्न २ भागों मे चार महत्वपूर्ण भाषण दिये। इन भाषणो मे उसने

अपनी भावी नीति का दिग्दर्शन किया । उसने फ़ासिस्टवाद के उद्देश्य की व्याख्या की ।

इस प्रकार की फासिस्ट सभाएं उदाइन (Udine), उत्तरी इटली, पो घाटी, मिलन, नेपुल्स और दक्षिणी इटली में हुई ।

मुसोलिनी ने इन सब सभाओं में स्वयं भाग लिया । वह प्रत्येक जिले की दशा से स्वयं परिचित होना चाहता था। जहां २ वह गया, उसका विजयी और रक्षक के रूप मे स्वागत किया गया। इन सभी स्थानो से उसको पूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ ।

अब उसने रोम की चढ़ाई के लिये केन्द्रीय दल की बैठक बुलाई । उस समय उसने कहा था कि "इस समय उदारवाद का सूर्य अस्त हो रहा है और फ़ासिस्टवाद नये—इटली—का सूर्य उदय हो रहा है ।

सातवां अध्याय

रोम की विजय

अब प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर रोम पर चढ़ाई करने का समय आ गया था।

मुसोलिनी ने प्रांतों की दशा की ठीक २ जांच पड़ताल करके, काली कमीज वाले भिन्न २ अफ़सरों की रिपोर्ट सुन कर, कार्य करने की प्रणाली को ठीक कर और उसको पूरा करने के दृढ़ निश्चय से फ्लोरेंस मे फ़ासिस्टों को एकत्रित होने की आज्ञा दी। मुसोलिनी की इस आज्ञा को सुन कर फ्लोरेंस में ६५,००० फ़ासिस्ट एकत्रित हो गये। इस समय प्रधान फ़ासिस्ट सरदारों मे माइकेल बिआन्ची (Michel Bianchi), डे बोनो (De Bono), इटैलो बाल्बो (Italo Balbo), जूरिआती (Giuriati) तथा अन्य अनेक अफ़सर थे।

मुसोलिनी इस समय सभी प्रकार की सम्भावनाओं के ऊपर विचार कर रहा था। यद्यपि उसके हाथ में देश की सब से बड़ी शक्ति थी, तौ भी उसको सैनिक दृष्टिकोण के अतिरिक्त इस कार्य पर राजनीतिक दृष्टिकोण से भी विचार करना था। उसको यह भी विचार करना था कि यदि मंत्रीमण्डल ने अपनी प्रधान सेना द्वारा फ़ासिस्टों का दमन कर दिया, अथवा उनके उपाय में ही विघ्न आ गया तो क्या परिणाम होगा ? उसने सारी कार्यप्रणाली तथा एतत्सम्बन्धी ऊंच नीच के ऊपर अपने साथियों के साथ अच्छी तरह परामर्श किया।

नेपुल्स की दूसरी कांग्रेस

इसके पश्चात् नेपुल्स में फ़ासिस्टों की दूसरी बड़ी कांग्रेस हुई। इस कांग्रेस का विनयानुशासन देखने ही योग्य था। इस कांग्रेस में व्याख्यान भी बहुत सुन्दर २ हुए। इस मे यह निश्चय किया गया कि फ़ासिस्ट सेनाएं गुप्त रूप से एकत्रित हों। यह निश्चय किया गया कि एक निश्चित समय पर इटली भर के फ़ासिस्ट दस्ते अपने २ कार्य को आरम्भ करदें। उनको मुख्य महत्वपूर्ण केन्द्रों— नगरों, डाकखानों, ज़िलाधीशों के दफ्तरों, पुलिस कोतवालियों और उनके प्रधान कार्यालयों, रेलवे स्टेशनों और पलटन की बारकों पर अधिकार करना था।

यह तय किया गया कि फ़ासिस्टों के दस्ते प्रधान फ़ासिस्ट अफ़सरों की अध्यक्षता मे टाइरीनियन समुद्र के मार्ग से रोम की ओर बढ़ें। रोमाइना, मार्चे और अब्रूज़ी जिलों के फासिस्टों को

एड्रियाटिक समुद्र के मार्ग से रोम पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी गई। इस के लिए ऐकाना से समाजवादी और साम्यवादी तत्वों को पहिले ही दूर कर दिया गया था। फ्लोरेंस मे एकत्रित हुई फ़ासिस्ट सेनाओ को मध्य इटली से रोम पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी गई। इनके साथ कैरैडोना (Caıadonna) की अध्यत्तता में फ़ासिस्ट रिसाला भी था।

यह निश्चय किया गया कि चढ़ाई का कार्य आरंभ करते ही अधिकारी तथा सैनिक सभी सेना के कठिन नियमों का पालन करें।

मुख्य आक्रमण की तयारी

इस सारे प्रबन्ध के राजनीतिक अधिकार चार सेनापतियों की एक युद्ध समिति को सौप दिये गये। उक्त चार सेनापति यह थे—

जेनेरल डे बोनो, जेनेरल डे वेची (De Vecchı), जेनेरल इटैलो बाल्वो और जेनेरल माइकेल विआन्ची। इन का सभापति तथा नेता (Duce) मुसोलिनी को बनाया गया। यह चारो व्यक्ति अपने कार्य के लिये उसी के प्रति उत्तरदायी थे। इस उत्तरदायित्व के लिये मुसोलिनी ने न केवल फासिस्टो के, वरन् इटली के प्रति भक्त बने रहने की प्रतिज्ञा की थी।

मुख्य वासस्थान के लिये अम्ब्रिया (Umbııa) की राजधानी पेरूगिया (Peıugıa) को चुना गया, क्यों कि वहां से देश के सारे भाग में अनेक सड़के जाती थी और वहां से रोम पहुचना भी

Naples	नेपिल्स	नेपुल्स
Parma	पैरमा	पारमा
Pavone	पैवोन	पैवोने
Piave	पाएवे	पिश्रावे
Piedmont	पीडमांट	पिएडमांट
Popalo D' Italia	पोपोलो डी इटैलिया	पोपोलो डीटैलिया
Reichstag	रीश स्टाग	राइक्ह्स्टाग
Romogna	रोमोग्ना	रोमोड्ञा
Ronchi	रांची	रौंशी
Savoy	सैवाय	सेवाय
Signor	साइनर	सिन्योर
Starace	स्टैरेस	स्तारावे
Suvitch	सूवीच	सूविच
Teruzzi	टेरूज़ी	तेरुत्सी
Trieste	ट्रीस्टे	ट्रिएस्टे
Venetia	विनीशिया	वेनेशिया
Versailles	वरसेलीज़	वरसाई
Vienna	वीना	विएना

नोट—अंग्रेज़ी आधार का मतलब यह नहीं है कि इंगलैंड मे भी इन शब्दों का उच्चारण यही किया जाता है और न इटालियन आधार का यह अभिप्राय है कि उस उच्चारण से और कहीं काम नही लिया जाता। नगरों के नाम तो प्राय. सारे यूरोप मे एकसे ही हैं।

बहुत सुगम था। वहा यह भी सुविधा थी कि यदि इस चढ़ाई में फ़ासिस्टों को सफलता न मिली तो ऐपेनाइन पर्वतमाला को पार करके वहां से पो घाटी में जाकर आत्मरक्षा की जा सकती थी। उस स्थान को इतिहास मे सदा ही प्रत्येक परिस्थिति की कुंजी समझा जाता रहा है। वहां वह अत्यंत निर्भयतापूर्वक रह सकते थे। अब उन्होंने पहरे का संकेत निश्चित किया और प्रत्येक कार्य की विस्तृत विधि को तयार किया। यह निश्चित किया गया कि प्रत्येक बात की सूचना मुसोलिनी को पोपोलो डीटैलिया के दफ्तर में दी जावे। विश्वासी फ़ासिस्ट गुप्तचरों का जाल सारे देश में मकड़ी के जाले के समान फैला हुआ था। मुसोलिनी दिन भर आज्ञाएं प्रचारित करता रहा। उसने उस घोषणापत्र को लिखा, जो चढ़ाई के समय देशवासियों को सम्बोधित किया जाना था। विश्वासी गुप्तचरों द्वारा इस बात का विश्वास मिल गया था कि सेना—जब तक कि कोई अनिवार्य परिस्थिति ही न आजावे—इस सारे कार्य में पूर्णतया तटस्थ रहेगी। इस समय डे बोनो और बाल्बो पेरूगिया की छावनी का संचालन करने के लिये वहां चले गए।

नेपुल्स की कांग्रेस से मुसोलिनी मिलन (Milan) गया। इस बार वह अन्य अनेक तयारियों के लिये अपने अनेक मित्रों से मिला। वह इस सारी तयारी को गुप्त रूप से कर रहा था। इस के अतिरिक्त इस समय वह प्रत्येक समय विरोधियों के गुप्तचरों से भी घिरा रहता था। अतएव उनकी दृष्टि से बचने के लिये वह

प्रगट रूप में तटस्थ के समान निश्चिंत जैसा बना रहता था। सांयकाल के समय वह थियेटरों में जाया करता था। वह अपने पत्र के सम्पादन तथा प्रबन्ध मे अत्यधिक व्यस्त रहने का नाटक किया करता था।

फ़ासिस्ट पार्टी का घोषणापत्र

अब उसने सब तयारी का संदेश पाकर अचानक ही अपने पत्र पोपोलो डीटैलिया द्वारा इटली की जनता के लिये मिलन से ही अपने घोषणापत्र को प्रकाशित किया। इस घोषणापत्र को प्रथक् छपवा कर उसका इटली के सभी पत्रों के सम्वाददाताओं के द्वारा भी प्रचार किया गया। इस घोषणापत्र पर युद्ध समिति के हस्ताक्षर थे।

उक्त घोषणापत्र यह था—

"फ़ासिस्टों तथा इटली वासियों!

"निश्चय किये हुए युद्ध का समय आ पहुचा। चार वर्ष पूर्व राष्ट्रीय सेना बड़ी भारी विजय प्राप्त करके भी आज कल के दिनों मे ही विजय से हाथ धो बैठी थी। आज काली कमीज वालों की सेना उस खोई हुई विजय पर फिर अधिकार करने जा रही है। वह रोम जाकर उस राजधानी के सम्मान के प्रताप को विजय द्वारा फिर वृद्धिंगत करेगी। इस समय फासिस्टों की प्रधान और गौण सेनाओं को युद्ध के लिये एकत्रित होने की आज्ञा दी जाती है। अब फ़ासिज़्म के जगी कानून को जारी किया जाता है। नेता (ड्यूस) की आज्ञा से दल के सभी सैनिक, राजनीतिक तथा

शासन सम्बन्धी कार्य गुप्त युद्धसमिति के सुपुर्द किये जाते हैं। इस समिति को डिक्टेटरी के अधिकार होंगे।

"इस युद्ध में राष्ट्र की सेना, संरक्षित सेना और गार्ड भाग न लें। फ़ासिस्टवाद विटोरिया वेनेटो की सेना को मिले हुए सबसे बड़े सम्मान को फिर नया करने चला है। इसके अतिरिक्त फासिज़्म की चढ़ाई पुलिस के भी विरुद्ध नहीं, वरन् उस कायर तथा दुर्बल राजनीतिक वर्ग के विरुद्ध है जो चार वर्ष के लम्बे अर्से में भी राष्ट्र को कोई सरकार न दे सका। उत्पादक वर्ग को यह जान लेना चाहिये कि फ़ासिज़्म उस नियम और विनयानुशासन के अतिरिक्त राष्ट्र पर और कुछ लादना नहीं चाहता, जो उन्नति तथा समृद्धि का कारण हो। खेतों, कारख़ानों, रेलों तथा दफ्तरों में काम करने वालों को फ़ासिस्ट सरकार से भयभीत होने का कोई कारण नहीं है। उनके योग्य अधिकारों की सदा ही रक्षा की जावेगी। हम अपने निशस्त्र विरोधियों के साथ भी उदारता से काम लेंगे।

"फ़ासिज़्म इटली के जीवन को सीमित करने और उसके सिर पर बोझा बनने वाली आपत्तियों को दूर करने के लिये अपनी तलवार म्यान से खेंचता है। हम परमात्मा तथा अपने ५ लाख मृतकों की साक्षी से कहते हैं कि हमको केवल एक कारण ही प्रेरित करता है—हमारे अन्दर केवल एक भाव ही जाग्रत है कि हमारे देश का महत्व बढ़े और उसकी रक्षा हो।

"सारा इटली फ़ासिस्टवाद के रंग में रंग जावे।